स्वर्ण तंत्रम्

(स्वर्ण बनाने की दुर्लभ विधियां)



चिन्तन

पारद विज्ञान के क्षेत्र में **डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली** अद्वितीय व्यक्तित्व और अन्यतम रस विज्ञानी हैं, जिन्होंने प्रामाणिकता के साथ पारद विज्ञान को समझा है, अपने सन्यस्त जीवन में उन्होंने पारद विज्ञान की उन ऊंचाइयों को स्पर्श किया है, जिसकी तुलना या समानता आज के युग में किसी भी पारद विज्ञानी से संभव नहीं।

उन्होंने पारद विज्ञान से संबंधित अब तक लगभग समस्त प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों का गहराई के साथ अध्ययन किया है, और उनमें प्रकाशित विवरणों को परखा है, अनुभव किया है, जहां अब तक विश्व को पारद के बीस या चौबीस संस्कार ही ज्ञात हैं, वहां उन्होंने उसके मूलभूत १०८ संस्कारों को गहराई के साथ परखा है, और अपने सन्यासी शिष्यों को सिखाया और समझाया है।

पारद के माध्यम से स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया कोई कठिन कार्य नहीं, पर मैंने अनुभव किया है, कि उन्हें इससे संबंधित कोई एक ही विधि ज्ञात नहीं, अपितु पारद से **स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया या पदार्थ परिवर्तन प्रक्रिया** से संबंधित सैकड़ों विधियां प्रामाणिकता के साथ ज्ञात हैं, और उन्होंने इन सारी विधियों को आत्मसात किया है, अनुभव की कसौटी पर कसा है, और भारत की इस प्राचीन विद्या को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है।

पर अब मैंने उनसे गहराई से बात की, तो बातचीत में वे अत्यन्त शालीन और विनम्र लगे, इतना उच्चकोटि का दुर्लभ और अद्वितीय ज्ञान होने के बावजूद भी वे अत्यन्त सरल और निस्पृह हैं, ज्यादा पूछने पर उन्होंने कहा —

"जीवन के प्रारम्भिक भाग में मैंने धातु परिवर्तन प्रक्रिया का गहराई के साथ अध्ययन किया था, और उच्च कोटि के योगियों और सन्यासियों से इस दुर्लभ ज्ञान को प्रामाणिकता के साथ प्राप्त किया था, पर अब मैंने इन सब को कई वर्षों से भुला दिया है, और मैं न तो धातु परिवर्तन प्रक्रिया करता हूं, और न मुझे इसका किंचित मात्र भी ज्ञान है।"

पर ये शब्द मुझे उनकी विनम्रता और सरलता लगी, मुझे ऐसा लगा, कि वे इन सब क्रियाओं से निर्लिप्त हैं, क्योंकि न तो उन्हें किसी प्रकार का स्वार्थ है, और न किसी प्रकार की तृष्णा, इच्छा या आकांक्षा ही।

स्वर्ण-तंत्रम्

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान प्रकाशन
जोधपुर (राज.)

प्रकाशक— मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान प्रकाशन
हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर, (राज०)

विचार संकलन— योगेन्द्र निर्मोही

प्रथम संस्करण— १९९०

• चेतावनी •

पारद विज्ञान या स्वर्ण निर्माण पद्धति एक कठिन कार्य है, इस पुस्तक में पारद या स्वर्ण विज्ञान से संबंधित जो भी प्रयोग या परीक्षण दिये हैं वे प्रामाणिक हैं, पर सफलता-असफलता के मूल में साधक या प्रयोग कर्ता का विवेक या सामर्थ्य शक्ति मुख्य रूप से प्रभावक रहती है, अतः पारद सेवन, पारद संस्कार या स्वर्ण निर्माण में सफलता-असफलता के प्रति प्रकाशक, लेखक या सम्पादक, मुद्रक किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं, कुतर्की और आलोचक इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द को गल्प समझें।

मूल्य—३०) रुपये

प्रस्तावना

पदार्थ विज्ञान, पारद विज्ञान, या स्वर्ण विज्ञान संसार का सर्वोत्कृष्ट ज्ञान या उपलब्धि है, जिसे फारसी में "कीमियागिरी" और अंग्रेजी में "गोल्डेन-गोडेस" कहा गया है, अर्थात् भगवान के दर्शन करना या उन्हें प्राप्त करना जितना कठिन है, उतना ही "गोल्ड" या स्वर्ण विज्ञान को सीखना या समझना कठिन है, इसीलिए पूरे संसार के पारद विज्ञानी इस खोज में लगे हुए हैं, कि वे स्वर्ण विज्ञान को भली भांति समझ लें।

मैंने इस पुस्तक में कठिन और दुरूह, गम्भीर और दुर्लभ विषय को अत्यन्त आसानी से समझाने का प्रयास किया है, मैंने इस बात को अनुभव किया है, कि यह विद्या धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, इस पुस्तक को लिखने का भाव या विचार तब आया, जब एक दिन एक शिष्य मेरे पास आया, जिसका नया-नया विवाह हुआ था, परन्तु किसी वजह से वह शारीरिक एवं यौवन की दृष्टि से अत्यन्त अशक्त और कमजोर था, घर से तो वह आत्महत्या के लिए ही निकला था, परन्तु जब वह मेरे पास आया और झिझकते हुए मुझे अपनी व्यथा सुनाई, कि विवाह होने के बाद वह कैसे धर्म संकट और मानसिक उद्विग्नता में उलझ गया है, और इसके लिए उन्होंने मुझसे सहायता मांगी, जिससे कि वह पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त कर पत्नी के सामने दृढ़ता के साथ खड़ा हो सके, तो मैंने बाजार से शुद्ध पारद प्राप्त करने के लिए उसको भेजा, जो कि "यौवन कर्तरी रस सिद्ध पारद हो", जिसके सेवन से वह पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त कर सके।

पर आश्चर्य की बात यह, कि पूरी दिल्ली में और आसपास के क्षेत्र में एक भी वैद्य या रसायनशाला उपलब्ध नहीं हुई, जहां इस प्रकार का संस्कारित पारद प्राप्त हो सके, इसके बाद मैंने स्वयं पांच सात श्रेष्ठ वैद्याचार्यों को टेलीफोन किये, परन्तु लगभग सभी ने इस प्रकार के शुद्ध पारद के बारे में अनभिज्ञता और असमर्थता प्रगट की।

उस दिन मेरे मन को गहरी चोट लगी, कि जो भारतवर्ष पारद विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय रहा है, जिसके पास इस विज्ञान को समझने के लिए सैकड़ों ग्रंथ है, जहां कई विश्वविद्यालय या आयुर्वेद कालेजें हैं, जहां पर इस प्रकार के पारद संस्कार का ज्ञान दिया जाता है, पर वे पारद के इस छोटे से संस्कार को संपन्न कर "यौवन कर्तरी संस्कार" सम्पन्न न कर सके, इससे बड़ा अधःपतन भारत-वर्ष का और क्या हो सकता है ?

मैंने उसी दिन से निश्चय कर लिया, कि मुझे समय मिला, तो मैं इस विषय को प्रामाणिकता के साथ लिखने का प्रयत्न करूंगा, परन्तु अन्य कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने की वजह से यह विषय टलता ही गया ।

स्वर्ण विज्ञान या पारद विज्ञान जीवन का सौन्दर्य है, सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट देने वाला विषय है, एक प्रकार से देखा जाय तो विश्व में जितने प्रकार के विज्ञान हैं, जितने प्रकार के भी विषय हैं, उन सब विषयों में यह सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय है, क्योंकि यह विषय जीवन का आधार है, इस विषय के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की दरिद्रता मिटा सकता है, गरीबी और भूख से संघर्ष कर उसे समाप्त कर सकता है, दुर्बलता और अशक्तता को समाप्त कर पुनः यौवन प्राप्त कर सकता है, सही अर्थों में अपने शरीर का कायाकल्प कर पूर्ण सौन्दर्य और यौवन प्राप्त कर जीवन के आनन्द का उपयोग कर सकता है, और पूर्ण संपन्नता प्राप्त कर वे सारी सुविधाएं, भोग और ऐश्वर्य प्राप्त कर सकता है, जो मानव जीवन का आधार है, और यह सब केवल इस विज्ञान के माध्यम से ही संभव है ।

पर मेरे अनुभव में यह आया है, कि वर्तमान में अधिकतर आयुर्वेद के कालेजों में या आयुर्वेद शिक्षा ग्रन्थों में पारद के संस्कारों के बारे में तो विवरण दिया है, परन्तु उन्हें यदि कहा जाय, तो वे प्रेक्टिकल रूप से प्रामाणिकता के साथ पारद संस्कार सम्पन्न नहीं कर सकते, उन्हें थ्योरिटिकल ज्ञान तो है, पोथियों में लिखी हुई बातें तो रटी हुई हैं, परन्तु वास्तव में जो ज्ञान होना चाहिए, जो क्रियात्मक पद्धति होनी चाहिए, वह उनके पास नहीं है, और इसीलिए इस विषय का अधिकांश भाग काल के गर्भ में समाप्त हो गया है और जो शेष बचा रह गया है, वह केवल थ्योरिटिकल बन कर रह गया है, उसमें वास्तविकता या क्रियात्मकता का सर्वथा अभाव है ।

इस पुस्तक में मैंने उन सभी विषयों को छुआ है, जो पदार्थ विज्ञान या पारद विज्ञान से सम्बन्धित हैं, यह विषय अपने आप में समुद्र की तरह विस्तृत और अगाध है, उसे एक छोटी सी पुस्तक में समेटना अत्यन्त कठिन है, परन्तु फिर भी मैंने उसके प्रारम्भिक स्वरूप और उससे संबंधित जानकारी देने का प्रयास प्रामाणिकता के साथ किया है ।

पारद विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जो सही अर्थों में गुरु के चरणों में बैठ कर ही सीखा जा सकता है, ग्रन्थ का आधार तो आवश्यक है, क्योंकि ग्रन्थ के पढ़ने से उसका प्रारम्भिक ज्ञान हो जाता है, वह इस विषय को समझने लगता है और जब वह प्रेक्टिकल रूप में उतरता है, तो यह विषय उसे अनजाना सा प्रतीत नहीं होता ।

अभी तक जितने भी ग्रन्थ इस विषय से संबंधित प्रकाशित हैं, या तो वे संस्कृत में लिखे हुए हैं, या इतने दुरूह और कठिन हैं, कि उनको भली प्रकार से समझना संभव ही नहीं रहा है, उन ग्रन्थों को पढ़ कर इस विषय को प्रामाणिकता के साथ न तो समझा जा सकता है, और न वास्तविक जीवन में इसका लाभ उठाया जा सकता है ।

इसके लिए यह जरूरी है, कि पाठक सबसे पहले पदार्थ विज्ञान को समझें, उसके गुण दोषों का आकलन करें, और फिर स्वयं गुरु चरणों में बैठ कर इसको सीखने का प्रयत्न करें ।

मेरे जीवन का बहुत बड़ा भाग जंगलों में बीता है, और उसकी कठोरता को आत्मसात किया है, अगर दो टूक शब्दों में कहूं तो मुझे अपने यौवन के दुर्लभ और सुन्दरतम वर्षों को कठिन पगडंडियों पर, ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर और हिमालय के दुर्गम स्थलों पर व्यतीत करने पड़े हैं, एक प्रकार से पूरा जीवन फना कर दिया है, इस प्रकार के प्राचीन ज्ञान को समझने के लिए, प्राप्त करने के लिए, जीवन में उतारने के लिए, और पूर्णता के साथ सिद्ध करने के लिए ।

पर इतना सब कुछ होने के बाद अब मैं यह दृढ़ता के साथ कह सकता हूं, कि भारत की प्राचीन विद्याएं और पदार्थ विज्ञान या पारद विज्ञान अपने आप में पूर्ण प्रामाणिक है, इसके माध्यम से शुद्ध और निर्दोष स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया सम्पन्न की जा सकती है, इस ज्ञान के माध्यम से कई-कई पीढ़ियों की दरिद्रता को हजारों-हजारों मील दूर धकेला जा सकता है, और इस विज्ञान के माध्यम से जीवन का अतुलनीय भोग, ऐश्वर्य और सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है ।

पर इसके लिए जरूरी है, पूर्ण रूप से साधक या शिष्य बनने की, सही अर्थों में इस प्रकार के ज्ञान प्राप्त किये हुए गुरू को खोजने की, उसके चरणों में बैठने की, उनकी सेवा कर उनसे यह सब कुछ प्राप्त करने की ।

इस विज्ञान में ऐसा संभव नहीं होता, कि आप दो चार दिन के लिए किसी ऐसे गुरू या व्यक्तित्व के पास जांय, और उनसे पदार्थ विज्ञान या स्वर्ण निर्माण विज्ञान सीख लें, यह अलग बात है, कि यदि गुरू आप पर अत्यधिक प्रसन्न हो, और आपको इसका रहस्य कुछ ही क्षणों में समझा दे, यह अलग बात है, कि आप और आपका परिवार गुरू के हृदय के इतना निकट हो, कि गुरू इससे संबंधित ज्ञान पूर्णता के साथ आपको कुछ ही दिनों में दे दे, यह अलग बात है, कि आपकी सेवा में, आपके त्याग में आपके समर्पण में इतनी अधिक तीव्रता हो, कि गुरू अत्यन्त प्रसन्न हो कर वह इस विज्ञान से संबंधित बारीकियां, गूढ़ तथ्य और रहस्यमय गुत्थियां बता दे, जिसके माध्यम से आप कुछ ही दिनों में, स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया सीख लें, और पूर्णता के साथ समझ लें ।

आपके जीवन भर का परिश्रम इस विज्ञान के सामने कुछ भी मायने नहीं रखता, आप चौबीस घण्टे परिश्रम करके व्यापारिक कार्यों में उलझ कर तनाव झेलते हुए मुश्किल से पच्चीस-पचास लाख रुपये बचा सकते हैं, आप नौकरी करके पूरी जिन्दगी को घिसट कर दो चार लाख रुपये बचा सकते हैं, परन्तु यह विज्ञान तो एक ऐसा वरदान है, कि यदि इसे प्रामाणिकता के साथ सीख लिया जाता है, तो पचीस-पचास लाख रुपये प्राप्त करना, तो मात्र दो चार दिन की बात है, पूरे जीवन भर न तनाव झेलने की जरूरत है, और न अपने जीवन को घिस घिस कर बरबाद करने की ।

इसमें भी कोई दो राय नहीं, कि इस पुस्तक में जिस प्रकार से प्रयोग और परीक्षण दिये हैं, उसके माध्यम से आप अपने घर में बैठ कर क्रिया या प्रयोग अथवा परीक्षण करके, इस विषय में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, और ऐसा कई लोगों ने किया भी है, व्यक्तिगत रूप से मिलने पर उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है, कि पत्रिका में प्रकाशित विवरणों के आधार पर प्रयोग और परीक्षण करने पर हम स्वर्ण निर्माण में सम्पन्न हो सके हैं, प्रामाणिकता के साथ स्वर्ण निर्माण क्रिया सम्पन्न कर सके हैं ।

अतः इसमें कोई दो राय नहीं, कि पुस्तक पढ़ कर के भी ऐसा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु जो इस विषय में गहराई के साथ उतरना चाहता है, जो इस विषय को पूर्ण प्रामाणिकता के साथ अपने जीवन में आत्मसात करना चाहता है, जो इस विषय को सांगोपांग रूप से समझ कर दक्ष होना चाहता है, उसके लिए तो यह जरूरी है, कि वह पूर्णता के साथ समर्पण भाव से, गुरू चरणों में बैठे और स्वयं को और परिवार को फना करते हुए, सब कुछ दांव पर लगाते हुए, सीखने का प्रयत्न करे, जैसा कि मैंने बताया कि ऐसा करना जीवन में घाटे का सौदा नहीं है, यह तो जीवन का वरदान है, कि तुम्हें जंगलों में भटकना नहीं पड़ा है, तुम्हें गिरि-कन्दराओं में उलझना नहीं पड़ा है, भूख प्यास सर्दी-गर्मी को सहन नहीं करनी पड़ी है, और उन सन्यासियों की लंगोटियां धोने की जरूरत नहीं पड़ी है ।

इसीलिए तो मैं कहता हूं, कि जब तुम्हें कोई ऐसा गुरू मिल जाय, कोई ऐसा पदार्थ विज्ञानी या पारद ज्ञान को समझने वाला समर्थ गुरू प्राप्त हो जाय, तो एक क्षण भी रुकने की, हिचकिचाने की, सोचने विचारने की जरूरत नहीं है, दौड़ते हुए कम कर उनके पांव पकड़ लेने की है, उनके चरणों में बैठ जाने की है, अपने आप को निश्छल भाव से समर्पित कर देने की है, और सेवा करते हुए वह सब कुछ प्राप्त कर लेने की है, जो जिन्दगी का सौन्दर्य है, जो जीवन की जगमगाहट है ।

और यह बात भी सत्य है, कि बिना कुछ खोये, कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता, यदि आप नौकरी या व्यापार से, घर गृहस्थी और जीवन से जोंक की तरह चिपके हुए रहें, और दुर्लभ रहस्यों को प्राप्त करना चाहें, तो यह कैसे संभव है ? जब आप कुछ खोने के लिए तैयार ही नहीं हैं, जब आप अपने जीवन का समय देने के लिए उद्यत ही नहीं हैं, जब आप में फना होने की हिम्मत या हौसला आया ही नहीं है, तब आप इस प्रकार का दुर्लभ ज्ञान क्रियात्मक रूप से कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? इसके लिए तो अपने जीवन को दाव पर लगाना पड़ता है, और एक बार चैलेन्ज के साथ जिन्दगी को दाव पर लगा कर देखिये तो सही, आप वह सब कुछ प्राप्त कर सकेंगे, जो आपकी आने वाली कई-कई पीढ़ियों को ऐश्वर्य के राजभवन में बिठाने में समर्थ होंगी, जो आपको समाज में सम्मान दे सकेंगी, जिसके माध्यम से आप हजारों-हजारों धार्मिक और सामाजिक कार्य सम्पन्न कर सकेंगे, जिसके द्वारा पुण्यदायक कार्य, धार्मिक कार्य, सामाजिक कार्य करते हुए पूर्ण यश और सम्मान प्राप्त कर सकेंगे ।

पारद विज्ञान के माध्यम से स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया तो सम्भव है ही, इसके माध्यम से कठिन और असाध्य रोग भी समाप्त किये जा सकते हैं, इसके माध्यम से बुढ़ापे को यौवन में प्रामाणिकता के साथ बदला जा सकता है, इसके माध्यम से कुरूपता को सौन्दर्य के सांचे में ढाला जा सकता है, और हकीकत में ही इसके माध्यम से पूरे शरीर का काया कल्प किया जा सकता है, और ऐसा होता ही है, आवश्यकता इसे समझने की, गहराई के साथ उतरने की, और पूर्ण रूप से दक्ष होने की है ।

शंकराचार्य ने एक स्थान पर कहा है, कि यदि मुझे पूर्ण समर्पण युक्त तीन या चार शिष्य मिल जांय, तो मैं पारद विज्ञान के माध्यम से पूरे संसार की दरिद्रता को समाप्त कर सकता हूं, और मैं भी इन्हीं शब्दों को दोहरा रहा हूं, कि मुझे जीवन में कुछ शिष्य ऐसे मिलें जो सही अर्थों में शिष्य हों, जो सही अर्थों में समर्पित हों, परीक्षा लेने पर जो सौ टंच खरे उतरते हों, आग में तपाने पर जो कुन्दन की तरह दमकने का क्षमता रखते हों, जो अपने परिवार के साथ अपने जीवन को फना करते हुए, इस विज्ञान को सीखने के लिए प्रयत्नशील हों ।

यदि ऐसे शिष्य मात्र दो चार भी मिल जाते हैं, तो निश्चय ही इस विश्व की निर्धनता समाप्त हो सकती है, निश्चय ही ऐसा दुर्लभ ज्ञान सुरक्षित रह सकता है, और मैं ऐसे ज्ञान को केवल पोथियों में लिखने का ही हामी नहीं हूं. मैं तो पारद विज्ञान या स्वर्ण विज्ञान से संबंधित दो-चार जीवित ग्रन्थ तैयार करना चाहता हूं, जिनके माध्यम से पूरा विश्व प्रकाशित हो सके, जिनका सिर बहुत ऊंचाई के साथ उठा हुआ पूरी दुनियां को दिखाई दे सके, जिनकी माताएं गर्व के साथ कह सकें, कि उसने विश्व में यशस्वी पुत्र को जन्म दिया है, और मैं सोना ठोक कर कह सकूं, कि मेरे पास अद्वितीय प्रामाणिक और सही शिष्य हैं, वास्तव में ही ऐसे शिष्य इस संसार की दरिद्रता को, निर्धनता को, न्यूनता को समाप्त कर पूर्ण यश भागी हो कर गुरु का नाम गर्व के साथ ऊपर उठा सकते हैं, मैं ऐसे ही शिष्यों की प्रतीक्षा में हूं ।

इस पुस्तक के लेखन में जिन ज्ञात अज्ञात लेखकों, पारद विज्ञानियों, सन्यासियों और प्रकाशित अप्रकाशित ग्रन्थों से सहायता मिली है, उन सब के प्रति मैं निश्छल भाव से आभार प्रगट करता हूं । ●

प्रवेश

भारत की प्राचीन कई रहस्यपूर्ण विद्याओं में कीमियागीरी या रसायन भी एक प्रमुख विद्या है, क्योंकि कीमियागीरी का प्रचलन केवल भारत में ही नहीं अपितु चीन, अरब, यूनान आदि देशों में भी इस विद्या के बारे में चर्चा रही है और उन्होंने इस संबंध में बहुत प्रयत्न किया है । देखा जाय तो आज, जो परमाणु विज्ञान की पद्धति विकसित हुई है, उसके मूल में यह कीमियागीरी विद्या प्रमुख रूप से रही है ।

कीमियागीरी को दूसरे शब्दों में रसायन विद्या भी कहते हैं, रसायन विद्या या कीमियागीरी का तात्पर्य हल्की धातुओं या साधारण मूल्य की धातुओं जैसे पारा, तांबा, सीसा आदि से सोना या चांदी बनाना है । आगे के सूत्रों में और विशेष रूप से चिकित्सा विज्ञान में रसायन की परिभाषा एक विशेष औषधि से की है । चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में रसायन विद्या उस औषधि को कहते हैं, जो मानव जीवन को वृद्धावस्था और मृत्यु से परे कर दें, और बुढ़ापे को यौवन में बदल दें, दूसरे शब्दों में यह एक ऐसी विद्या मानी गई है, जिसके माध्यम से वह व्यक्ति को पूर्णतः अजर और अमर बना दें ।

चिकित्सा विज्ञान में प्राचीन काल में दो शब्दों पर विशेष जोर दिया गया है, एक तो 'देह सिद्धि' और दूसरा 'लौह सिद्धि' । देह सिद्धि का तात्पर्य ऐसी औषधि या रसायन का निर्माण करना, जिसके माध्यम से बुढ़ापा पूर्णतः यौवन में बदल जाय, और लौह सिद्धि का तात्पर्य कोई ऐसा प्रयोग या एक ऐसी प्रणाली विकसित की जाय जिसके माध्यम से पारा तांबा या सीसे जैसी साधारण धातु को सोने में परिवर्तित किया जाय, रसायन शास्त्रियों का यह दावा रहा है, कि ऐसा संभव है, और उन्होंने इस क्षेत्र में प्रयत्न प्रारम्भ किये उनका मानना यह था कि यदि तांबे को सोने में परिवर्तित किया जा सकता है, तो शरीर को भी या दूसरे शब्दों में बुढ़ापे को भी यौवन में बदला जा सकता है, और इसीलिए प्राचीन काल में यह विद्या अत्यधिक प्रसिद्ध हुई और समाज में रसायन विद्या को जानने वाले विद्वानों का महत्व बढ़ा ।

भारतवर्ष के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में स्वर्ण बनाने के बारे में विवरण आया है, और ऋषि ने श्री सूक्त में इसका विवरण देते हुए स्पष्ट किया है, कि तांबे को या पारे को एक विशेष विधि से सोने में परिवर्तित किया जा सकता है।

अथर्ववेद में इस विद्या के बारे में विस्तार से मंत्र दिये हुए हैं और उसमें बताया गया है, कि यदि पारद या पारे को संखिया या नीला थोथा में पुट देकर जारण किया जाय, तो निश्चय ही वह पारा सोने में बदल जाता है।

अथर्ववेद में इस बात का वर्णन है, कि यदि पारद को विशेष विधि से जारण करके बीमार और वृद्ध व्यक्ति के शरीर में इसका प्रवेश दिया जाय तो निश्चय ही वह रोगी और वृद्ध व्यक्ति रोग मुक्त हो सकता है, तथा अजर अमर होता हुआ पूर्ण स्वस्थ बन सकता है।

रसायन विद्या के प्रवर्तक भगवान शिव को माना गया, जिसे वेदों में "रुद्र" शब्द से सम्बोधित किया गया है, भगवान शिव ने इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निर्देश दिये, जिसे आगे चल कर **"रुद्रयामल तंत्र"** ग्रन्थ में विवेचन किया। इस रुद्रयामल तंत्र के अनुसार पारा अपने आप में सजीव धातु है, यदि पारद में अरण्ड के बीजों का पुट देकर "स्वर्ण ग्रास" दिये जाय तो वह पारा निश्चय ही सोने में बदल जाता है, और आगे के आचार्यों ने इस कथन पर प्रयोग भी किये और उन्हें पूर्ण सफलता भी मिली।

उन्हीं दिनों में अश्विनी कुमार देवताओं के चिकित्सक व पूर्ण रूप से रसायन विद्या को जानने वाले थे, उन्होंने एक अद्‌भुत और महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा जिसका नाम **"धातु रत्न माला"** है, पारद विज्ञान के बारे में यह ग्रन्थ अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिसमें तांबे से सोना बनाने की विधियां अंकित की गई हैं।

अश्विनी कुमार जैसे विद्वान ने पारद के कई संस्कार पहली बार स्पष्ट किये, और उन्होंने आठ संस्कारों का विवेचन किया, उनके अनुसार यदि व्यक्ति क्रमशः पारद के एक संस्कार से दूसरे, और दूसरे संस्कार से तीसरे इस प्रकार क्रमशः आठ संस्कार करे, तो जो पारा प्राप्त होता है, वह काया कल्प करने में पूर्ण रूप से समर्थ होता है, यदि इस प्रकार के पारद को वृद्ध अशक्त और रोगी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश दिया जाय तो निश्चय ही वह रोगी और वृद्ध व्यक्ति रोग मुक्त होकर

चिर यौवनवान बन जाता है, अश्विनी कुमार ने इस ग्रन्थ में यह भी स्पष्ट किया कि ऐसे आठ संस्कार युक्त पारे को, यदि तांबे को पूर्ण रूप से पिघला कर पानी की तरह बना कर उसमें इस पारद का सम्पुट दिया जाय तो उसी क्षण वह तांबा सोने में परिवर्तित हो जाता है।

ऊपर मैंने भगवान शिव से संबंधित ग्रन्थ की रचना और विवरण दिया, रुद्रयामल तंत्र में भी इस प्रकार के प्रामाणिक विवरण देखने को मिलते हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया है, कि पारद पूर्ण रूप से जीवन मुक्त द्रव्य है, और आगे के अनुवादकों ने कहा कि यदि रुद्रयामल तंत्र में वर्णित विधि के अनुसार तांबे को सोने में बदलने की क्रिया की जाय, तो सारी पृथ्वी से दरिद्रता समाप्त की जा सकती है।

इन ग्रन्थों में एक बात तो स्पष्ट है, कि उन्होंने कुछ ऐसे प्रयोग कर लिए थे, जिससे वे एक तरफ इस विद्या के माध्यम से बुढ़ापे को यौवन में बदलने की कला सीख गये थे, और दूसरे इसी के माध्यम से उन्होंने तांबे जैसी साधारण धातु को सोने में बदलने की क्रिया प्राप्त कर ली थी।

"धरणीधर संहिता" में पारद के बारे में प्रामाणिक रूप से बताते हुए कहा है —

य: श्लेष्मानिलपित्तदोषशमनो रोगापहो मूर्च्छितः।
पंचत्वं च गतो ददाति विपुलं राज्यं चिरंजीवितम्॥
बद्धः खे गमनः करोत्यमरतां विद्याधरत्वं नृणां।
सो यं पातु सुरासुरेन्द्रनमितः श्री सूतराजः प्रभुः॥

अर्थात् यदि पारे को मूर्छित कर दिया जाय, तो ऐसा पारा शरीर के कफ, वात और पित्त को शान्त करता है, और शरीर के समस्त रोगों को दूर करने में समर्थ होता है और यदि विशेष संस्कार के साथ पारद को मारण कर दिया जाय तो ऐसा पारा दीर्घायु प्रदान करने के साथ साथ व्यक्ति को अजर-अमर भी बना सकता है, यदि आगे चल कर पारद को संस्कारों के साथ बद्ध कर दिया जाय, तो उसकी गुटिका मनुष्य को आकाश में विचरण करने की सामर्थ्य प्रदान कर देती है, और ऐसे व्यक्ति को देवता भी प्रणाम करते हैं।

यही नहीं अपितु **"रसमंजरी"** जैसे ग्रन्थ में पारे के बारे में स्पष्ट किया है —

हरति सकल रोगान्मूर्च्छितो यो नराणां
वितरति किलबद्धः खेचरत्वं जवेन ।
सकल सुरमुनीन्द्रैर्वन्दितं शंभुबीजं
स जयति भवसिन्धोः पारदः पारदो ऽयम् ॥

अर्थात् मूर्च्छित पारा मनुष्य के समस्त रोगों को निश्चय ही दूर कर देता है और उसे पूर्ण निरोग बना देता है, यदि आठवें संस्कार से पारे का बन्धन कर दिया जाता है तो वह पारा व्यक्ति को आकाश में उड़ने की क्षमता प्रदान कर देता है क्योंकि ऐसे पारद को श्री महादेव जी का वीर्य बताया गया है, और वह मनुष्य को भव सागर से पार करने में समर्थ है।

उपरोक्त उच्चकोटि के ग्रन्थों के उदाहरणों से तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पारा सामान्य धातु नहीं है, अपितु यदि कोई साधक अपने जीवन में यह निश्चय कर ले कि उसे पारे को सिद्ध करना ही है और किसी विशेष रसायनिज्ञ से पारद के संस्कार भली प्रकार से सीख लें, तो वह एक तरफ जहां व्यक्ति का पूर्णतः काया कल्प कर सकता है, वहीं उस पारद के माध्यम से वह सामान्य और कम मूल्य की धातु को स्वर्ण जैसी बहुमूल्य धातु में परिवर्तित कर सकता है।

"रस महिमा" अपने आप में महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो कि प्रत्येक पारद सीखने वाले जिज्ञासु को पढ़नी चाहिए, उसमें और "रस रत्नाकर" में पारे के बारे में विवेचन करते हुए कहा है—

हतो हन्ति जराव्याधिर्मूर्च्छितो व्याधि घातकः ।
बद्धः खेचरतां धत्ते को ऽन्यः सूतात्कृपाकरः ॥

अर्थात् यदि संस्कार युक्त पारे का मारण कर दिया जाय तो ऐसा मरा हुआ पारा बुढ़ापे के दुःखों अर्थात् सिर के बालों का सफेद होना चेहरे पर झुर्रियां पड़ना, शरीर कमजोर और अशक्त होना आदि बुढ़ापे के चिन्हों को नाश करता है, और शरीर के समस्त रोगों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है, जिस प्रकार से अग्नि घास फूस के ढेर को नष्ट कर देती है। ऐसा पारा मनुष्य को आकाश गति देने में समर्थ होता है, संसार में केवल पारद ही ऐसी धातु है जो मनुष्य को पूर्ण समर्थ और शक्तिवान बना देती है।

"रसराज समुच्चय" में पारद के बारे में कहा गया है—

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापोद्भवं किलासाध्यम् ।
श्वित्रं तदपि च शमयति यस्तस्मात्कः पवित्रतरः सूतात् ॥

अर्थात् यदि व्यक्ति ने देवता, गुरु, गाय, और ब्राह्मण की भी हिंसा कर दी हो और उस हिंसा के पाप से यदि व्यक्ति को असाध्य श्वेत कुष्ठ हो गया हो तो इस प्रकार के पारद से वह श्वेत कुष्ठ भी पूर्णतः नाश हो जाता है क्योंकि यह धातु पूर्णतः पवित्र, दिव्य और जीवन को पूर्णता देने में समर्थ है।

पारद के विविध नाम

पारद पांच प्रकार का माना गया है, और इसे पांच अलग अलग नामों से पुकारा गया है — १) रस, २) रसेन्द्र, ३) सूत, ४) पारद और ५) मिश्रक।

१- रस

रस नाम का पारद लाल रंग का होता है, और ऐसा पारद सभी प्रकार के दोषों से मुक्त और पूर्णतः रसायन होता है, इसी प्रकार के पारे के सेवन से देवता बुढ़ापे और मृत्यु से मुक्त हो सके, और पूर्णतः अजर अमर हो सके।

२- रसेन्द्र

रसेन्द्र नाम का पारद अपने स्वभाव से ही निर्दोष माना गया है, यह या तो काले रंग का होता है या पीले रंग का, इस प्रकार के पारद भक्षण से मनुष्य बुढ़ापे एवं मृत्यु से छूट जाता है, यद्यपि इस प्रकार का पारद बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है, परन्तु इस प्रकार के पारद को ग्रहण करने से व्यक्ति निश्चय ही अजर अमर हो जाता है।

३ -सूत

सूत नाम का पारद कुछ कुछ पीला सा, रूखा और कुछ दोषों से युक्त होता है, इस पारे को यदि अठारह संस्कारों से सिद्ध किया जाय, तो ऐसा पारा व्यक्ति के शरीर को लोहे की तरह मजबूत और वज्र की तरह कठोर बना देता है।

४-पारद

यह सफेद रंग का और चंचल होता है, यदि इसको शुद्ध और संस्कारित

किया जाय तो ऐसा पारद समस्त प्रकार के रोगों का नाश करने में समर्थ होता है ।

५- मिश्रक

इस प्रकार का पारा मोर के पंख के समान थोड़ी थोड़ी नीली आभा लिये हुए होता है, और यदि इसे अठारह संस्कारों से सिद्ध किया जाय, तो यह विविध सिद्धियों को प्रदान करने वाला माना गया है ।

वस्तुतः उपरोक्त पांचों प्रकार के पारद देखने को मिल जाते हैं, परन्तु सामान्यतः बाजार में जो पारा मिलता है, वह "पारद" संज्ञक होता है, जिसका वर्णन ऊपर आया है, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि अन्य प्रकार के पारद प्राप्त होते ही नहीं हैं । मैंने अपने जीवन में उपरोक्त पांचों प्रकार के पारद का अध्ययन किया है, उसका प्रयोग और अनुभव किया है, और उपरोक्त ग्रन्थों में इसके बारे में जो विशेषताएं बताई हैं, वे प्रामाणिक और सही सिद्ध हुई हैं, मेरा अनुभव यह रहा है, कि यदि कोई अपने जीवन में पूर्ण समर्पण भाव से रसायन विद्या के क्षेत्र में उतरता है, और अपनी जीवन शक्ति लगा कर प्रयोग करता है, और किसी योग्य गुरू के निर्देशन में इसके सभी संस्कार सिद्ध कर लेता है, तो उपरोक्त ग्रंथों में पारे के बारे में जो विवेचन दिया है, वह पूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि मेरा अनुभव यह रहा है, कि ऐसा संस्कारवान पारद इससे भी ज्यादा सक्षम, इससे भी ज्यादा ताकतवान और इससे भी ज्यादा गुणवान बन जाता है ।

यह मेरे जीवन का सौभाग्य रहा है, कि मुझे अपने सन्यास जीवन में परमहंस स्वामी रसेन्द्रनाथ जी के सम्पर्क और साहचर्य में रहने का अवसर मिला, इस समय पूरी पृथ्वी पर स्वामी रसेन्द्रनाथ जी के समान कोई विद्वान और रसायनिज्ञ नहीं है, जो पारद के १०८ संस्कार करने की क्षमता रखते हैं, दूसरे शब्दों में उनको हिमालय के समस्त योगीजन भगवान शंकर का ही स्वरूप मानते हैं, सिद्धाश्रम के योगी भी उन्हें अत्यन्त आदर और सम्मान देते हैं, और उनकी प्रत्येक बात को श्रद्धा से स्वीकार करते हैं ।

पारद विज्ञान के क्षेत्र में वे अपने आप में अन्यतम आचार्य हैं, और उन्होंने इस प्रकार के प्राचीन समस्त ग्रन्थों का अध्ययन किया है, और उन्हें अपने जीवन में

उतारा है, यह आश्चर्यजनक है, **एक प्रकार से देखा जाय** तो वे पारद विज्ञान **के चलते फिरते "शब्द कोष" हैं**, और उन्हें पारद विज्ञान की प्रामाणिक जानकारी और ज्ञान प्राप्त है ।

उन्होंने अत्यन्त कृपा कर मुझे रसायन विज्ञान सिखाने और उसमें सिद्ध करने का वचन दिया, और ठीक समय पर उन्होंने मुझे रसायन दीक्षा दी, अत्यन्त सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही यह रसायन दीक्षा प्राप्त होती है, इस दीक्षा को देने का तात्पर्य यह है, कि गुरु इस बात को स्वीकार करता है, कि मैं इस शिष्य को रसायन के क्षेत्र में अन्यतम आचार्य बनाऊंगा, और मेरे पास रसायन के बारे में जो कुछ ज्ञान और उपलब्धियां हैं, वे सब इस शिष्य को प्रामाणिकता के साथ प्रदान करूंगा ।

कई सौ वर्षों की आयु प्राप्त स्वामी रसेन्द्रनाथ जी ने मात्र दो शिष्यों को ही रसायन दीक्षा दी है, मुझ से कई सौ वर्षों पहले स्वामी दिव्यानन्द जी को उन्होंने रसायन दीक्षा दी थी, और उसके बाद उन्होंने मुझे ही यह दीक्षा देने की कृपा की, और इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूं ।

मुझे उनके साथ लगभग चार वर्ष तक रहने का अवसर मिला, और मैंने यह अनुभव किया कि उनको सैकड़ों ग्रन्थ पूर्णतः कंठस्थ हैं, और उन्होंने उन ग्रन्थों के अलावा व्यक्तिगत रूप से और अपनी साधना के बल पर रसायन के क्षेत्र में उपलब्धियां प्राप्त की हैं, वे अपने आप में अद्वितीय हैं ।

इन चार वर्षों में पारद सस्कार और रसायन विज्ञान सिखाने के क्रम में उनके मुंह से कई श्लोक और उद्धरण उच्चरित हो जाते थे, और पूछने पर वे उस लुप्त ग्रन्थ का नाम भी बता देते थे जो कि वैदिक काल या पौराणिक काल में लिखे गये थे, इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्तमान काल में ये सभी ग्रन्थ लुप्त और अप्राप्य हैं ।

मेरी बड़ी इच्छा थी कि इन ग्रन्थों का पुनरुद्धार हो और उनके पास बैठ कर उन अप्राप्य और लुप्त ग्रन्थों को पुनः लिखा जाय, जिससे कि वर्तमान विश्व को हमारी प्राचीन थाती प्राप्त हो सके, पर प्रयत्न करने के बावजूद भी मैं समय नहीं निकाल सका और उन ग्रन्थों को उनके मुंह से सुनकर लिखने का प्रयत्न नहीं कर सका, क्योंकि उसके लिये अत्यन्त धैर्य और समय की जरूरत है ।

जिन ग्रन्थों का जिक्र मैंने किया है, वे ग्रन्थ हैं –

१- रसार्णव
२- नागार्जुन
३- काकचण्डीश्वर
४- रसचन्द्रचिन्तामणि
५- रसरत्नाकर
६- रसहृदय
७- रसरत्नसमुच्चयम्
८- देव्यरसरत्नाकर
९- रसमंजरी
१०- भावप्रकाश
११- योगतरंगिणी
१२- रसराजलक्ष्मी
१३- रससारोद्धारपद्धति
१४- रससार
१५- रसचिन्तामणि
१६- रस प्रकाश
१७- रसावतार
१८- गन्धककल्प
१९- रसराजपद्धति
२०- रस राजहंस
२१- लौह पद्धति
२२- लोहदेहसिद्धि
२३- रसपद्धति
२४- निघंटुरत्नाकर
२५- रसरत्नदीपिका
२६- रसमंगल
२७- अजीर्णमंजरी
२८- रस संकेत कलिका
२९- रसामृत
३०- पुरन्दर रहस्य
३१- रसकामधेनु
३२- अभिधानकामधेनु
३३- क्षीरसिन्धु
३४- टोडरानन्दमंजरी
३५- रसपारिजात
३६- रसराजशंकर
३७- योगसार
३८- रससिन्धु
३९- रसप्रकाशसुधाकर
४०- धरणीधरसंहिता

उपरोक्त ग्रन्थ भारतीय रसायन विद्या के अनमोल और उज्ज्वलतम ग्रन्थ रहे हैं, और इनमें से प्रत्येक ग्रन्थ हीरे मोतियों से तोलने लायक है, पर वर्तमान में इनमें से कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।

यह मेरा सौभाग्य रहा है, कि योगीराज के साथ मैंने जितना समय व्यतीत किया, उस अवधि में वे रसायन विद्या सिखाते समय उपरोक्त ग्रन्थों के उद्धरणों को भी संस्कृत के साथ उच्चरित करते थे, और मेरी मेधाशक्ति अपने आप में प्रबल रही है, और उन्होंने इन ग्रन्थो के जो उद्धरण, जो पृष्ठ सुनाये, वे आज भी पूर्णतः स्मरण हैं।

पर इतने से ही काम नहीं चल सकता, मेरी तो इच्छा यह रही थी, कि उनके पास कुछ समय व्यतीत हो, और वे सभी के सभी ग्रन्थ पुनः लिखे जाय, वे पूरे के पूरे ग्रन्थ को उच्चरित करें, और मैं उसे अंकित कर दूं, जिससे कि वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ी के लिए अद्वितीय योगदान हो सके, परन्तु इसके लिए समय की नितान्त आवश्यकता है।

हो सकता है, कि वर्तमान में मेरा कोई शिष्य तैयार हो जाय, और उसमें

इतनी सक्षमता हो, जो कि रसायन विद्या के प्रति समर्पित हो, और वह उनके मुंह से उच्चरित इन ग्रन्थों को अंकित कर सके, अस्तु।

मैं बता रहा था, कि मुझे उनसे रसायन विद्या के बारे में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हुई। रसायन की बारीकियां, रसायन के भेद, और पारद के संस्कार आदि उन्होंने सिखाये, और साथ ही साथ उन्होंने इन सारे प्रयोगों को अपने सामने सम्पन्न करवाये। उन्होंने पारद के १०८ संस्कारों को पूरी तरह से सिखाया और एक एक संस्कार को अपने सामने करके देखा, और जब उन्हें विश्वास हुआ कि मैं पारद के उस संस्कार को भली प्रकार से सम्पन्न करने में सक्षम हो गया हूं तभी उन्होंने आगे के पारद संस्कार को सिखाया। उनका कहना था कि यदि मैंने शिष्य का चयन किया है तो वह रसायन के क्षेत्र में अद्वितीय हो, और आने वाले युग को एक गति एक मार्ग दर्शन पूर्णता के साथ देने में सक्षम हो, यद्यपि उनकी कसौटी अत्यन्त कठिन और कठोर थी, वे आलस्य और प्रमाद को सहन नहीं कर पाते थे, उनका लक्ष्य और उद्देश्य यहीं था, कि जो भी सीखा जाय वह पूर्ण प्रामाणिक, सफल और अद्वितीय हो, उन्होंने पारद के सभी संस्कार, आकाश गमन, पारद गुटिका, पारद लुप्त क्रिया, देह लुप्त क्रिया, अदृश्य सिद्धि आदि सभी विधाओं को पूर्णता के साथ समझाया, सिखाया और पारंगत किया।

पारद-भेद

"आयुर्वेद संहिता" में पारद के चार भेद माने गये हैं, और बताया गया है कि श्वेत रंग का पारद ब्राह्मण जाति का होता है, लाल रंग का पारद क्षत्रिय, पीले रंग का पारद वैश्य और काले रंग का पारद शूद्र होता है।

श्वेत पारद देह को सिद्ध करने और वज्र के समान बनाने में सहायक होता है, लाल रंग का पारद तांबे को सोने में परिवर्तित करने में सहायक होता है, पीले रंग के पारद से शरीर के समस्त रोगों का नाश होता है, और उसका पूर्णतः काया कल्प हो सकता है, और शूद्र जाति अर्थात काले रंग के पारद से अन्य प्रयोग किये जाते हैं, खेचर प्रयोग अर्थात आकाश में उड़ने की क्रिया के लिए काले पारद को ही स्वीकार किया गया है।

पारद दर्शन फल

"रसचिन्तामणि" में बताया गया है, कि इस पृथ्वी पर भगवान केदार

नाथ से लेकर जितने भी महादेव जी के लिंग या मन्दिर है, उन सब के दर्शन करने से जो पुण्य होता है, वह पुण्य केवल पारद के दर्शन करने से प्राप्त हो जाता है।

केदारादीनिलिंगानि पृथिव्यां यानि कानि चित्।
तानि दृष्ट्वा च यत्पुण्यं तत्पुण्यं रसदर्शनात्॥

रस स्पर्श फल

"रस चिन्तामणि" में पारद के स्पर्श का फल बताते हुए कहा है—

चन्दनागुरुकर्पूरकुंकुमान्तर्गतो रसः।
मूर्छितः शिवपूजा सा शिवसान्निध्यसिद्धये॥

अर्थात् पारे के स्पर्श करने से ही पूर्ण शिव पूजा का फल प्राप्त हो जाता है, और यदि नित्य पारद का स्पर्श किया जाय तो निश्चय ही भगवान शिव के दर्शन हो जाते हैं।

पारद भक्षण फल

"रसराज समुच्चय" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि पारद को भक्षण करना सभी दृष्टियों से जीवन को पूर्णता प्रदान करना है—

भक्षणात्परमेशानि हन्ति पापत्रयं रसः।
दुर्लभं ब्रह्मविष्ण्वाद्यैः प्राप्यते परमं पदम्॥

अर्थात् यदि पारद को शुद्ध कर संस्कारित एवं सेवन करने योग्य बना कर उसका भक्षण करता है तो वह मानसिक रूप से प्रबल बन जाता है, उसकी वाणी में सिद्धि प्राप्त हो जाती है और उसका शरीर समस्त रोगों से मुक्त हो जाता है, ऐसे पारद पर चढ़ाये जल का भी यदि पान किया जाय तो वह समस्त प्रकार के पापों को नाश करने वाला माना गया है, और ऐसा व्यक्ति निश्चय ही मनुष्य जाति में सर्वश्रेष्ठ और देवता के समान बन जाता है।

रस स्मरण फल

"रसेन्द्रसारसंग्रह" में पारद या पारद शिवलिंग को स्मरण करने के बारे

में विवेचन करते हुए कहा है—

हृद्योगकर्णिकान्तःस्थं रसेन्द्रं परमेश्वरि।
स्मरन् विमुच्यते पापैः सद्यो जन्मान्तरार्जितैः॥

अर्थात् जो मनुष्य पारद शिवलिंग का दर्शन करता है या उसका भक्ति भाव से स्मरण करता है, वह कई जन्मों के पापों से छूट जाता है और उसे परम पुण्य की प्राप्ति होती है।

पारद पूजा फल

पारद शिवलिंग की पूजा का तो सैकड़ों ग्रन्थों में विवरण आया है और उसमें बताया गया है, कि जो मनुष्य अपने घर में रसलिंग या पारद शिवलिंग को स्थापित करता है, और उसकी पूजा करता है, उसे तीनों लोकों में जितने भी शिवलिंग हैं उन सब की पूजा का फल केवल इस प्रकार के पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त हो जाता है—

स्वयं भूलिंगसहस्त्रैर्यत्फलं सम्यग र्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत्॥

"रस रत्नाकर" में पारद शिवलिंग के बारे में स्पष्ट करते हुए कहा है, कि पारद शिवलिंग का दर्शन करना पूर्ण रूप से पूर्णता प्राप्त करना है, उसके दर्शन करने से ब्रह्म हत्या का दोष दूर होता है, ऐसे शिवलिंग को स्पर्श करने से गौ हत्या दोष समाप्त होती है और यदि इस प्रकार के पारद शिवलिंग पर चढ़ाये गये जल को ग्रहण करता है तो वह समस्त दुखों से मुक्त होकर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है, ऐसे व्यक्ति के समस्त रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

मैंने एक बार परमपूज्य स्वामी जी से प्रश्न किया था कि आपने प्राचीन दुर्लभ गोपनीय ग्रन्थों का तो विवरण बातचीत के प्रसंग में किया है, प्राचीन काल में कौन कौन पारद विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध योगी हुए हैं उन्होंने नाम परिगणना स्पष्ट करते हुए कहा था कि निम्न व्यक्ति रस विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय आचार्य हुए हैं—

१- आदिम, २- चन्द्रसेन, ३- लंकेश (रावण), ४- विशारद, ५- कपाली, ६- मत्त, ७- माण्डव्य, ८- भास्कर, ९- शूरसेन,

१०- रत्नकोश, ११- शम्भु, १२- सात्विक, १३- रत्नवाहन, १४- इन्द्रद, १५- गोमुख, १६- कम्बलि, १७- व्याडि, १८- नागार्जुन, १९- सुधानन्द, २०- नागबोधि, २१- यशोधन, २२-खण्ड, २३- कापालिक, २४- ब्रह्मा, २५- गोविन्द, २६- लम्पक, २७- हरि ।

पारद सिद्ध योगी

उपरोक्त विद्वान पारद विज्ञान के सिद्धतम आचार्य माने गये हैं जिन्होंने पारद के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है और जिन्होंने पारद की सभी विधाओं को पूर्णता के साथ स्पष्ट किया है ।

पर इसके साथ साथ कुछ ऐसे भी रस सिद्ध योगी हुए हैं, जिन्होंने पारद सेवन से अपने आप को अजर अमर बना दिया है और वे आज भी स शरीर विद्यमान हैं । इसके साथ ही साथ उन्होंने मुझे विशेष प्रयोग बताया था, जो कि पारद के इक्यावनवें संस्कार से सिद्ध होता है, इसको "अदृश्य दृश्य गुटिका" कहा जाता है, यह गुटिका या गोली पारद का इक्यावनवां संस्कार सम्पन्न करने से बनती है, इसे मुंह में रखने से इस प्रकार के रस सिद्ध योगियों में से किसी भी योगी को स्मरण किया जाय तो वे स देह उपस्थित हो जाते हैं और पारद क्रिया के बारे में जो कुछ भी जानकारी चाहे, वे कृपा पूर्वक बता देते हैं ।

स्वामी जी ने पारद सिद्ध योगियों का विवरण देते हुए उनके नाम बताये थे---

१- रसांकुश, २- भैरव, ३- नन्दी, ४- स्वच्छन्द भैरव, ५- मंथान भैरव, ६- काकचंडीश्वर, ७- महादेव, ८- नरेन्द्र, ९- रत्नाकर, १०- हरीश्वर, ११- कोरण्डक, १२- सिद्धबुद्ध, १३- सिद्धपाद, १४- कंथडी, १५- ऋष्यश्रृंग, १६- वासुदेव, १७- रसेन्द्रतिलक, १८- भानुकर्मा, १९- पूज्यवाद, २०- कावेरी, २१- नित्यनाथ, २२- निरंजन, २३- चर्पट, २४- बिन्दुनाथ, २५- प्रभुदेव, २६- बल्लभ, २७- बालकि २८- यजनामा, २९- बोरामोली, ३०- टिटिनी, ३१- व्यालाचार्य, ३२- सुबुद्धि, ३३- रत्नघोष, ३४- सुसेनक, ३५- इन्द्रधूम, ३६- आगम ३७- कामारि, ३८- बाणासुर, ३९- कपिल, ४०- वलि ।

जब जब भी मुझे पारद से संबन्धित जटिल सूत्रों को समझने में उलझन आई है या पारद से संबंधित किसी क्रिया को स्पष्ट करने में व्यवधान आया है, तब तब मैंने इस "अदृश्य दृश्य गुटिका" को मुंह में रख कर इनमें से किसी भी रससिद्ध योगी का आह्वान किया है तो वे स शरीर उपस्थित हुए हैं और उस गुत्थी को सुलझाने में सहायक हुए हैं ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि ये सभी आचार्य आज भी स शरीर पृथ्वी तल पर विचरण करते हैं, और समस्याओं के समाधान में सहायक होते हैं ।

पारद पूजन

ऊपर मैंने उन आचार्यों के नाम बताये हैं जो पारद विद्या में सिद्धहस्त आचार्य और योगी हैं, तथा पारद सेवन से वे पूर्ण अजर अमर हो गये हैं । साधना के बल पर इनमें से अधिकांश योगियों और आचार्यों से मेरी भेंट हुई है, सैकड़ों वर्ष की आयु होने के बावजूद भी वे अभी चिरयुवा हैं, अभी भी जवान हैं, अभी भी उनके चेहरे पर एक चमक, एक ओज और एक आभा सी अनुभव होती है, ऐसा लगता है कि जैसे ये आचार्य कठिनाई से २५ और ३० वर्ष की आयु के बीच के हों, क्योंकि "रसचिन्तामणि" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से उल्लेख है, कि—

अचिराज्जायते देवि शरीरमजरामरम् ।
मनसश्च समाधानं रसकोगादवाप्य ते ।।

अर्थात् श्री महादेव कह रहे हैं, हे पार्वती ! जो मनुष्य या आचार्य पारद का सेवन करता है, वह निश्चय ही अजर अमर हो जाता है, और मृत्यु उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती, क्योंकि पारद भक्षण से उसका मन शान्त हो जाता है, और ऐसा योगी हो, पूर्णतः मुक्ति प्राप्त करता है ।

"रससार" ग्रन्थ में बताया गया है—

यावन्न हरबीजं तु भक्षयेत्पारदं रसम् ।
तावतस्य कुतोमुक्तिः कुतः पिंडस्य धारणम् ।।

अर्थात् जब तक मनुष्य संस्कारित किया हुआ, पारद सेवन नहीं कर लेता,

तब तक उसकी मुक्ति हो ही नहीं सकती, तब तक वह रोगों से अपने शरीर को बचा ही नहीं सकता, तब तक वह मृत्यु को अपने से दूर कर ही नहीं सकता, इसीलिए उत्तम कोटि का व्यक्ति वही कहलाता है, जो पूर्ण शुद्ध और संस्कारित पारद का भली प्रकार से सेवन करने में समर्थ हो।

ऊपर मैंने जिन आचार्यों के नाम बताये हैं, उन सभी ने इस बात को स्वीकार किया है, कि यदि जीवन में पारद में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करनी है, यदि पारद के पूर्ण संस्कार ज्ञात करने हैं, तो उच्चकोटि के विद्वान के द्वारा निर्मित पारद शिवलिंग को अपने घर में स्थापित करना ही चाहिए, जिसके घर में ऐसा पारद शिवलिंग स्थापित होता है, उसके समान सौभाग्यशाली व्यक्ति और कोई नहीं होता।

"रसराज समुच्चय" ग्रंथ में कहा गया है—

विधाय रसलिंगं यो भक्तियुक्तः समर्चयेत्
जगत्त्रियलिंगानां पूजाफलमवानुप्यात् ।।

अर्थात् जो मनुष्य अपने जीवन में पारद शिवलिंग प्राप्त कर लेता है, उसे घर में स्थापित कर उसका पूजन करता है, तो इस संसार में और तीनों लोकों में जितने शिवलिंग हैं, देवलोक, मृत्युलोक और पाताल लोक, में भगवान शिव की जितनी उपासनाएं हैं, उन सब उपासनाओं का फल केवल मात्र इस प्रकार के पारद शिवलिंग को स्थापित करने, दर्शन करने, और पूजा करने से प्राप्त हो जाता है।

"रसेंद्र कल्प" ग्रंथ में तो स्पष्ट रूप से कहा है,—

स्वयंभूलिंगसाहृचर्त्रैयत्फलं सम्यगर्चनात् ।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत् ॥

अर्थात् संसार के हजारों शिवलिंगों की पूजा करने से मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग की पूजा करने से प्राप्त हो जाता है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह जैसे भी हो पारद शिवलिंग प्राप्त करे और अपने घर में स्थापित कर उसके दर्शन करके जीवन का सौभाग्य प्राप्त करे, क्योंकि इसका दर्शन करना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

"रससार पद्धति" ग्रन्थ में इस संबंध में दो टूक शब्दों में बताया गया है, कि—

दर्शनादसराजस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति
स्पर्शनोन्नाशयेद्देवि गोहत्या नात्र संशयः
किं पुनर्भक्षणाद्देवि प्राप्यते परमं पदम् ।।

अर्थात् पारद शिवलिंग का दर्शन ब्रह्म हत्या के दोष को दूर कर देता है, उसके स्पर्श करने से पूर्व जन्मकृत समस्त पापों का क्षय हो जाता है, और यदि पारद शिवलिंग पर चढ़े हुए जल का सेवन व्यक्ति करता है, तो निश्चय ही वह अपने जीवन में पूर्ण सुख भोगता हुआ परम पद प्राप्त करता है।

एक बार मैंने स्वामी जी से चर्चा करते हुए प्रश्न पूछा था कि आपने रस सिद्ध आचार्यों की गणना तो बताई और आपकी कृपा से मैंने साधना के द्वारा उनमें से अधिकतर आचार्यों के दर्शन भी किये, और जहां जहां पर भी पारद संस्कार या पारद के बारे में कोई शंका मेरे मन में उठी, तो उसमें से किसी भी आचार्य से पूछने पर उन्होंने मेरी गुत्थी सुलझा दी।

पर क्या कुछ ऐसी विदुषी साधिकायें भी हुई हैं, जिन्होंने पारद के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किये हों और जो इस क्षेत्र में सिद्ध हो।

स्वामी जी ने इस संबंध में मुझे कई विदुषी आचार्याओं के नामों को स्पष्ट किया जो कि पारद के क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध योगिनियां रही हैं, और आज भी वे संसार में विचरण करती हैं, उनमें से कुछ नाम इस प्रकार है।

१- चांचल्य, २- योगा, ३- कंचुकी, ४- शैल, ५- कापालि,
६- कालिका, ७- कपालिका, ८- मोहिनी, ९- वेला, १०- पुष्पदेहा,
११- स्वर्णावती, १२- चन्द्रसेना, १३- इन्द्रगा, १४- ज्वाला,
१५- भैरवी, १६-काकचंडी, १७- बालका, १८- रत्नचोपा, १९-आगमा
२०- कपिला, २१- मोहिनी, २२- नन्दनी, २३- खण्डी, २४- वरपति,
२५- हरिश्वरी, २६- रत्नकोपा, २७- भाष्करा, २८- रसेश्वरी,
२९- चतुरा, ३०- लक्षणा, ३१- मेनका, ३२- सिद्धा, ३३- हिंगला
३४- नागबाला, ३५- उत्थापना, ३६- हेमरक्ता, ३७- पिंजरी,
३८- चुल्लका, ३९- अभिषेका, ४०-बीजावर्ता, ४१- शीतला,
४२- चरका, ४३- आरनाला, ४४- सूर्या, ४५- गुप्ता, ४६. श्यामा,
४७- सुन्दरा, ४८- स्वर्णा, ४९- हेमानला, ५०- कनका, ५१-निष्ठा।

उपरोक्त साधिकाएं पारद के क्षेत्र में अद्वितीय आचार्या रही हैं और इन

सब ने अपने जीवन में पारद के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किये हैं, और पारद शिवलिंग के पूजन से तथा संस्कारित पारद सेवन से ये साधिकाएं अजर अमर हो गई है ।

अपने गुरू की आज्ञा से मैंने "आह्वान सिद्धि" प्राप्त कर लगभग उपरोक्त सभी साधिकाओं से भेंट की है, और सैकड़ों बार इनका आह्वान कर इनसे पारद के बारे में ज्ञान प्राप्त किया है ।

मुझे आश्चर्य यह होता है, कि सैकड़ों हजारों वर्षों की आयु प्राप्त करने के बावजूद भी उपरोक्त सभी साधिकाएं अत्यधिक सुन्दर यौवनवान और सम्मोहक है, ऐसा लगता है कि जैसे ये कठिनाई से बीस वर्ष के आस पास की हो और सब से बड़ी बात मैंने यह अनुभव की, कि इनके शरीर से एक अपूर्व अद्वितीय और मादक गंध प्रवहित होती है,जिस से देवता या मनुष्य बरबस इनकी ओर आकृष्ट होता है ।

इस संबंध में योगीराज से पूछने पर उन्होंने बताया कि संस्कारित पारद के सेवन से शरीर तो अत्यधिक सुन्दर गौरवर्ण आकर्षक और सम्मोहन बनता ही है, साथ ही साथ उनके शरीर से एक ऐसी सुगन्ध भी प्रवहित होने लगती है, जो अष्ट गन्ध से ज्यादा श्रेष्ठ होती है, यह गन्ध कठोर से कठोर व्यक्ति या देवता को भी अपनी ओर खींचने और अनुरक्त करने में समर्थ होती है ।

इनमें से एक योगिनी "रत्नकोषा" से सम्पर्क स्थापित करने पर उसने मुझे बताया था कि मनुष्य अपने कर्मों से शरीर को धारण करता है, पर यदि वह श्रेष्ठ आचार्य के द्वारा मूर्छित किये हुए पारे को सेवन करता है, तो उसके शरीर के समस्त रोग दूर हो जाते है , और यदि संस्कारित कर मरे हुए पारे को सेवन किया जाय तो ऐसा पारद मृत व्यक्ति को भी जीवित कर सकता है ।

एक दूसरी आचार्या "मोहनी" ने मुझे बताया था कि यदि १८ संस्कारा से पारे को बांध दिया जाय और उसकी गोली बनाई जाय और इस गुटिका को मुंह में रखे, तो मनुष्य स शरीर आकाश में विचरण कर सकता है, और बहुत ही कम समय में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है।

एक अन्य आचार्या ने मुझे समझाते हुए कहा था कि बुढापा दुःख और

व्याधि से ग्रस्त शरीर ब्रह्म की उपासना कर ही नहीं सकता, क्योंकि दुखी शरीर ब्रह्म की उपासना कैसे कर सकता है ?

जो व्यक्ति खांसी रोग आदि बीमारियों से पीड़ित हो, वह समाधि कैसे लगा सकता है, इसलिए जो व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण ब्रह्म से साक्षात्कार करना चाहता है जो व्यक्ति अपने जीवन में मुक्ति चाहता है, उसको सबसे पहले पारद भक्षण कर अपने शरीर को स्थिर बना लेना चाहिए, जिससे कि वह सभी दृष्टियों से सफलता प्राप्त कर सके ।

एक आचार्या "नागबाला" ने मुझे रसविद्या अर्थात् पारद विद्या के बारे में समझाते हुए बताया था कि पारद विद्या दूसरे शब्दों में ब्रह्म विद्या है, और तीनों लोकों में इसे प्राप्त करना कठिन है , क्योंकि यह विद्या पूर्ण भोग और मोक्ष को देने वाली है , ऐसा व्यक्ति जीवन के अन्तिम क्षण तक समर्थ और सशक्त बना रहता है, यह चिरयौवन वान और तेजस्वी रहता है, और ऐसे व्यक्ति के चारों ओर हजारों हजारों सुन्दरियां मंडराती रहती हैं ।

इन सभी आचार्यों ने भी इस बात को स्वीकार किया, कि इसके लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति को अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करना चाहिए और उसकी पूजा करनी चाहिए ।

साथ ही साथ उन्होंने चेतावनी भी दी, कि जो पारद शिवलिंग की निन्दा करता है, वह मनुष्य चाहे कितना ही पुण्य करे पर, वह निश्चय ही घोर नरक में पड़ता है–

यश्च दिपति सूतेन्द्रं शंभोस्तेः परात्परम् ।
स पतेन्नरके घोरे यावत्कल्पविकल्पना ॥

(1) इसी प्रकार "रसचिन्तामणि" ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से कहा है—

ब्रह्मज्ञानेन सो युक्तो यः पापी रसनिंदकः ।
नहि त्राता भवेतस्य जन्मकोटिशतैरपि ॥

अर्थात् जो व्यक्ति अपने जीवन में पारद शिवलिंग की निन्दा करता है उसे घोर पापी समझना चाहिए, ऐसा व्यक्ति पारद के क्षेत्र में सफलता पा ही नहीं सकता, और ऐसा व्यक्ति चाहे किसी भी प्रकार की साधनाएं कर ले

मृत्यु से उसको कोई नहीं बचा सकता ।

पारद शिर्वालग रचना

"धरणीधर संहिता" में पारद शिवलिंग के निर्माण के बारे में बताया है, कि पारद के आठ संस्कार कर उसे स्वर्ण के ग्रास दे, और फिर उस पारद को घी गंवार, चित्रक, कटेरी की जड़, त्रिफला सरसो, राई और हल्दी का काढ़ा बना कर इसमें पारद को खरल करना चाहिए और उससे से जो श्रेष्ठ पारद प्राप्त हो उसे कांजी से धोकर कपड़े से पोंछ कर पारद को प्राप्त कर लें , फिर पुनः इसे स्वर्ण ग्रास दें, और बेल पत्र तथा बिल्व पत्र के रस में घोटें, इस प्रकार जो पारद प्राप्त हो, उससे पारद शिर्वालग का निर्माण करें ।

वस्तुतः ऐसे शिर्वालग से ही जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सकती है , क्योंकि ऐसा पारद पूर्णतः मल रहित शुद्ध स्वच्छ और दिव्य होता है।

फिर अपने घर के पूजा स्थान में ईशान कोण में शुभ मुहूर्त देख कर या अपने गुरु से पूछ कर ऐसे शिवलिंग को प्राप्त कर उसको स्थापित करें, फिर निम्न प्रकार से पारद शिर्वालग का ध्यान करें ।

पारद शिर्वालग ध्यान

ॐ अष्टादशभुजं शुभ्रं पंचवक्त्रं त्रिलोचनम्
प्रेतारूढं, नीलकंठं ध्यायेद्वामे च पार्वतीम् ।
चतुर्भुजामेकवक्त्रमक्षमालांकुशे तथा
वामे पाशाभये चैव दधती तप्तहं भयाम् ।।
पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम् ।।

अर्थात् जिन महादेव का श्वेत शरीर है, अठारह भुजाऐं हैं, पांच जिनके मुख हैं, तीन जिनके नेत्र हैं, जो बैल की सवारी करते हैं, जिनके वाम भाग में चार भुजा वाली पार्वती बैठी हुई हैं, जिनके गले में रुद्राक्ष की माला धारण की हुई है जिनके बांये हाथ में पाश और अभय नामक अस्त्र हैं, और जो पीताम्बर वस्त्र धारण की हुई, अनेक आभूषणों से सजी हुई गौर वर्ण मां पार्वती बैठी हुई हैं, उन दोनों को मैं भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं, ।

इस प्रकार से दोनों हाथ जोड़ कर भगवान पारदेश्वर शिर्वालग में ही मां

पार्वती का ध्यान कर उनको पुष्प समर्पित करें, और फिर पारद शिर्वालग के चारों दिशाओं में चार महाबली गणों को स्थापित करें, पूर्व में नन्दी, उत्तर में भृंगी, पश्चिम में महाकाली, और दक्षिण में कुलीरा को स्थापित करें ।

"रसराज ग्रन्थ" के अनुसार स्वयं श्री महादेव जी ने पार्वती को स्पष्ट करते हुए कहा है –

लिंगकोटिसहस्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद् भवेत
ब्रह्महत्यासहस्त्राणि गो हत्यायाः शतानि च
तत्क्षणाद्विलयं यांनि रसलिंगस्य दर्शनात्
स्पर्शनात्प्राप्यते मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्

अर्थात जो साधक अपने जीवन में मेरे पारद शिर्वालग को स्थापित कर लेता है, उसे करोड़ों शिर्वालग की पूजा करने का फल, इस प्रकार के पारद शिर्वालग की पूजा करने से प्राप्त हो जाता है, हजारों ब्रह्म हत्याएं और गौ हत्यायें इस प्रकार के पारद शिर्वालग के दर्शन से ही समाप्त हो जाती हैं, और इस प्रकार के पारद शिर्वालग का जो स्पर्श कर लेता है, उसकी निश्चय ही पूर्ण मुक्ति हो जाती है ।

मुझे इस प्रकार के पूजन का विवेचन करते हुए "मेनका" ने बताया था, कि भगवान पारदेश्वर शिर्वालग को स्थापित कर अग्नि कोण में पारद की लक्ष्मी की प्रतिमा बना कर स्थापन करना चाहिए, और उसे दूध से स्नान करा कर पूजन करना चाहिए ।

"धनंजय संचय" में भी उल्लेख आया है, कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अतुलनीय धन सम्पत्ति की आकांक्षा रखते हैं, उन्हें श्रेष्ठ गुरु से इस प्रकार का पारद शिवलिंग ईशान कोण में स्थापित करना ही चाहिए, अग्नि कोण में भगवती लक्ष्मी को भी स्थापित करनी चाहिए जो पारद से निर्मित हो, और वह ऐसा पारद जिसे स्वर्ण ग्रास दिया हुआ हो ।

आग्नेय्यां श्री स्वर्णमयी कर्षमानां तदर्धकाम्
तत्रावाह्य महालक्ष्मीं क्षीरेणास्नाप्य पूजयेत्
ऐं श्रीं क्लीं सौं महालक्ष्म्यै नमो मंत्रवरेण वै
प्रत्यहं पूजयेदेवं गंधपुष्प फलादिभि ।

अग्रेयकोष्ठे श्री मूर्ति सर्वदा पारिक्षपयेत्
उक्तपूजां विना नैव सूतराजस्य सिद्धयति

मानव को अपने जीवन में प्रयत्न कर इस प्रकार के पारद से निर्मित महालक्ष्मी की प्रतिमा को प्राप्त कर अग्नि कोण में स्थापित करना चाहिए और "ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र से भगवती लक्ष्मी की गन्ध पुष्प अक्षत आदि से पूजन होना चाहिए यह, मंत्र अपने आप में सर्वोत्तम मन्त्र है, और पारद लक्ष्मी का यह अद्वितीय मंत्र कहा जाता है।

पारदेश्वर शिवलिंग पूजन क्रम

श्रेष्ठ मुहूर्त में अपने गुरु से इस प्रकार का स्वर्ण ग्रास दिया हुआ, रससिद्ध पारदेश्वर शिवलिंग प्राप्त करना चाहिए और फिर पूजा स्थान में एक चांदी की थाली या धातु की थाली रख कर उसके मध्य में अष्ट गन्ध से षट्कोण अंकित करना चाहिए उसके चारों ओर दो गोलाकार वृत्त खींचने चाहिए, और फिर उसके एक तरफ अष्ट दल तथा दूसरी ओर चतुर्दल बनाना चाहिए, फिर उसके मध्य में निम्न मंत्र उच्चारण करता हुआ, पारद शिवलिंग को स्थापित करें।

पारद शिवलिंग स्थापन मंत्र

सद्योजातंप्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः
भवे भवेनाति भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः

इस प्रकार मंत्र को उच्चारण कर षट्कोण के मध्य में पारद शिवलिंग को स्थापित करें, और फिर उस पर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पांच बिल्व पत्र चढ़ाएं।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं क्लीं सौं ॐ
अघोरेभ्यो थ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यः सर्वान्तरेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः

इस प्रकार से रसेश्वर शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ा कर "ॐ नमो शिवाय:" मंत्र का उच्चारण करते हुए पात्र में से जल लेकर छिड़कना चाहिए।

फिर भगवती लक्ष्मी का संक्षिप्त पूजन कर उन्हें पांच गुलाब के पुष्प समर्पित करें, और अपने सामने कुछ पुष्प और शुद्ध बिल्व पत्र लेकर निम्न भगवान शिव के नामों का उच्चारण करते हुए एक एक नाम के साथ एक एक बिल्व पत्र एवं एक एक पुष्प समर्पित करें।

बिल्व पत्र पुष्प समर्पण

१-ॐ आगदेवाय नमः २- ॐ चन्द्रसेनाय नमः ३-ॐ लंकेशाय नमः ४- ॐ विशारदयै नमः ५- ॐ मतदेवाय नमः ६- ॐ माण्डव्याय नमः ७- ॐ भाष्कराय नमः ८- ॐ शूरकाय नमः ९- ॐ रत्नकोशाय नमः १०- ॐ शंभवे नमः ११- ॐ तांत्रिकाय नमः १२- ॐ नर वाहनाय नमः १३- ॐ इन्दगाय नमः १४- गोमुखाय नमः १५-ॐ कंबलायै नमः १६- ॐ व्यालवै नमः १७- ॐ नागार्जुनाय नमः १८- ॐ सुरानंदाय नमः १९- ॐ नाग बोधयै नमः २०- ॐ यशोधनायै नमः २१-ॐ खण्डाय नमः २२- ॐ कापालिकाय नमः २३- ॐ ब्रह्मणे नमः २४- ॐ गोविन्दाय नमः २५- ॐ लंपटाय नमः २६- ॐ हरये नमः २७- ॐ रसांकुशालय नमः २८- ॐ भैरवाय नमः २९- ॐ नदिने नमः ३०- ॐ स्वच्छन्द भैरवाय नमः ३१- ॐ मंथान भैरवाय नमः ३२- काकचंडीश्वराय नमः ३३- ॐ ऋस्यश्रृंगाय नमः ३४- ॐ वासुदेवाय नमः ३५- ॐ क्रिया-तंत्रसमुच्चायै नमः ३६- ॐ रसेन्द्रतिलकाय नमः ३७- ॐ भानुकायै नमः ३८- ॐ मेलिण्यै नमः ३९- ॐ महादेवाय नमः ४०- ॐ नरेन्द्राय नमः ४१- ॐ रत्नाकराय नमः ४२- ॐ हरिश्वराय नमः ४३- ॐ कारंटकाय नमः ४४- ॐ सिद्धिबुद्धाय नमः ४५- ॐ सिद्ध-पादाय नमः ४६- ॐ कथंडिने नमः ४७- ॐ पूज्यपादाय नमः ४८- ॐ कावेरिणै नमः ४९- ॐ नित्यनाथाय नमः ५०- ॐ रिजनाय नमः ५१- ॐ वर्पताय नमः ५२- ॐ विडंनाथाय नमः ५३- ॐ प्रभु-दूवाय नमः ५४- ॐ वल्लभाय नमः ५५- ॐ बल्कयै नमः ५६-ॐ यज-नम्रे नमः ५७- ॐ घोराचोलिनिते नमः ५८- ॐ टिंटिनिने नमः ५९- ॐ व्यालाचार्याय नमः ६०- ॐ सुबुद्धये नमः ६१- ॐ रत्नघोषाय नमः ६२- ॐ सुसेनकाय नमः ६३- ॐ इन्द्रधूमाय नमः ६४-ॐ आग-माय नमः ६५- ॐ बाणासुराय नमः ६६- ॐ कपिलाय नमः ६७- ॐ बलये नमः ६८-ॐ कामारये नमः।

इस प्रकार से भगवान शिव का पूजन कर उन्हें बिल्व पत्र और पुष्प चढ़ा कर दोनों हाथ जोड़ कर भगवान शिव का पूजन करें।

पारद ग्रन्थों में बताया गया है, कि इस प्रकार का पूजन गुरु के घर जाकर गुरु के द्वारा ही सम्पन्न करावें, क्योंकि जो इस क्षेत्र में सिद्ध गुरु हो, वही इस प्रकार का पूर्ण पूजन करवा सकता है, इसलिए जीवन का यह महत्वपूर्ण उद्देश्य होना चाहिए कि वह अपने जीवन में गुरु से सम्पर्क स्थापित करें, उनसे पारद शिवलिंग प्राप्त करने की प्रार्थना करें, और फिर उनके सानिध्य में बैठ कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

पर मुझे एक उच्च कोटि के आचार्य ने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए बताया था कि इस प्रकार का पूजन करने से पूर्व साधक को चाहिए कि वह अपने गुरु के पास जाकर इससे संबंधित तीन प्रकार की दीक्षा प्राप्त करें, इन तीनों दीक्षाओं को प्राप्त करने से ही वह **"रस सिद्ध शिष्य"** होता है, वह पारद शिवलिंग का भली प्रकार से पूजन करने का अधिकारी होता है, और वह पारद के क्षेत्र में तथा पारे से स्वर्ण बनाने की क्रिया में सफलता प्राप्त कर सकता है।

पारदेश्वर दीक्षा प्रयोग

"पारदेश्वर सिद्धि" ग्रन्थ में बताया गया है, कि अपने गुरु के पास जाकर उससे याचना करे, कि वह मन्त्र दीक्षा प्राप्त करना चाहता है, तब गुरु उसे पारदेश्वरी दीक्षा दे।

सबसे पहले गुरु, साधक को अपने सामने बिठावे और श्रेष्ठ मुहूर्त देख कर उसका गंगाजल से मार्जन करे, और फिर उसके ललाट पर रस सिन्दूर का तिलक करे, फिर भगवान शिव के १०८ बीजों से साधक का अंग न्यास करे।

फिर साधक हाथ में जल लेकर विनियोग करे,

विनियोग

ॐ अस्य श्री रसेश्वरीमंत्रस्य महादेव ऋषिः पंक्तिश्छन्द श्री रसेश्वरी पार्वती देवता रसकर्मसिद्धये जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक अपने सामने स्थापित भगवान पारदेश्वर लिंग का ध्यान करे।

ध्यान

अष्टादशभुजं शंभु पंचवक्त्रं त्रिलोचनम्
प्रेतारूढं नीलकंठ ध्यायेद्वामे च पार्वतीम्
चतुर्भुजामेकवक्त्रांमक्षमालांकुशे तथा
वामे पाशाभये चैव दधतीं तप्तहेमभाम्
पीतवस्त्रां महादेवीं नानाभूषणभूषिताम्
रसेश्वरीं शंभुयुतां रससिद्धिप्रदां भजे
वाणीस्मरः पुनर्वाणी लज्जावाणीरितो मतः
पंचाक्षरो रसेश्वर्याः सर्वसिद्धिविधायकः
रसकर्मणि सर्वत्र शोधने साधने मृतौ
अष्टोत्तरसहस्रं वै जपन्कर्म समारभेत् ॥

अर्थात् अठारह भुजाओं वाले, श्वेत वर्ण, पांच मुख, तीन नेत्र, प्रेतों की सवारी करने वाले, नीलकण्ठ महादेव मुझे पूर्णता प्रदान करें, भगवान शिव के बाईं ओर स्थापित चार भुजा और एक मुख को धारण करने वाली, जिसके दाहिने हाथ में रुद्राक्ष माला और अंकुश तथा बांये हाथ में पाश और अभय है जो गौरवर्ण और स्वर्ण के समान देदीप्यमान देह है, जो पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए हैं, जो अनेक आभूषणों से सजी हुई हैं, ऐसी रसेश्वरी को मैं भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं।

ऐसा ध्यान करने के बाद गुरु साधक के शरीर में चौसठ महादेव को स्थापित करे, जिससे कि साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत और स्वर्ण के समान दिव्य बन जाय।

फिर गुरु अपने शिष्य का **"रसांकुश विद्या"** से प्रणव करे, **काम बीज** से यौवन शक्ति प्रदान करे, **शक्ति बीज** से पौरुष प्रदान करे, **रक्षा बीज** से पूर्ण सुरक्षा दे, **अग्नि बीज** से उसके सारे शरीर को स्वर्ण के समान बनावे, रस बीज से उसे सिद्धि प्रदान करे और **रसेश्वरी बीज** से उसे अतुलनीय ऐश्वर्यवान बनावे।

उसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न अघोर मंत्र की पांच माला मंत्र जप वहीं पर बैठे बैठे करें।

अघोर मन्त्र

ॐ हां ह्रीं हूं अष्टोत्तरपराफुट २ प्रकट प्रकट कुरु कुरु शमय शमय जात जात दह दह पानय पानय ॐ ह्रीं ह्रूं हौं हूं अघोराय फट् ।।

इसके बाद गुरु ऐसे साधक को विशेष पूजन क्रम सम्पन्न करावे और उसके शरीर में कामदेव को निम्न विशेष बीज से स्थापित करे—

काम बीज मंत्र

ॐ हां ह्रीं हूं अघोरेभ्यो थ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ।।

इससे कमजोर से कमजोर साधक भी पूर्ण पौरुषवान, यौवनवान और क्षमतावान पुरुष बन जाता है और उसके सारे शरीर की कमजोरी दूर हो जाती है, इसके साथ ही साथ गुरु को चाहिए कि सहस्रधारा प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे उसका शरीर पूर्ण सम्मोहक और आकर्षक बन जाय, जो कि हजारों हजारों स्त्रियों को सम्मोहित करने में समर्थ हो सके ।

दीक्षा का दूसरा क्रम

जैसा कि मैंने ऊपर बताया था कि इस रसेश्वरी दीक्षा के तीन क्रम में पहला क्रम समाप्त होने के बाद गुरु उसका दूसरा क्रम प्रारम्भ करे ।

साधक अपने सामने पारदेश्वर शिवलिंग को चांदी के पात्र में स्थापित करे, और गुरु या दीक्षा देने वाला **सौन्दर्य क्रम** से शिष्य का अभिषेक करे, **यौवन क्रम** से रेचन करे, कामबीज से सम्पुटित करे, **पारद बीज** से पूर्णता दे और **शिव बीज** से उसे पूर्ण जीवन प्रदान करे ।

इस प्रकार यह रसेश्वरी साधना का दूसरा क्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इससे साधक तेजी से साधना क्रम में सफलता की ओर अग्रसर होता है, और आगे चल कर वह पारद के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है ।

दीक्षा का तीसरा क्रम

दीक्षा के तीसरे क्रम में साधक को शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुंह करके बिठावे, और उसके शरीर में भगवान सूर्य का आह्वान करे, फिर उसके शरीर में लक्ष्मी के १०८ रूपों को स्थापित करे, जिससे कि उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे ।

फिर सामने पारद से निर्मित भगवती लक्ष्मी को अग्नि कोण में स्थापित करें, और साधक का गोदुग्ध से मार्जन करें, और सामने अग्नि स्थापित कर निम्न मंत्र से १०८ घी की आहुतियां दें -

मन्त्र

ॐ हं ह्रौं नमः ।

आहुतियां देने के बाद साधक अपने गुरु की पूजा करे, और अपने गुरु में ही भगवान शिव को स्थापित समझ कर उनकी पूर्ण पूजा करते हुए दक्षिणा समर्पित करें और फिर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें -

शिवाय शांतरूपाय अनाथाय नमोनमः ।
अमूर्ताय नमस्ते स्तु व्योमरूपाय वै नमः ।।
तेजसे च नमस्तेस्तु अनंताय नमोस्तु ते ।
तेजोरूप नमस्ते स्तु सर्वगाय नमो नमः ।।
ॐ अमृताय स्वाहा ॐ अनाथाय स्वाहा
ॐ शिवाय स्वाहा ॐ व्योमव्यापिने स्वाहा ॐ रुद्रतेजसे स्वाहा ॐ जीवात्मने स्वाहा ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ।।

इस प्रकार गुरु की पूर्ण पूजा करके उन्हें पाद्य समर्पित करें, धूप दीप नैवेद्य और दक्षिणा समर्पित करें, और प्रार्थना करें, कि साधक अपने जीवन में पूर्ण सफल हो ।

तब गुरु अपने शिष्य को "पारद सिद्धि" का आशीर्वाद दे, और उसे इन्द्रियों को जीतने वाला बना कर पूर्णता प्रदान करें ।

इस प्रकार यह रसेश्वरी दीक्षा संसार की श्रेष्ठ और अद्वितीय दीक्षा है, अत्यन्त सौभाग्यशाली व्यक्ति ही इस प्रकार की दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु वर्तमान संसार में बहुत कम रह गये हैं, और ऐसे शिष्य भी गिने चुने ही हैं, जो रसेश्वरी दीक्षा लेने की भावना रखते हों, जब उनके जीवन का सौभाग्य उदय होता है, तभी उन्हें अपने जीवन में रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु प्राप्त होते हैं, तभी ऐसा संयोग उपस्थित होता है, और तभी ऐसे गुरु अपने शिष्य को रसेश्वरी दीक्षा देकर उसे धन्य करते हैं। ●

रसेश्वरी महत् दीक्षा पूर्ण भाग्यं यदिभंवेत् ।
स सिद्ध देवतुल्योवा जलो गगनं विचर्यित् ॥

अर्थात् जिस व्यक्ति को अपने जीवन में उत्तम कोटि के गुरु मिल जाते हैं, जिन्हें रसेश्वरी दीक्षा देने का ज्ञान होता है, जो स्वयं समर्थ और सिद्ध योगी होते हैं, ऐसे गुरु से यदि जीवन में भेंट हो जाय, तो उनके पांव कस कर पकड़ लेने चाहिए और प्रयत्न करके उनसे रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त कर लेनी चाहिए।

क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक सामान्य व्यक्ति नहीं रह जाता, अपितु वह "देह सिद्ध योगी" बन जाता है, और देवता भी उससे ईर्ष्या करते हैं, वह जल पर सामान्य गति से चलने में सक्षम होता है, और आकाश में भी हवा की तरह विचरण करने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही क्षणों में जाने में समर्थ सिद्ध योगी बन जाता है।

गुरु सेवां बिना कर्म यः कुर्यान्मूढचेतनः
स याति निष्फलत्वं हि स्वप्नलब्धं यथा धनम् ॥

अर्थात् जो मूर्ख मनुष्य बिना गुरु की सेवा किये पारद कर्म को करता है, या पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसका सारा धन व्यर्थ, और साधना निष्फल हो जाती है।

गुरौ तुष्टे शिवस्तुष्टः शिवे तुष्टे रसस्तथा ।
रसे तुष्टे क्रियाः सर्वाः सिध्यन्ते नात्र संशयः ॥

अर्थात् गुरु के प्रसन्न होने पर भगवान शिव महादेव भी पूर्ण प्रसन्न होते हैं, और भगवान शिव के प्रसन्न होने से पारद सिद्धि प्राप्त होती है, जिससे वह स्वर्ण निर्माण करने में सक्षम हो पाता है। ●

रसायन विद्या

पिछले अध्याय में मैंने पारद के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी, और विविध ग्रन्थों के आधार पर मैंने यह स्पष्ट किया कि जो साधक अपने जीवन में पारद सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वह जीवन में पूर्ण योगी और समर्थ बन जाता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

यह रसायन कर्म प्राचीन काल से सुविख्यात है, और यदि हम इतिहास के पन्ने टटोलें तो इसकी जड़ें वैदिक काल तक पहुंचती हैं, वेदों में भी इसके बारे में स्पष्ट विवरण दिया है।

ऋग्वेद में बताया है, कि यह धातु स्वयं उड़ने वाली है, पर यदि जो इस पर अधिकार कर लेता है, वह स्वयं आकाश में उड़ने में समर्थ और सक्षम हो पाता है।

एक अन्य मन्त्र में ऋषि ने पारद के बारे में बताते हुए कहा है, कि यह धातु देह सिद्ध धातु है, और यदि इसे सिद्ध कर इसका पान किया जाए, तो मनुष्य की "देह सिद्धि" हो जाती है और वह निश्चय ही अजर अमर हो जाता है।

इन दोनों मंत्रों से यह स्पष्ट होता है, कि ऋग्वेद कालीन ऋषियों को भी पारद विद्या के बारे में पूर्ण जानकारी थी, और उन्होंने पारद का धातु के रूप में प्रयोग किया और इसके माध्यम से आकाश में विचरण करने की क्षमता प्राप्त की, साथ ही साथ उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में भी पारद का प्रयोग किया, और उन्हें संस्कारित कर उसका प्रयोग किया, फलस्वरूप वे "देह सिद्ध ऋषि" बन सके और हजारों हजारों वर्षों की आयु प्राप्त कर सके।

ऋग्वेद के बाद यजुर्वेद में भी पारद के बारे में विस्तार से विवरण मिलता है, यजुर्वेद मूलतः यज्ञ कार्य से संबन्धित है और इन मन्त्रों के माध्यम से ऋषियों ने देवताओं से पूर्ण सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें अपने वश में करने का प्रयास किया, उन दिनों ये ऋषि देवताओं से उसी प्रकार सहज भाव से मिल लेते थे, जिस प्रकार से हम सब आज कल एक दूसरे से मिल पाते है।

यजुर्वेद में बताया गया है, कि पारद भगवान शिव का ही वीर्य है, जिसे स्खलित होने पर पृथ्वी झेल नहीं सकी, और यह पृथ्वी से कुछ ऊपर ही पूरे पृथ्वी मण्डल में विचरण करता रहा।

यजुर्वेद में ऋषियों ने भगवान शिव को पूर्ण रूप से सिद्ध करने उन्हें प्रसन्न करने और उनके दर्शन करके मनोवांछित वरदान प्राप्त करने के लिए **"पारदेश्वर शिवलिंग"** का विस्तार से विवेचन किया, और यह बताया कि यदि भली प्रकार से पारद को बांध कर उसका शिवलिंग बनाकर स्थापित किया जाय और उसका पूजन किया जाय, तो निश्चय ही भगवान शिव को प्रसन्न होना ही पड़ता है, और साधक चाहे, कितना ही अज्ञानी मूर्ख और पापी हो, पर यदि वह अपने घर में पारदेश्वर शिवलिंग की स्थापना कर लेता है, और अपने गुरू से उसका पूजन समझ कर पारदेश्वर की पूजा करता है, वह निश्चय ही भगवान शिव को प्रसन्न कर उसे अपने सामने प्रत्यक्ष प्रगट करने के लिए विवश कर देता है, और उसके पूर्ण दर्शन कर उनसे मनोवांछित वरदान प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

एक अन्य मंत्र में ऋषि ने स्पष्ट रूप से बताया है, कि संसार में पारदेश्वर शिवलिंग के समान अन्य कोई देवता नहीं है, भले ही साधक को पारदेश्वर की पूजा का ज्ञान न हो, भले ही उसे मंत्र उच्चारण की विधी ज्ञात न हो, पर यदि वह पारद से निर्मित शिवलिंग को प्राप्त कर लेता है, और उसे अपने घर में स्थापित कर लेता है, तो ऐसा व्यक्ति देवताओं से भी ज्यादा भाग्यवान समर्थ और सिद्ध योगी बन जाता है, भगवान शिव तो स्वयं अन्नपूर्णा के पति हैं, अतः जिस घर में पारद शिवलिंग स्थापित होता है, उसके घर में भगवती लक्ष्मी अपने समस्त ऐश्वर्य के साथ अन्नपूर्णा के रूप में उस साधक के घर में निवास करने

में विवश होती ही है, और ऐसे साधक के जीवन में ऐश्वर्य की दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

पारदेश्वर गृहे यत्र दुर्लभो जायते नरः ।
धन धान्यं तथा स्वर्णं अटूटं नात्रसंशय ॥

अर्थात् यदि स्वर्ण ग्रास दिया हुआ श्रेष्ठ पारद शिवलिंग किसी साधक को प्राप्त हो, और यदि वह घर में स्थापित हो तो वह संसार का सर्वाधिक सौभाग्यशाली व्यक्ति माना जाता है, उसके घर में धन धान्य और स्वर्ण की निरन्तर वर्षा होती रहती है, वास्तव में ऐसा शिवलिंग बनाना अत्यन्त कठिन है फिर उसे स्वर्ण ग्रास दे कर आश्चर्यजनक शिवलिंग बना देना और कठिन है पर समर्थ और सिद्ध गुरू ऐसा शिवलिंग निर्मित कर अपने प्रिय शिष्य को प्रदान कर सकते हैं।

एक अन्य मंत्र में ऋषि ने लक्ष्मी का आह्वान करते हुए स्पष्ट किया है, कि यदि स्वर्ण ग्रास दे कर बद्ध पारद से निर्मित भगवती लक्ष्मी की प्रतिमा बना कर अग्नि कोण में स्थापित कर उसका दर्शन करे, तो वह लक्ष्मी "स्वर्णावती" बन जाती है और उसके घर में निरन्तर स्वर्ण वर्षा होती रहती है।

यजुर्वेद के अन्त में कई मंत्रों में ऋषि ने लक्ष्मी का आवाहन "श्री" के रूप में और स्वर्णावती के रूप में किया है, एक स्थान पर ऋषि ने भगवती लक्ष्मी को "पारदेश्वरी" शब्द से सम्बोधित किया है, और कहा है, कि लक्ष्मी के १०८ रूपों में पारदेश्वरी लक्ष्मी सर्वश्रेष्ठ, अद्वितीय, सिद्धि प्रदायक और स्वर्ण वर्षा देने में समर्थ है।

लक्ष्मी की स्तुति करते हुए ऋषि ने अपने मन्त्र में उच्चरित किया है, कि हे पारदेश्वरी, हे पारद से निर्मित लक्ष्मी, मैं तुम्हारा आह्वान कर रहा हूं, आप अपने समस्त रूपों के साथ मेरे घर में स्थापित हो, जिससे धन, धान्य, यश, पृथ्वी, भवन, कीर्ति, आयु, सम्मान, पुत्र, पौत्र, वाहन और स्वर्ण का निरन्तर आगमन होता रहे, और इनमें से किसी की भी कमी मेरे जीवन में न रहे।

एक अन्य मंत्र में ऋषि ने अपने सामने भगवती पारदेश्वरी लक्ष्मी के जाज्वल्यमान स्वरूप को प्रत्यक्ष देख कर प्रार्थना की, कि आप निरन्तर स्वर्ण वर्षा करने में समर्थ हैं, आप पूर्णता देने में समर्थ हैं, आप लक्ष्मी के समस्त रूपों में सर्वश्रेष्ठ है, और पारद निर्मित पारदेश्वरी रूप में स्थापित करते ही, जो आपके भव्य दर्शन मुझे हुए हैं, और जिस प्रकार से आपने मुझ पूर्ण वरदान दिया है, उससे मुझे विश्वास हो गया है कि आपका पारदेश्वरी रूप ही सर्व श्रेष्ठ एवं वरदायक है।

सामवेद में कई ऋचाएं ऐसी हैं, जिसमें रसायन विद्या का पूर्णता के साथ उल्लेख है, "वशिष्ठ" के समकालीन ऋषि "जमदग्नि" के पास रसायन विद्या रूपी कामधेनु का उल्लेख किया है, और बताया है, कि इसकी वजह से ही "जमदग्नि" चिरयुवा और अत्यधिक सुन्दर हैं।

सामवेद के एक अन्य सूत्र में पारद विज्ञान को "कल्पवृक्ष" की संज्ञा दी है, और बताया है, कि जिस प्रकार से कल्पवृक्ष समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है, उसी प्रकार पारद विज्ञान भी देवताओं और मनुष्यों की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है।

इसकी कई ऋचाओं में पारद सेवन या इसका रसायन बना कर सेवन करने के बारे में भी उल्लेख है, और बताया गया है, कि इसके सेवन से शरीर के समस्त रोग मिट जाते हैं, और निश्चय ही वृद्धावस्था यौवन में परिवर्तित हो जाती है, यही नहीं, अपितु रसायन विद्या के प्रभाव से नारी शरीर में जो कुछ भी न्यूनताएं होती हैं, वे पूरी हो जाती हैं।

अथर्ववेद में तो रसायन विद्या के बारे में बहुत अधिक जानकारी है, एक प्रकार से देखा जाय तो अथर्ववेद आते आते उस समय के ऋषिगण रसायन विद्या के बारे में पूरी तरह से परिचित हो चुके थे, और उन्होंने इस पारद विज्ञान के दोनों प्रकार के प्रयोगों को समझ लिया था, वे इसके माध्यम से व्यक्ति को जल पर चलने की क्रिया और आकाश में उड़ने की पद्धति समझा रहे थे, यहीं पर इसे औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाने लगा था, और इसके सेवन से कई ऋषियों ने अपनी जर्जर काया को यौवन में परिवर्तित कर दिया था, अथर्ववेद में एक स्थान पर इसे "अमृत" की संज्ञा दी है, और बताया है, कि वास्तव में ही जो व्यक्ति सौभाग्यशाली होते हैं, वे ही पारद विज्ञान को भली प्रकार से समझ सकते हैं।

"कणाद" ऋषि के बारे में उल्लेख आया है, कि वे कई प्रलयों के साक्षी थे, और इसका रहस्य यही है, कि पारद विज्ञान के क्षेत्र में वे सिद्ध ऋषि थे, और उन्होंने इसका सेवन कर अपनी काया को अनन्त काल तक चिरयौवनमय बनाये रखा था, उनकी लम्बी आयु का कारण पारद सेवन ही है।

इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में बताया गया है, कि पारद को यदि क्रमशः संस्कारित किया जाय, तो बीसवें संस्कार में यह व्यक्ति को अमर बनाने में सक्षम हो जाता है, चौबीसवें संस्कार में व्यक्ति इस पारद गुटिका को अपने मुंह में रख कर आकाश में उड़ने की कला सीख लेता है, और जल पर उसी प्रकार चल सकता है, जिस प्रकार से व्यक्ति धरती पर चलते हैं।

एक स्थान पर नारद ऋषि का वर्णन आया है, और बताया गया है, कि रसायन विद्या के वे सिद्धतम आचार्य थे, और साथ ही साथ पारद के क्षेत्र में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण प्रयोग संपन्न किये थे, उन्होंने क्रमशः पारद के बाईस संस्कार सम्पन्न कर उसे सूर्य के समान तेजस्वी और सूर्य किरणों के समान वेगवती "पारद गुटिका" कहा है, जिसे मुंह में रखने से ही नारद स्वर्ग के अलावा अन्य लोकों में भी सहज भाव से विचरण कर लेते थे, और अपनी इच्छानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में समर्थ थे।

पौराणिक काल में तो पारद पर कई प्रयोग हुए, और कई ऋषि इस क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध योगी बने, वशिष्ठ ने अपने ग्रन्थ में इस विद्या को "कामधेनु विद्या" कहा है, इसी प्रकार भृगु ऋषि ने अपनी 'भृगु संहिता' में पारद विज्ञान के बारे में विस्तार से विवेचन किया है और बताया है, कि पारद विज्ञान कल्प वृक्ष के समान फलदायी है, जिस प्रकार लोहे की वस्तुएं जंग लगने से खराब हो जाती हैं, उसी प्रकार काल के थपेड़ों से यह शरीर भी जर्जर, कमजोर और अशक्त हो जाता है, पर यदि पारद को रसायन बना कर इसका सेवन किया जाय, तो यह शरीर सर्वथा नवीन, तरोताजा, स्वस्थ, सुन्दर व आकर्षक बन जाता है।

जमदग्नि ने अपने पुत्र परशुराम को पारद विज्ञान का पूरा पूरा ज्ञान दिया था, और परशुराम के हाथों अपनी पत्नी का सिर कटवा कर इस पारद

विज्ञान के माध्यम से ही अपनी पत्नी को पुनः जीवित करने का सफल प्रयोग किया था, परशुराम ने इस पारद विज्ञान और रसायन विज्ञान का विशिष्ट ज्ञान भगवान शिव की तपस्या कर उनसे प्राप्त किया था, और यह ज्ञान "**स्वर्ण तंत्र**" के रूप में ईश्वर परशुराम संवाद सहित प्रकाशित है ।

योग वशिष्ठ ग्रन्थ में **काकभुषण्डी ऋषि** का वर्णन आया है, और बताया है, कि उन्होंने अपने जीवन में पृथ्वी पर होने वाले कई प्रलय देखे थे, प्रलय में पूरी पृथ्वी डूब जाती है, पेड़ पौधे पशु पक्षी आदि समाप्त हो जाते हैं, परन्तु काकभुषण्डी ऋषि इस रसायन विद्या के बल पर ही बचे रहे, और हजारों हजारों वर्षों की आयु प्राप्त की, काकभुषण्डी ऋषि ने दो ग्रंथों की रचना की, जिसमें "**काकभुषण्डीश्वरी ग्रन्थ**" में रसायन विद्या का विस्तार से विवरण है, जिसके माध्यम से व्यक्ति यौवन एवं दीर्घायु प्राप्त कर सकता है, तथा दूसरे ग्रन्थ "कल्प तंत्र" में पारद विज्ञान और उसके संस्कारों का विस्तार से विवरण दिया है, जिसके माध्यम से उन्होंने कई प्रयोग किये, और सफलता के साथ यह बता दिया, कि पारद के माध्यम से ब्रह्माण्ड के रहस्यों का भेदन हो सकता है, इसके माध्यम से व्यक्ति अपना अत्यन्त लघु रूप और दीर्घकाय रूप बना सकता है, ये दोनों ही ग्रन्थ वर्तमान समय में उपलब्ध हैं ।

कपिल ऋषि ने "**कपिल सिद्धांत**" ग्रंथ की रचना की और इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने पारद विज्ञान के क्षेत्र में नवीन खोज की, उन्होंने तांबे से सोना बनाने के बारे में विस्तार से विवरण दिया है, और इस ग्रंथ में उन्होंने छब्बीस विविध प्रयोगों को स्पष्ट किया है, जिसके माध्यम से तांबे जैसी साधारण धातु को सोने जैसी बहुमूल्य धातु में बदला जा सकता है, कई वर्षों तक यह ग्रंथ लुप्त प्रायः रहा, परन्तु कुछ वर्षों पहले सिद्धाश्रम के योगियों ने इस ग्रंथ को जान कर इसकी रचना प्रकाशित की ।

पतञ्जली **ऋषि** ने "**लौह शास्त्र**" नामक ग्रंथ की रचना कर पारद के क्षेत्र में कई नवीन प्रयोग विश्व के सामने रखे, उन्होंने ही सबसे पहले पारद को आबद्ध करने की क्रिया सम्पन्न की, उन्होंने पारद के माध्यम से आकाश में सूक्ष्म रूप धारण कर उड़ने का प्रयोग सम्पन्न किया, उनका "लौह शास्त्र" इस समय लुप्त है, और प्रयास करने पर भी इसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है, अत्रि ऋषि अपने आप में सिद्ध रसायनिज्ञ थे, और शरीर की विविध व्याधियों को दूर करने में उन्होंने पारद के माध्यम से कई प्रयोग सम्पन्न किये

और अपनी "**अत्रि संहिता**" में यह स्पष्ट रूप से बताया कि संसार में ऐसी कोई बीमारी नहीं है, जो पारद के द्वारा दूर न हो सके, उन्होंने अपने ग्रन्थ में पारद विज्ञान के क्षेत्र में कई सफल प्रयोग स्पष्ट किये हैं, उनका ग्रन्थ आज भी भारत में प्राप्त है । उनके पुत्र **दत्तात्रेय** ने अपनी "**दत्तात्रेय संहिता**" में पारद विज्ञान को रसायन के क्षेत्र में सिद्ध किया और इसके माध्यम से शरीर को सर्वथा नूतन बनाने की क्रिया सम्पन्न की । दत्तात्रेय संहिता में पारद का सेवन किस प्रकार से किया जाना चाहिए, जिसकी वजह से शरीर की कमजोर और पकी हुई त्वचा पूरी की पूरी उतर जाती है, और उस स्थान पर नई ताजी और स्वस्थ त्वचा आ जाती है, जिसकी वजह से मनुष्य पुनः चिरयौवन वान बन जाता है, स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने इस लुप्त ग्रन्थ को योग बल से जान कर इसे प्रचलित किया, जो कि आज भी भारतवर्ष में सरलता से प्राप्त है, वास्तव में ही यह ग्रन्थ रसायन विज्ञान के क्षेत्र में कीर्ति स्तम्भ की तरह है, जिसमें पारद के विविध प्रयोग पूर्णता के साथ स्पष्ट किये गये हैं ।

दक्षिण भारत में अगस्त्य ऋषि प्रथम सिद्ध योगी माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी "**अगस्त्य संहिता**" में पारद के बारे में विस्तार से विवरण दिया है, उन्होंने पहली बार लोहे और तांबे जैसी साधारण धातुओं को सोने में परिवर्तित कर यह स्पष्ट कर दिया था, कि इसके माध्यम से सोने का ढेर लगाया जा सकता है, उन्होंने ही सबसे पहले "**सिद्ध सूत**" को बनाने की क्रिया सम्पन्न की जो कि भूरे रंग का पाउडर सा होता है, और जिसे गर्म तांबे पर थोड़ा सा डाल कर उसे आंच दी जाय, तो वह तांबा तुरन्त सोने में परिवर्तित हो जाता है ।

अगस्त्य ऋषि की वंश परम्परा में ही **रावण** पैदा हुआ जिसने इस विद्या को जान कर पूरी लंका को ही स्वर्णमयी बना दिया था, उसने तो सोने में सुगन्ध डालने का प्रयोग भी किया था, परन्तु उसकी अकाल मृत्यु होने से वह प्रयोग उसके साथ ही चला गया, रावण ने "**लंकेश सिद्धान्त**" नामक ग्रन्थ की रचना की, जो कि आज भी रसायन विद्या के क्षेत्र में अद्वितीय माना जाता है, इस ग्रन्थ में मामूली धातुओं को सोने में बदलने की कई क्रियाएं स्पष्ट की गई हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो यह पूरा का पूरा ग्रन्थ ही, पारद के माध्यम से तांबे को सोने में बदलने के प्रयोगों का संग्रह है, सिद्ध सूत के माध्यम से रावण ने अपनी नगरी लंका में सोने के ऊंचे-ऊंचे महल खड़े कर दिये थे और सिद्ध सूत से यह सुविधा भी हो गई थी, उसे छोटे से पात्र में भर कर कहीं पर भी ले जाया

जा सकता है और बिना परिश्रम किये मामूली आंच से ही तांबे को सोने में परिवर्तित किया जा सकता है, **"लंकेश सिद्धान्त"** की हस्तलिखित प्रति आज भी प्राप्य है ।

दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य ने पारद के माध्यम से ही रसायन विद्या में सिद्धता प्राप्त की थी और उन्होंने **"संजीवनी विद्या"** का प्रयोग प्रारम्भ किया था, उन्होंने **"रसावलोक"** ग्रन्थ की रचना की, जिसमें संजीवनी विद्या का विस्तार से विवरण है, इस विद्या के माध्यम से ही शुक्राचार्य देवताओं द्वारा मारे गये दैत्यों को पुनः जीवित कर देते थे, और उनको पारद विज्ञान के माध्यम से अजर अमर भी बना देते थे ।

इस क्षेत्र में **मुद्गल ऋषि** का नाम अत्यन्त आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है, जो पारद विज्ञान के सिद्धतम आचार्य और ऋषि थे, उन्होंने अपनी **"मुद्गल संहिता"** में पारद विज्ञान के कई प्रयोगों को स्पष्ट किया है, उन्होंने पारद के माध्यम से लोहे के ढ़ेर को सोने में परिवर्तित कर देने की क्रिया स्पष्ट की है, जो आज के युग में भी उतनी ही प्रामाणिक है, मुद्गल ऋषि ने ही संजीवनी विद्या को चरम सीमा पर पहुंचाया, जिसके माध्यम से केवल मरे हुए व्यक्ति ही जीवित नहीं हो जाते थे, अपितु यदि उनका कोई अंग भी कट जाता था तो इसके माध्यम से उस अंग को पुनः लगा देते थे, मुद्गल ऋषि ने बता दिया था कि पारद के इक्यावनवें संस्कार से किसी भी मृत शरीर को निश्चय ही पुनर्जीवित किया जा सकता है, और उन्होंने जो प्रयोग अपने इस ग्रन्थ में दिये हैं, वे आज भी प्रामाणिक है । स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने इस दुर्लभ और लुप्त ग्रन्थ **"मुद्गल संहिता"** को प्रामाणिकता के साथ योग बल से प्राप्त किया, और उसे विख्यात किया, **आज भी सिद्धाश्रम में मुद्गल संहिता को रसायन के क्षेत्र में अद्वितीय ग्रन्थ माना जाता है ।**

आगे चल कर महाभारत काल में भी यह विद्या जीवित रही, और भगवान श्री कृष्ण ने इस पारद विज्ञान के क्षेत्र में सिद्धता प्राप्त की, जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी द्वारिका को स्वर्णमयी बना दिया था, कर्ण ने पारद विज्ञान के माध्यम से कई प्रयोग सम्पन्न किये थे, और इसमें सूर्य किरणों का समावेश कर एक आश्चर्यजनक ज्ञान प्राप्त कर लिया था, कर्ण ने सूर्य रश्मियों और पारद के संयोग से जो प्रयोग सम्पन्न किये थे, उससे वह इस क्षेत्र में अद्वितीय बन सका था,

और इसी वजह से वह नित्य सवा पहर दिन चढ़ने तक स्वर्ण मुद्राएं दान देता रहता था ।

श्री कृष्ण ने **"पारद सूर्य विज्ञान"** नामक ग्रन्थ की रचना की थी, जिसमें पारे में सूर्य रश्मियों के समावेश को स्पष्ट किया था, इस वजह से पारे के संस्कार करने की आवश्यकता ही नहीं रही, और सूर्य रश्मियों के प्रयोग से ही वे सभी क्रियाएं प्राप्त हो सकी, जिसके माध्यम से व्यक्ति रोग रहित अजर अमर हो सकता है, और लोहे या तांबे को स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है, जिसके माध्यम से मरे हुए व्यक्ति को पुनर्जीवित किया जा सकता है, उनका यह ग्रन्थ आज भी प्राप्य है, और उसके प्रयोग अपने आप में अचिन्त्य और प्रामाणिक है ।

आगे चल कर विक्रमादित्य के शासन काल में एक प्रसिद्ध रसायन वेत्ता हुआ, जिसका नाम **"व्याडि"** था, जिसने पारे से स्वर्ण बनाने की कई क्रियाएं अपने ग्रन्थ **"व्याडि ग्रन्थ"** में स्पष्ट की, यह ग्रन्थ आज भी रसायन के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है ।

रसायनवादी पारद विज्ञान को **जीवन मुक्ति प्रयोग** मानते थे, महान रसायनिज्ञ नागर्जुन तो अत्यन्त दर्प से कहता था कि **मैं यदि रस सिद्ध हो गया तो इस पूरे संसार को दरिद्रता से मुक्त कर दूंगा,** उन लोगों की इस क्षेत्र में यह धारणा थी कि रसायन विद्या द्वारा देह अजर अमर हो जाती है, और यही देह आगे चल कर जीवन मुक्ति का साधन बनती है, इन्होंने इसके तीन वर्ग कर दिये थे, १- लौह सिद्धि, २- देह सिद्धि और ३- जीवन मुक्ति सिद्धि । जीवन मुक्ति साधना में उन्होंने तीन प्रयोग दिये थे, १- मनः सिद्धि (दूसरे के मन की बातें पूर्ण रूप से जान लेना), २- खेचरी सिद्धि (आकाश में सशरीर मन की इच्छा के अनुकूल विचरण करना), ३-जीवन मुक्ति (सभी प्रकार के रोगों से अपने शरीर को पूर्ण मुक्त कर देना) ।

इन लोगों ने यह स्पष्ट रूप से बता दिया था, कि प्राणायाम आदि क्रियाओं से देह सिद्धि नहीं हो सकती, इसके लिए तो यह जरूरी है, कि शरीर में पारद को भली प्रकार स्थिर किया जाय, और उसके माध्यम से शरीर सिद्धि प्राप्त की जाय ।

इसी परम्परा में **श्रीमद गोविन्द भगवतपाद्** (आद्य शंकराचार्य के गुरु अपने जमाने के प्रसिद्ध रसायनिज्ञ थे, उन्होंने अपने जीवन में दो ग्रंथ लिखे जो कि अपने आप में अद्वितीय और दुर्लभ थे, इनका **"रस हृदय तंत्र"** पारद विज्ञान का श्रेष्ठतम ग्रंथ है और उनका दूसरा ग्रंथ **"रस सार"** पारे से स्वर्ण बनाने की दुर्लभ विधियों से संग्रहित है, मैंने इन दोनों ग्रन्थों को सौ बार से भी ज्यादा पढ़ा है, और इनके मूल अर्थ को ठीक-ठीक समझने की कोशिश कर रहा हूं, परन्तु फिर भी हर बार पढ़ने पर उसमें कुछ नये तथ्य और अनुभव होने लगते हैं और जब उन प्रयोगों को मैं स्पष्ट करता हूं तो वे पूर्ण प्रामाणिक और खरे उतरते हैं।

ये दोनों ही ग्रन्थ प्रकाशित हैं और सहज ही प्राप्य हैं, परन्तु इन ग्रन्थों के सूत्र अपने आप में अद्भुत अर्थ लिये हुए और महत्वपूर्ण क्रियाओं से समन्वित हैं।

रस हृदय तंत्र ग्रंथ में उन्होंने अपने सूत्र में कहा है,

"काष्ठोबध्यो नागे नागवंगे य वेगमपिमुत्वे मुल्वंतारे तारं
कनके कनकं चलीयते सूते............ तस्मश्रे वमुक्ति समोह-
मानेन येर्णनोप्रथमं। देव्यातनुविधेया हरगौरी सृष्टि सयोगात्।

अर्थात् यदि जीवन मुक्ति चाहते हैं, तो पारद के माध्यम से ही देह सिद्धि करने पर ऐसा संभव है, इसके द्वारा रोग और पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा शरीर पूर्ण रूप से अजर अमर हो जाता है।

जंगल की जड़ी बूटियां शीशे में परिवर्तित की जा सकती हैं, शीशा रांगे में, रांगा तांबे में, तांबा चांदी में, चांदी सोने में, और सोना वापिस पारे में लीन हो जाता है, और ऐसा ही पारा व्यक्ति को अजर अमर बना सकता है।

बाद में चल कर इस क्षेत्र में कई प्रसिद्ध सिद्धों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने इस क्षेत्र में अद्वितीय ग्रन्थों की रचना की, इन सिद्धों में ग्यारह सिद्धों के नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं —

१- आदिनाथ, २- मूलनाथ, ३- चिंचिणी, ४- चौरंगी, ५- कांटो, ६- बालगोविन्द, ७- व्यालि, ८- नागार्जुन, ९- भौरंड, १०- कुकुरपाद, ११- सूर्यपाद।

इसके अलावा और भी कई सिद्ध हुए, जिन्होंने **"भैरवी चक्र तंत्र"** को आगे बढ़ाया, तिब्बत में भी कई सिद्धों के द्वारा लिखे हुए ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिन्होंने पारद विज्ञान के बारे में महत्वपूर्ण कार्य किया है, मैंने इन सभी ग्रन्थों का गहराई के साथ अध्ययन किया है, यद्यपि इन सब सिद्धों, नाथों और ग्रन्थों का विवरण इस छोटी सी पुस्तक में देना सम्भव नहीं है, परन्तु फिर भी इन ग्रन्थों में **रस रत्न, कपाली, रत्न घोष,** आदि ग्रन्थ अपने आप में अद्वितीय है, जिसमें पारद से स्वर्ण बनाने की प्रामाणिक क्रियाएं दी हुई हैं, और इनमें से प्रत्येक क्रिया अपने आप में खरी है।

इनके बाद ईसा की प्रथम शताब्दी के लगभग शुंगों और कण्वों का शासन आता है, इसमें शालिवाहन अपने आप में अत्यन्त प्रसिद्ध राजा हुए, जिसकी राजधानी अमरावती के निकट पैठन नगर थी, इन्होंने दो ग्रन्थों की रचना की, और वे दोनों ही ग्रन्थ अपने आप में इस क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

बहुत पहले आदि सिद्ध नागार्जुन हुए, जिन्होंने श्री शैल मठ की स्थापना की, इनका एक ग्रन्थ **"पारदेय"** प्राप्य है, जिसका वर्णन ह्वेनसांग ने अपने ग्रन्थ में किया है, यह ग्रन्थ इस समय उपलब्ध नहीं है।

इसी परम्परा में सातवाहन राजाओं का युग आया जिनके शिलालेख आज भी भारतवर्ष में कई स्थानों पर मिल जाते हैं, इन शिलालेखों में स्वर्ण बनाने की कई क्रियाएं अंकित हैं।

सन् २१८ ईसवी के आस पास नागार्जुन ने श्रीशैल पर ही अपना मठ बनाया, जो कि रस विज्ञान के अद्वितीय आचार्य थे, उनकी एक सुक्ति तो आज भी अत्यन्त प्रसिद्ध है —

सिद्धेरसे करिष्ये हं निर्दारिद्रन्यगंद जगत् — यह नागार्जुन की सुक्ति थी, जिसका अर्थ है कि मैं सिद्ध रस से पूरे संसार की दरिद्रता मिटा सकता हूं, राजा शालीवान ने अपने पुत्रों को इनका शिष्य बनाया था, नागार्जुन ने कपोत गुह नामक स्थान पर अपनी भट्टी बनाई थी, और सोना बनाना प्रारम्भ किया, राजा को यह भय हुआ, कि कहीं यह सोने का पूरा पहाड़ ही खड़ा न कर दे, इस भय से राजा ने नागार्जुन को जहर दे दिया।

मरते समय उससे रस विद्या के गुप्त भेद बताने के लिए कहा, तो उसने अंतिम क्षणों में निम्न शब्द उच्चारण किये थे—

तुत्थं रस गन्धकं । तुथ्या रस गन्धकं ।
मत्तोन्दु मत्तोन्दु । मत्तोन्दु । मत्तोन्दु ।

अर्थात् नीला थोथा, पारा और गन्धक, तथा एक वस्तु और। पर उस वस्तु का नाम वे नहीं बता सके, उससे पहले ही उनकी स्मरण शक्ति समाप्त हो गयी, बोली बन्द हो गई और संबन्धित भेद उनके साथ ही चला गया।

नागार्जुन ने रस शास्त्र पर तीन ग्रंथ लिखे हैं और तीनों ही ग्रंथ भारतीय जीवन के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं, इसमें **नागार्जुन संहिता**, **नागार्जुन तंत्र**, और **नागार्जुन कल्प** अत्यधिक प्रसिद्ध हैं, इसके अलावा पिछले दिनों ही उनके दो और छोटे-छोटे ग्रंथ मिले हैं जिसमें **रस रत्नाकर** और **रसेन्द्र मंगल** अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इन ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है, कि वास्तव में ही नागार्जुन ने रस विद्या को पूर्णता से जान लिया था।

श्री शैल पर्वत से संबन्धित ८४ सिद्ध विख्यात हुए और उन्होंने रस विद्या पर बहुत कुछ कार्य किया, इन चौरासी सिद्धों में **"सरहपाद"** का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इनके लगभग तीस ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद मिलता है, और ये सभी ग्रंथ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इन्होंने आगे चल कर बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था, और तंत्र विद्या में भी अत्यधिक प्रसिद्ध हुए थे, इन्होंने अपने एक ग्रन्थ में भोग द्वारा मुक्ति का विवेचन किया है, और जंगल में घूमते हुए एक बाण बनाने वाली कन्या योगिनी को अपनी पत्नी बना लिया था तथा उसी को आधार बना कर उन्होंने **"खेचरी विद्या"** का प्रयोग किया, जिसके माध्यम से ये सहज भाव से ही आकाश में विचरण कर सकते थे, नालन्दा विश्वविद्यालय के ये कुलाधिपति भी रहे।

इनके शिष्य नागार्जुन अत्यन्त प्रसिद्ध हुए जिन्होंने **खेचरी विद्या** को पूर्णता से सिद्ध की, यह आकाश गमन विद्या है, **रस रत्नाकर** ग्रन्थ में इसका विस्तार से उल्लेख मिलता है जिसमें प्रामाणिकता के साथ खेचरी तंत्र को स्पष्ट किया है।

मर्धं रुद्ध्वाधमेद्गाढ़ं जायते गुटिका शुभा ।
पूजयेदड् कुशीमन्त्रंनाम्नेयं दिव्यखेचरी ।
महाकल्पान्त पर्यन्त तिष्ठत्येव न संशयः ।
तस्यमूत्र पुरीषाभ्यां ताम्रं भवति कांचनम् ।

उपरोक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है, कि उन्हें खेचरी विद्या का पूर्णता के साथ ज्ञान था, इन्होंने आकाश मार्ग से उड़ कर अत्यन्त दुर्गम समुद्र के बीच एक टापू में रहने वाले सिद्ध पुरुष के पास जाकर रसायन विद्या सीखी, तथा बदले में उसे खेचरी विद्या सिखाई और वहां से लौट कर हजारों मन स्वर्ण बनाया और भिक्षुओं का दारिद्र्य दूर किया।

नागार्जुन के तीन प्रसिद्ध शिष्य थे जिनमें **आर्यदेव**, **विरूपाद** और **कण्हपाद** प्रसिद्ध हैं, आर्यदेव ने लगभग २५ ग्रन्थ तंत्र विद्या पर लिखे, जिनका तिब्बती भाषा में अनुवाद आज भी मिलता है। दुःख की बात यह है, कि इनके मूल ग्रन्थ प्राप्य नहीं हैं, परन्तु तिब्बती भाषा में इन ग्रन्थों का प्रामाणिक अनुवाद मिल जाता है।

विरूपाद ने १८ ग्रन्थ लिखे, और **"यमारि तंत्र"** का विस्तार से विवेचन किया, इस तंत्र की वजह से ही ये अपने समय में अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्ति माने गये।

कण्हपाद करामाती सिद्ध थे, जिन्होंने ७४ ग्रन्थ लिखे, और वे सभी ग्रन्थ आज भी तिब्बती भाषा में अनुवाद किये हुए प्राप्य हैं, इन्होंने तंत्र के माध्यम से स्वर्ण बनाने की क्रिया सम्पन्न की, और **"स्वर्ण यक्षिणी साधना"** को प्रामाणिकता के साथ इन ग्रन्थों में उल्लेख किया, **स्वर्ण यक्षिणी साधना** सिद्ध करने पर उसके माध्यम से स्वर्ण का पहाड़ खड़ा किया जा सकता है।

इनके शिष्य सबरपाद हुए जो बड़े भारी तांत्रिक थे, इन्होंने जिन मंत्रों को प्रसिद्ध किया, उनको सिद्ध करने या जपने की आवश्यकता नहीं थी, केवल एक बार पढ़ने से ही कार्य सिद्धि हो जाती थी, 'संत तुलसी दास' ने भी अपने **राम चरित मानस** में इनका उल्लेख किया है।

साबर मन्त्र जाप जिन्ह सिरजा।
अनमिल अक्षरमन्त्र न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।

इनके लिखे हुए तंत्र विद्या के २६ ग्रन्थ भारतवर्ष की अनमोल थाती है, ये सभी ग्रन्थ तिब्बत के शुभा मठ में सुरक्षित हैं, जिनका अध्ययन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है, वास्तव में ही ये सभी ग्रन्थ और उसमें लिखे हुए मंत्र अपने आपमें ही अद्वितीय है।

इन्ही के एक शिष्य **भूसुख** हुए जिन्होंने **"अघोरी"** सम्प्रदाय चलाया उनका लिखा हुआ ग्रंथ **"भूसुख कपाल वृष्टि"** अत्यन्त प्रसिद्ध है।

इन्ही की वंश परम्परा में आगे चल कर **जालन्धर नाथ** हुए।

जालन्धरनाथ विद्वान, तेजस्वी और प्रतापी व्यक्ति थे, पहले ये बौद्ध भिक्षु होकर **उष्टपाद** के शिष्य **धूमंपाद** के शिष्य बने पर आगे चल कर इन्होंने तंत्र के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की और **आस्तविकवाद** को स्वीकार किया, इन्होंने अपना पूर्ण रूप से स्वतंत्र **"नाथ सम्प्रदाय"** चलाया।

जिस प्रकार से चौरासी सिद्ध प्रसिद्ध है, उसी प्रकार नौ नाथ भी प्रसिद्ध हैं, मुझे इनके लिखे तिब्बती भाषा में अनुदित नौ ग्रन्थ अध्ययन करने को मिले थे, इनमें जहां तंत्र की बारीकियों को स्पष्ट किया है, वहीं स्वर्ण बनाने के बारे में भी इन ग्रन्थों में बहुत कुछ लिखा है।

इनके अनेक शिष्य प्रसिद्ध हुए जिनमें **शान्तिपाद**, **कण्हपाद**, **तंतिपाद** और **मछन्दरनाथ** विशेष प्रसिद्ध हुए।

मछन्दरनाथ इन सब शिष्यों में प्रमुख थे, ये कामरूप देश के किसी मछुआरे के यहां पैदा हुए थे, आगे चल कर इन्होंने **कौलमत** की स्थापना की, जो एक प्रकार से वाममार्ग ही है, इनके शिष्य **गोरखनाथ** अत्यन्त प्रसिद्ध हुए और उन्होंने इस वाममार्ग से वामाचार हटा दिया, ये नाथों के अत्यन्त प्रसिद्ध और अग्रगण्य सिद्ध थे।

जालन्धरनाथ के दूसरे शिष्य **शांतिपाद** बुद्ध ज्ञान और बौद्ध दर्शन के महापण्डित हुए, इनका ग्रन्थ **"पारद रत्नाकर"** अत्यन्त श्रेष्ठ और अद्वितीय ग्रन्थ है, जिसमें पारे से स्वर्ण बनाने की अत्यन्त सहज क्रियाएं हैं, बिना गुरु की सहायता के भी इस ग्रन्थ से अपढ़ व्यक्ति भी आसानी से स्वर्ण बना सकता है।

इनके दूसरे शिष्य **तंतिपाद** कोरी जाति के थे, इनका लिखा एक ग्रन्थ **"स्वर्ण पारद"** अपने आप में एक दुर्लभ ग्रंथ है, जो तिब्बत में अनुदित प्राप्त हुआ था पारद विज्ञान के बारे में इसमें लिखे हुए सूत्र अपने आप में श्रेष्ठ हैं, वास्तव में ही यदि जीवन में इस ग्रंथ का अध्ययन नहीं किया गया हो, तो एक प्रकार से जीवन व्यर्थ ही माना जाना चाहिए।

गोरखनाथ के एक शिष्य **करवाल भैरव** हुए, उन्होंने **भैरवी चक्र सम्प्रदाय** को प्रारम्भ किया, काश्मीर में इस सम्प्रदाय का विस्तार अत्यधिक हुआ, इन्होंने अपने ग्रंथ **"आनन्द मंगल"** में स्त्री के माध्यम से स्वर्ण बनाने की कुछ क्रियाओं को स्पष्ट किया है, जिसमें **"भैरवी साधना"**, **भैरवी पूजन"** और **"भोग भैरवी** क्रियाएं विशेष रूप से उल्लेखित हैं, ये सभी क्रियाएं वाम-मार्गी हैं, परन्तु मैंने इन क्रियाओं को निकटता से देखा और अनुभव किया है, और यह बात निश्चित है, कि इन क्रियाओं के माध्यम से **सौ** टंच खरा स्वर्ण बनाया जा सकता है, और यह स्वर्ण बनाने की क्रिया इतनी सरल है कि विश्वास नहीं होता कि मात्र भैरवी साधना से इतनी दुर्लभ धातु आसानी से तैयार हो सकती है, इन्होंने अपनी विद्या को अत्यधिक गुप्त रखा और एक शिष्य से दूसरे शिष्य को ही प्रदान की।

नाथसम्प्रदाय का उल्लेख मैं ऊपर कर चुका हूं, इन नौ नाथों में **मत्स्येन्द्र नाथ**, **महिनी नाथ** तथा **निवृत्तिनाथ** का नाम विशेष उल्लेखनीय है, निवृत्तिनाथ के ही शिष्य **ज्ञानेश्वर** हुए, जिन्होंने मराठी में **ज्ञानेश्वरी गीता** को टीका के रूप में प्रचलित किया, मुझे तिब्बती भाषा में भी ज्ञानेश्वरी टीका पढ़ने को मिली, जिसमें स्वर्ण बनाने से संबन्धित कई पद हैं, परन्तु हिन्दी में जो ज्ञानेश्वरी टीका प्रकाशित हुई है, उसमें ये छन्द नहीं हैं।

खोज करने पर पता चला कि जब ज्ञानेश्वरी टीका तैयार हुई तो **संत ज्ञानेश्वर** ने इस ग्रन्थ को अपने गुरु **निवृत्ति नाथ** को दिखाया, उन्होंने ग्रन्थ को पूरी तरह से पढ़ा और ये छन्द निकाल दिये, उन्होंने कहा कि यह पूरा का पूरा ग्रंथ अध्यात्म विषय पर है, और यदि जन मानस इन स्वर्ण से सम्बन्धित पदों को पढ़ेगा तो उन लोगों की भोग में प्रवृत्ति बढ़ जायेगी।

परन्तु तिब्बती भाषा में जो ज्ञानेश्वरी टीका पढ़ने को मिली है उसमें स्वर्ण से संबंधित ५६ पद हैं, और प्रत्येक पद अपने आप में स्वर्ण की सम्पूर्ण क्रिया है।

इन छन्दों में अधिकतर शब्द गूढ़ और विशेष अर्थ बोधक है, जिनमें नाग, नागिन, बिच्छू, सारी, मारी, धसा, मासा, कमठ, कड़ी, कीट, पुर, सूर्य, चन्द्र, आदि कई सांकेतिक शब्दों का प्रयोग किया है जिसके माध्यम से इनको समझा जा सकता है ।

मैं तिब्बत में पड़े हुए ज्ञानेश्वरी टीका के कुछ छन्द दे रहा हूं, जिससे पता चलता है, कि इन्होंने स्वर्ण से संबंधित समस्त क्रियाओं को सांकेतिक शब्दों में ही स्पष्ट की है—

परिमात्रे चे निवायै। दिव्यौषधि जैसे थेये ।
कथलाचे कीजे रूपे । रस भावने ।
जैसे कनकी तेज पाणी । मीठाते बांधी आणी ।
ते तुल्याची पेलवणी । रसान्तराची ।
जैसे रसौषधखरे । आपली काज क नी पुरे ।
शेखी आपण ही नुरे । तैसे होतसे ।
पितलेची गंधी कालीक। जे फिटली होय निश्शेष।
तरी सुवर्ण काय आणिक । जोडु जाईजे ।

———

दो राता दोय पीबला चंदा वर्णा चार ।
चपट रांदी खीचड़ी चेला भूख ना मार ।

———

तो रस गंधक मोरस पारा, जिन विष दोजे नाम सहारा ।
नाग मार मारले सूआ, कहे मच्छन्द कंचन हुआ ।

इसी प्रकार कई छोटी मोटी सूक्तियां नाथ सम्प्रदाय में प्रचलित थीं, जिसके माध्यम से स्वर्ण बनाने की क्रियाओं को स्पष्ट किया गया था ।

आगे चल कर जब कुछ ग्रन्थ लुप्त हो गये, तो लोगों ने कीमियागीरी के प्रयोग प्रारम्भ किये परन्तु जब उन्होंने देखा कि पारे को आग पर रखने से वह उड़ जाता है, तो उस पारे को मंत्रों के माध्यम से बांधने के प्रयोग प्रारम्भ किये इस प्रकार से **तंत्र शास्त्र में पारद विज्ञान** का समावेश हुआ, जिन तंत्रों से

पारद को बांधा जाता है, उसे **"रसांकुश विद्या"** कहा गया है, अर्थात् पारे पर अंकुश स्थापित करना, बौद्ध ग्रन्थों में अधिकतर इस प्रकार के मंत्र प्राप्त होते हैं, जिसके माध्यम से पारे को प्रामाणिकता के साथ बांधा जाता है, उसे ठोस बनाया जाता है, और तंत्र के माध्यम से ही उस पारे से स्वर्ण का निर्माण किया जाता है ।

नागार्जुन, भैरवानन्द, मासुकी, व्याडि, नागबोधि, स्वच्छन्द भैरव, आदि अनेक सिद्ध विद्वान हुए जिन्होंने बिना किसी उपकरण के, पारे को मात्र तंत्र के माध्यम से बांधा और उससे स्वर्ण का निर्माण किया, इन ग्रन्थों में रसार्णव तंत्र अत्यधिक प्रसिद्ध है, और अब यह ग्रन्थ उपलब्ध हो गया है, इसकी प्रत्येक पंक्ति अपने आप में अद्वितीय है, यदि इन छन्दों का प्रयोग किया जाय, इसमें बताई हुई विधि को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट की जाय तो निश्चय ही नागार्जुन के माध्यम से स्वर्ण बनाया जा सकता है ।

इन्हीं क्रियाओं में **"वट यक्षिणी तंत्र"** और "स्वर्ण किंकणी" अत्यधिक प्रसिद्ध है, **"रुद्रयामल तंत्र"** में इन दोनों साधनाओं को प्रामाणिकता के साथ दिया है, और मेरा प्रत्यक्ष और प्रामाणिक अनुभव रहा है, कि इस प्रकार के तंत्र को सिद्ध करने पर निश्चय ही यक्षिणी सामने प्रत्यक्ष प्रगट होती है, और उसके माध्यम से जितना भी चाहे, स्वर्ण प्राप्त किया जा सकता है, "रुद्रयामल तंत्र" पिछले पांच हजार वर्षों में सबसे श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें चौंसठ यक्षिणियों और भैरवियों को सिद्ध करने की क्रिया है, किसी बालिका को या नवोढ़ा को अप्सरा रूप में पूजन कर, यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो मात्र एक दिन में ही यक्षिणी सिद्ध हो जाती है, और जीवन भर बेतहाशा धन और स्वर्ण प्रदान करती रहती है ।

आगे चल कर तो इससे संबंधित तंत्र शास्त्र अत्यधिक प्रचलित हुए, और इस संबंध में कई तंत्र वेत्ता प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने तंत्र के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये, **"आनन्दकंद"** ग्रन्थ आज भी इस क्षेत्र में अत्यधिक प्रसिद्ध है ।

जैन ग्रन्थों में भी कई प्रयोग पढ़ने को मिलते हैं, जिसमें रसायन विद्या को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया गया है, **दसवेकालिक सूत्र, श्रीपद्मचरित्र, श्रुतकेवली, भद्रबाहु कृत, "निज्जुति", पादलिप्तसूरि कृत, "वीर स्तुति"** में रसायन विद्या के बारे में बहुत अधिक पढ़ने को मिलता है, और इन ग्रन्थों में पारद से स्वर्ण बनाने की क्रियाओं का भण्डार है ।

इन ग्रंथों में **समंतभद्र** द्वारा लिखित **"सिद्धान्त रसायन तंत्र"** अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसे प्रामाणिकता के साथ अध्ययन करने का अवसर मुझे मिला है, इसमें स्वर्ण बनाने की लगभग छः सौ पद्धतियां स्पष्ट हैं, यद्यपि इनकी कई पद्धतियां कसौटी पर खरी नहीं उतरी हैं, परन्तु फिर भी कुछ ऐसे सूत्र भी हैं जिनका प्रयोग करने पर पारद से स्वर्ण का निर्माण प्रामाणिकता के साथ होता है।

मुगल काल में भी रसायन विद्या का जोर रहा, इस युग में **कालनाथ** के शिष्य **ढुंढुकनाथ** ने **"रसेन्द्र चिमणी"** नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें कूट भाषा में रसायन विद्या को समझाया है।

अबकन चपला चंचल नार, तामे दीजे तीनों खार।
टब्बू पैसा रत्ती खाय, भिश्ती बनकर अकबर पाय॥

सम्राट **अकबर** को रसायन विद्या का बहुत शौक था, उसने किसी कीमियागीर तांत्रिक को बन्दी बना लिया था और रात्रि को उसकी सेवा करने के बहाने बन्दीगृह में पहुंच जाता और इस प्रकार सेवा कर उससे स्वर्ण बनाने की क्रिया प्राप्त की, उसी स्वर्ण से **अकबरी मोहर** प्रचलित हुई, **अकबरी मोहर** में जो स्वर्ण प्रयोग किया गया है, वह सामान्य स्वर्ण से ज्यादा महत्वपूर्ण है, और अपने रसायनिक गुणों के कारण आज भी जब आसानी से प्रसव नहीं होता, तो अकबरी मोहर को धो कर उसका जल स्त्री को पिलाते ही सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है।

इसी समय **आसफुद्दौला रंगीले नवाब** हुए जिनके बारे में उक्ति प्रसिद्ध है, कि **"जिनको न दे मौला, उसको दे आसफुद्दौला"** अर्थात् आसफुद्दौला कभी भी किसी फकीर को निराश नहीं करते थे, और नित्य हजारों स्वर्ण मुद्राएं गरीबों में बांट देते थे।

इस काल में एक प्रसिद्ध सिद्ध पूरे भारतवर्ष में विख्यात हुए, जिनका नाम शिववीर्य था, इनके ग्रन्थ का नाम भी **शिववीर्य** ही है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है, बड़ी कठिनाई से अब जाकर यह ग्रंथ प्राप्त हो सका है।

शिववीर्य ने सर्वथा एक नवीन पद्धति से स्वर्ण का निर्माण किया, जो अत्यन्त सरल और अपेक्षाकृत आसान है, उसने **तंत्र और भोग** के माध्यम से पारद से स्वर्ण बना कर दिखा दिया, इन्होंने अपने ग्रन्थ में **कांकिणी सिद्धि** स्पष्ट की और बताया कि केवल एक सुन्दरी का **कांकिणी प्रयोग** से पूजन किया जाय, और फिर मंत्र जप किया जाय तो सामने रखा हुआ लोहा स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है, अपने ग्रन्थ में इन्होंने कांकिणी साधना के लिए जिस स्त्री का प्रयोग बताया है, उसका वर्णन इस प्रकार से किया है—

यस्यास्तु कुंचिता केशा श्यामा या पद्मलोचना।
सुरूपा तरुणी भिन्ना विस्तीर्ण जघना शुभा।
संकीर्ण हृदया पीन स्तन भारेण नम्रिता।
चुम्बनालिंगना स्पर्श कोमला मृदुभाषिणी।
अश्वत्थ पत्र सदृशं योनि देश सुशोभिता।
कृष्ण पक्षे पुष्पवती सा नारी काकिणीमता।
रसबन्धे प्रयोगे च उत्तमा सा रसायने।

ग्रन्थ में बताया है, कि यदि ऐसी स्त्री न मिले तो, किसी तरुणी को अपने सामने बिठा कर उसका पूजन करे और सामने कई किलो लोहा रख दें, फिर तंत्र का प्रयोग करें, और ज्यों ही **काकिणी तंत्र** प्रयोग समाप्त होता है, उस सुन्दरी की दृष्टि से वह लोहा सोने में बदल जाता है।

यह अपने आप में आश्चर्यजनक प्रयोग था, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर पूर्ण प्रामाणिक अनुभव हुआ, यह आश्चर्य की बात है, कि इस साधना से उस स्त्री की आंखों में कुछ ऐसा आश्चर्यजनक प्रभाव पैदा हो जाता है, कि वह ज्यों ही लोहे पर दृष्टि डालती है वह तुरन्त सोने में परिवर्तित हो जाता है, यही नहीं अपितु इस प्रयोग से वह सामने बैठी हुई तरुणी भी अत्यधिक सुन्दर आकर्षक और कामोत्तेजक बन जाती है, और वह जिस पुरुष पर भी दृष्टि डालती है उसमें तूफान पैदा कर देती है।

इस प्रयोग को कई बार सम्पन्न किया है और हर बार यह प्रयोग प्रामाणिक और खरा उतरा है, यह प्रयोग सरल है और अपने आप में विशिष्ट है।

इसके अलावा भी मुगल काल में अन्य कई छोटे मोटे व्यक्ति हुए जिन्होंने अपने ग्रन्थों में स्वर्ण बनाने की क्रियाएं स्पष्ट की, परन्तु ये ग्रन्थ अपने आप में कोई विशेष महत्वपूर्ण नहीं हैं ।

अंग्रेजों ने ऐसे कई योगियों को पकड़ा, जिनको कीमियागीरी का ज्ञान था, और उन्होंने जब देखा कि पारे से स्वर्ण बनाया जा सकता है, तो उन्होंने कई योगियों को बाध्य किया कि वे इस प्रयोग को सम्पन्न करके बताएं, परन्तु जब उन्होंने इन्कार कर दिया, तो अंग्रेजों ने उन्हें मरवा दिया, इस प्रकार एक बार तो इन फिरंगियों ने १०४ योगियों को एक साथ मरवा दिया था ।

परन्तु यह विद्या प्रकट रूप में अथवा गुप्त रूप में बराबर प्रचलित रही, और आधुनिक काल में भी ऐसे कई साधुओं और योगियों का उल्लेख मिलता है जिन्हें यह विद्या ज्ञात है ।

सन १९३३ में **स्वामी श्यामगिरि सन्यासी** अत्यन्त प्रसिद्ध हुए, जो आयुर्वेद के बहुत अच्छे जानकार थे, लाहौर में उन्होंने **रायबहादुर रामशरणदास** को लगभग दस सेर सोना कुछ ही मिनटों में बनाकर यह सिद्ध कर दिया था कि यह विद्या अभी तक भी जीवित है, इसका विवरण तत्कालीन अंग्रेज गवर्नर ने अपनी टिप्पणी और गजट में भी किया है ।

२६ मई १९४० को **कृष्णपाल शर्मा** नामक पंजाब के रसाचार्य ने दिल्ली स्थित **बिड़ला हाउस** में पारे को सोने में बदल कर बता दिया था, उस समय उनके पास **श्री युगलकिशोर बिड़ला**, **श्री वियोगी हरी**, **स्वामी गणेश दत्त**, बिड़ला मिल के सेक्रेटरी **श्री सीताराम खेमका** आदि उपस्थित थे ।

इस घटना का शिला लेख आज भी दिल्ली स्थित बिड़ला मन्दिर में लगा हुआ है, जिससे पता चलता है, कि उन्होंने प्रामाणिकता के साथ पारे से स्वर्ण बना कर यह स्पष्ट कर दिया था कि यह विद्या अपने आप में पूर्ण और खरी है ।

उन्हीं दिनों **खारी बावली दिल्ली** में **गोरधन दास जी रसाचार्य** का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ, जिन्हें पारद विज्ञान का पूर्ण रूप से ज्ञान था, उन्होंने लगभग एक हजार लोगों की भीड़ में पारद से लगभग आधे घण्टे में ही स्वर्ण बना कर बता दिया था, उसी सोने से दिल्ली में एक प्रसिद्ध मन्दिर में पंच पात्र

और आचमनी बनाई, जो आज भी मन्दिर के भण्डार में सुरक्षित है, तत्कालीन **अंग्रेज राय बहादुर मि० यूटर्ज** आदि दिल्ली के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे ।

१९४२ में **पंजाब के कृष्ण पाल शर्मा** ने ऋषिकेश में महात्मा गांधी उनके **सचिव श्री महादेव देसाई**, **श्री युगल किशोर** बिड़ला आदि की उपस्थिति में मात्र ४५ मिनट में दो सौ तोला पारद को **स्वर्ण** बना कर सबके सामने प्रत्यक्ष कर दिया, जो उस समय पचहत्तर हजार रुपये में बिका, इस धनराशि को दान में दे दिया गया ।

इस घटना का उल्लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान के ६ नवम्बर ८३ के अंक में भी है ।

उन्हीं दिनों **पंजाब** में ही **आचार्य हरीराम** अत्यन्त प्रसिद्ध पारद विज्ञानी हुए, जिन्होंने तालाब के पास उगने वाली घास "तूमा" को घोट कर उसके माध्यम से पारद को पकाया और स्वर्ण बना कर दिखा दिया, उन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों बार इस प्रकार से स्वर्ण बनाया और उसे गरीबों में बांट दिया, वे अपने जमाने में आधुनिक कर्ण माने जाते थे ।

इन्हीं दिनों एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई, एक **नागा साधु** काशी के बाबा विश्वनाथ मन्दिर के बाहर अवधूत की तरह नंगा सा पड़ा रहता था, और बीच बीच में **"बाबा-ओ-बाबा"** चिल्लाता रहता था, कुछ लोगों ने उसे जबरदस्ती उठा कर गंगा के किनारे डाल दिया, तो दूसरे दिन वह फिर विश्वनाथ के मन्दिर के पास बैठ गया ।

इस प्रकार जब प्रयत्न करने पर भी वह विश्वनाथ के मन्दिर से नहीं हटा तो लोगों ने जबरदस्ती करनी प्रारम्भ की, परन्तु वह टस से मस नहीं हुआ ।

तभी शिवरात्रि आ गई, और दूर दूर से लोग आ-आ कर बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए उपस्थित होने लगे, लोग आते और श्रद्धा पूर्वक जो कुछ भी अपने पास भेंट होती, वह चढ़ा देते ।

कुछ लोगों ने उस नंगे अवधूत को चिढ़ाने के लिए कहा, कि आज शिवरात्रि है, तुम बाबा विश्वनाथ को क्या भेंट चढ़ाओगे, उस समय राजघराने के कुछ व्यक्ति भी उपस्थित थे, जिन्होंने उस नंगे अवधूत के बारे में सुन रखा था।

उसने एक नजर उपस्थित भीड़ पर डाली, फिर अपनी गन्दी सी झोली में से एक छोटी सी डिबिया निकाली, और भगवान विश्वनाथ के मन्दिर के दो सौ मन वजन के बाहर के लोहे के दरवाजों पर आ कर खड़ा हो गया।

इसके बाद उसने डिबिया में से थोड़ा सा भूरे रंग का पाउडर अपनी उंगली पर लिया और उन लोहे के दरवाजों पर थोड़ा थोड़ा लगाया।

और धीरे धीरे उपस्थित सभी लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा, कि वे लोहे के भारी भरकम दरवाजे उस पाउडर की वजह से स्वर्ण में परिवर्तित हो गये हैं, उस समय अंग्रेज गवर्नर मि० अलग्नि भी उपस्थित थे।

इस घटना का विवरण तत्कालीन राजकीय गजट में और राजघराने के प्रपत्र में भी प्रकाशित हुआ था; और उस नागा साधु के फोटो दूसरे दिन अखबारों में विशेष रूप से प्रकाशित हुए थे।

बाद में मालुम पड़ा कि डिबिया में रखा हुआ पाउडर "सिद्ध सूत" था, जिसकी एक चुटकी भर प्रयोग से दो सौ मन वजन के वे लोहे के किवाड़ सोने में परिवर्तित हो गये थे, पर इस घटना के आधे घण्टे बाद वह नागा साधु लुप्त हो गया था, बाद में उसे काफी ढूंढने का प्रयास भी किया गया, पर वह कहीं पर भी नहीं मिला।

उन किवाड़ों को अंग्रेजों ने सावधानी से उतार कर लन्दन भिजवा दिया था, जो आज भी वहां के म्यूजियम में सुरक्षित है।

इससे पहले वाराणसी में ही **महामना मदन मोहन मालवीय** जब विश्व-विद्यालय के लिए दान एकत्र कर रहे थे, तब उनके सामने **हिमाचल प्रदेश** के **हरिकृष्ण वशिष्ठ** उपस्थित हुए थे, जो कि उस समय प्रसिद्ध वैद्य माने जाते थे।

उन्होंने मदन मोहन मालवीय के सामने ही पारा मंगवाया, और विशेष तरीके से आंच दे कर उसे मात्र आधे घण्टे में ही स्वर्ण बना कर बता दिया, लगभग साढ़े तीन सौ तोला स्वर्ण उसी समय हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए दान में दे दिया, मालवीय जी ने स्वयं कहा था, कि पारद विज्ञान आज भी प्रामाणिकता के साथ जीवित है, और मैंने स्वयं अपनी आंखों से श्री हरीकृष्ण वशिष्ठ के द्वारा इस क्रिया को देखा है।

उन्हीं दिनों गुजरात में भी एक आचार्य अत्यन्त प्रसिद्ध हो गए थे, जिनका नाम **ए०पी० पटेल** था, "**धनवन्तरी**" नामक प्रसिद्ध पत्रिका के १९७२ "प्राणिज विशेषांक" में इसका विवरण आया है।

वैद्यराज ने कई लोगों के सामने और उस समय के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में पारे पर लगभग दो दिन प्रयोग किया, और उस पारे को स्वर्ण में परिवर्तित कर दिखा दिया, उस समय अहमदाबाद में बहुत बड़ी भीड़ इस घटना को देखने के लिए उपस्थित हो गई थी।

अहमदाबाद में ही एक प्रसिद्ध वैद्य **रामजी भाई पटेल** उन दिनों काफी अधिक चर्चित थे, उन्होंने वैद्यक पर कई ग्रंथ भी लिखे हैं, उन्हें पारद सिद्ध था, और अपने जीवन में कई बार पारे से स्वर्ण बना कर दिखा दिया था।

पूछने पर उन्होंने बताया कि पारद से स्वर्ण बनाने की छः प्रकार की क्रियाएं ज्ञात हैं, और इनमें से किसी भी क्रिया से मैं पारद से स्वर्ण बना सकता हूं।

१९४३ में उन्होंने हजारों लोगों की उपस्थिति में कमर पर मात्र छोटा सा गमछा बांध कर पारद से स्वर्ण बना कर गरीबों में वितरित कर दिया था, यह सब उन्होंने इसलिए किया था, कि जिससे लोगों को यह विश्वास हो सके, कि यह कोई हाथ की सफाई नहीं है, और न उन्होंने अपने कपड़ों में कहीं पर स्वर्ण छिपा कर रखा है, उस समय गुजरात की महत्वपूर्ण संस्थाओं ने उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया था।

सन् १९४५ में पारद विज्ञान के क्षेत्र में **सिद्धनाथ** का बहुत बड़ा नाम

था, वे मूलतः जैन थे, और आबू की पहाड़ियों में अधिकतर विचरण करते रहते थे, इन्हें " रसेश्वरी " सिद्ध थी, और इस सिद्धि के माध्यम से वे धतूरे से स्वर्ण बना कर दिखा देते थे, पारद और धतूरे को परस्पर मिला कर उसके रस से तांबे पर प्रयोग कर उस तांबे को उन्होंने कई बार स्वर्ण में परिवर्तित कर के लोगों को दिखाया था।

उन्होंने एक छोटी सी पुस्तिका भी लिखी है, जिसका नाम " रसेश्वरी साधना " है, यह पुस्तिका अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिसमें बताया गया है, कि रसेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, और इसके बाद यदि तांबे पर इस मन्त्र का प्रयोग कर फूंक दी जाय, तो वह तांबा स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

यह पुस्तिका बड़ी कठिनाई से मुझे प्राप्त हुई थी, उसमें रसेश्वरी का वर्णन इस प्रकार है —

ॐ अस्य श्री रसेश्वरी मन्त्रस्य महादेवः ऋषिः पंक्तिश्छन्दः
श्री रसेश्वरी पार्वतीदेवा, रसकर्म सिद्धये जपे विनियोगः ।

इसके बाद ध्यान का विवरण इस प्रकार है —

अष्टादश भुजंशभुं पंचवक्रं त्रिलोचनम्
प्रेतारूढ़ं नीलकण्ठ ध्यायेद्वामे च पार्वतीम्
चतुर्भुजामेकवक्त्रामक्षमालां कुशे तथा
वामेपांशा मये चैव दधती तप्त हेमभाम् ।
पीतवस्त्रां महादेवी नानाभूषण भूषितां
रसेश्वरी शंभु युतां रस सिद्धि प्रदां भजे ।
वाणीस्मरपुनर्वाणी लज्जावाणी रितोमतः
पंचाक्षरो रसेश्वर्याः सर्वसिद्धिप्रदायकः ।

इसके बाद इस पुस्तक में बताया गया है, कि धतूरे के बीजों की माला बना कर उस माला से निम्न मन्त्र का पूर्ण जप करें, मन्त्र का विवरण इस प्रकार दिया है —

ॐ ह्रौ ह्रीं ह्रूं अष्टोत्तर परा फुट-फुट प्रकट कुरु-कुरु
शमय शमय जात जात दह दह पानय पानय ॐ ह्रीं
ह्रैं ह्रैं ह्रूं - अघ्ये ताय फट् ।।

बाद में प्रयोग करने पर ऐसा अनुभव हुआ, कि यह प्रयोग कुछ अधूरा सा है, या इस पुस्तक में ढंग से इसका विवरण नहीं दिया है, परन्तु फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं, कि रसेश्वरी प्रयोग से मात्र धतूरे के रस में पारद घोटने से वह स्वर्ण बन जाता है, इस प्रयोग में कोई न्यूनता नहीं है, इस प्रयोग में यह आवश्यक है, कि सामने किसी बालिका को रसेश्वरी मान कर उसका पूर्ण पूजन किया जाता है, और उसके सामने ही यदि इस मन्त्र का जप किया जाय, तो निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है।

उन्हीं दिनों महाराष्ट्र में एक महत्वपूर्ण आचार्य प्रसिद्ध हुए, सन् १९४५ और इसके आस पास उनका नाम पूरे भारतवर्ष में विख्यात था, उन्हें पारद के बारे में दुर्लभ ज्ञान था, और पारद के १८ संस्कारों के बारे में उन्हें पूरी पूरी जानकारी थी, उन्होंने अपने जीवन में कई बार पारद से स्वर्ण प्रयोग करके दिखा दिया था, उनकी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तक " दिव्यौषधि " प्राप्त हुई है, जिसमें इस आचार्य ने अपने जीवन के अनुभवों को पूर्ण रूप से प्रकाशित किया है।

इन्होंने बताया है, कि निम्न चौसठ औषधियां हैं, जो कि भारतवर्ष में आसानी से प्राप्त हो जाती हैं, इन दिव्यौषधियों के माध्यम से सैकड़ों मन स्वर्ण बनाया जा सकता है, इस पुस्तक में उन्होंने इस प्रकार के विविध प्रयोग भी दिये हैं, और जब इन प्रयोगों को सम्पन्न किया गया, तो ये सभी प्रयोग पूर्ण रूप से प्रामाणिक अनुभव हुए हैं।

उनके अनुसार निम्न दिव्यौषधियां हैं —

१- सोमवल्ली, २- जलपद्मिनी, ३- अदगरी, ४- गोनसी, ५- त्रिजटा, ६-ईश्वरी, ७- भूतकेशी, ८- कृशवल्ली, ९- रुद्रवन्ती, १०- सवैरा, ११- वराहीकन्द, १२- अश्वत्थपत्री, १३- अम्ल पत्री, १४- चकोरना, १५- अशोकनाम्नी, १६- मुन्नागपत्रिका, १७- नागिनी, १८- क्षोमी, १९- संवरा, २०- देवीलता, २१- वज्रवल्ली, २२- चित्रक, २३- कालपर्णी, २४- निलोत्पली, २५- रजनी,

२६- पलास्तिलका, २७- सिंहिका, २८- गोखंगी, २९- खदिरपत्री, ३०- तृणज्योत, ३१- रक्तवल्ली, ३२- ब्रह्मदण्डी, ३३- मधुतृष्णा, ३४- गन्धानुधा, ३५- हेमदण्डी, ३६- विजया, ३७- अजया, ३८- ऊष्मा, ३९- तली. ४०- श्री नाम्नी, ४१- कीटमारी, ४२- तुम्बिका, ४३- कटुतुम्बी, ४४- मयूरशिखा, ४५- पीतक्षीरा, ४६- आसुरी, ४७- रासपर्णी, ४८- गोमाका, ४९- व्याघ्रपादलता, ५०- धनुर्वल्ली, ५१- त्रिशूल, ५२- त्रिदण्ड, ५३- श्रृंगा, ५४- वज्रनामवल्ली, ५५- महावल्ली, ५६- खन्दवती, ५७- बिल्वदला, ५८- रोहिणी, ५९- बिल्वतंकी, ६०- गोरोवना, ६१- कन्दपत्रिका, ६२- विशल्या, ६३- कन्दक्षीरी, ६४- हिमाभा ।

उपरोक्त सभी दिव्योषधियां भारतवर्ष में आसानी से प्राप्त हो जाती हैं, और इनके अनुसार इनमें से किसी भी दिव्योषधि में पारद का मर्दन किया जाय, और उसे तांबे पर डाला जाय, तो वह निश्चय ही स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है ।

सन् १९४९ के आस पास पूरे भारतवर्ष में हरी बाबा की बड़ी धूम थी, और वे हरिद्वार के पास नंग धड़ंग अवस्था में पड़े मिलते थे, उन्हें पारद सिद्धि थी, और वे नित्य अपने भोजन में एक तोला पारा खा लेते थे, जिसके कारण इनका सारा शरीर तांबे की तरह लाल और अत्यन्त मजबूत हो गया था, यदि वे कन्धे से टक्कर मारते, तो मोटा पेड़ भी जड़ से उखड़ कर गिर जाता था ।

१९४९ में उन्होंने तत्कालीन **राय बहादुर दीवानचन्द जी** के सामने एक विशिष्ट प्रयोग करके दिखाया, और लगभग आधा किलो तांबा का टुकड़ा मंगा कर उस पर पेशाब करके उसे स्वर्ण में परिवर्तित करके दिखा दिया था ।

इसका कारण यह था, कि पिछले २५ वर्षों में निरन्तर पारद भक्षण से उनके शरीर में विशेष रासायनिक क्रिया हो गई थी, जिसके फलस्वरूप ऐसा सम्भव हो सका, उस समय लगभग सभी पत्रों में इस घटना की चर्चा रही, और अंग्रेज गवर्नर एन्ड्रीज ने उन्हें विशेष सम्मान दे कर बुलाया था, पर वे नहीं गये, और कहा कि गंगा नदी का किनारा ही मेरा सम्मान है ।

अप्रैल १९७५ में गुजरात में तत्कालीन राजस्व मन्त्री के सामने **प्रेमजी भाई ठाकुर**

ने पारद से स्वर्ण बना कर यह सिद्ध कर दिया था, कि आज भी पारद विज्ञान अपने आप में पूर्ण है, और इसके माध्यम से प्रामाणिक स्वर्ण बनाया जा सकता है ।

१९७८ में हिमाचल की योगिनी **राजल** की बड़ी चर्चा रही, जो कि पूर्ण रूप से स्वयं अपने आप में "रसेश्वरी" थी, उसने अपने जीवन में कई बार तांबे को स्वर्ण बना कर दिखा दिया था, उस समय के वन मन्त्री के सामने उसने मात्र आधे घण्टे में पारद से स्वर्ण का निर्माण कर यह सिद्ध कर दिया था, कि, पारद विज्ञान के माध्यम से प्रामाणिक रूप से स्वर्ण बनाया जा सकता है ।

राजल स्वयं अत्यन्त सुन्दरी और आकर्षक योगिनी थी, और नित्य थोड़ा सा पारद अपने भोजन में ग्रहण करती थी, जिसके फलस्वरूप उसका शरीर अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक हो गया था ।

बातचीत के प्रसंग में उसने बताया था, कि बचपन में वह अत्यन्त कुरूप और असुन्दर थी, जिसके फलस्वरूप माता पिता ने उसे घर से निकाल दिया था, उस समय उसकी आयु १७ वर्ष के लगभग थी, और उसका विवाह न हो पाने की वजह से घर के लोग दुखी और परेशान हो गये थे ।

उन्हीं दिनों हिमाचल स्थित व्यास नदी के किनारे एक योगी से उसके माता पिता की भेंट हुई और योगी ने लगभग चार महीने उसके माता पिता के यहां ही डेरा जमाया और राजल को रसेश्वरी दीक्षा दी, तथा विशेष रूप से सिद्ध किये हुए पारद के ग्रास राजल को दिये, फलस्वरूप राजल अत्यन्त सुन्दर, आकर्षक और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा बन गई, उसके सौन्दर्य की चर्चा पूरे हिमाचल में फैल गई थी, और अच्छे से अच्छे युवक उससे शादी करने को लालायित थे, परन्तु उसे अपने कटु अनुभव भली प्रकार से स्मरण थे, अतः उसने सबको फटकार कर बाहर निकाल दिया ।

उस योगी से ही उसने पारद विज्ञान और स्वर्ण विज्ञान का ज्ञान प्राप्त किया था, और उसने कई बार पारद से स्वर्ण बना कर दिखा दिया था, पर इसके बाद वह योगिनी बन गई, और उसका जीवन साधना में ही व्यतीत होने लगा ।

दिसम्बर १९८२ में कई पत्रकारों के सामने वाराणसी के गोपाल जी ने

पारे को ठोस रूप देने का प्रदर्शन किया, और उसी पारद को स्वर्ण बना कर दिखा दिया, जनवरी ८३ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में इसका विवरण प्रकाशित हुआ है।

वस्तुतः आज भी पारद विज्ञान अपने आप में पूर्णता के साथ भारतवर्ष में प्रचलित है, मैंने इस अध्याय में लिखे हुए सभी ग्रंथों का अध्ययन किया है, और जिन व्यक्तियों का उल्लेख ऊपर किया है, ये सभी मुझे मिले हैं, और मेरे सामने पारद से स्वर्ण बना कर यह प्रमाण देने का प्रयास किया है, कि उन्हें पारद का ज्ञान है।

आज भी भारतवर्ष में कई पारद विज्ञानी प्रसिद्ध हैं, जिनमें बंगाल के **प्रफुल्ल राय, गुजरात के यादव जी आचार्य, बम्बई के विष्णु तीर्थ महाराज, गुजरात के यशवन्त भाई पटेल, हैदराबाद के स्वामी हरीप्रपन्न जी,** पंजाब के **वैद्य विश्वेश्वर दयाल, दिल्ली के श्री बद्रीनारायण जी शास्त्री,** हरीद्वार में रहने वाले **श्री इन्द्रदेव त्रिपाठी और श्रीनगर के श्री सिद्धिनन्दन जी** प्रामाणिक विद्वान हैं, जिन्हें पारद के माध्यम से स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया का पूरा पूरा ज्ञान है।

आवश्यकता है, कमंठ और पूर्ण रूप से समर्पित व्यक्तित्व की, जो रसायन के क्षेत्र में पूर्णता के साथ काम करे, तो पारद से स्वर्ण बनाना कोई कठिन क्रिया नहीं है, यह तो अत्यन्त सरल, सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है।

गुरु सेवा प्रदातव्यं पारदं सिद्धि वैभवः ।
क्षणी जीवन साफल्यं यश कीर्तिर्धनं प्रियः ॥

मात्र गुरु सेवा, और पूर्णता के साथ गुरु सेवा करने से ही "पारद सिद्धि" प्राप्त हो जाती है, और जब पारद से स्वर्ण बनाने की सिद्धि मिल जाती है, तो उस दरिद्री व्यक्ति का भी जीवन एक क्षण में ही सम्पन्न और सफल हो जाता है, वह जीवन भर यश कीर्ति, धन और यौवन प्राप्त कर विख्यात व्यक्तित्व बन जाता है।

निखिलेश्वरानन्द

परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी का स्मरण करते ही एक ऐसा उदात्त और भव्य व्यक्तित्व आंखों के सामने आ कर खड़ा हो जाता है, जो अपने आप में दुर्धर्ष, तेजस्वी और प्रखर है, जो केवल एक विषय में ही नहीं, अपितु विश्व के महत्वपूर्ण विषयों और साधनाओं में अप्रतिम और अद्वितीय है, जिन्होंने सन्यास जीवन को भव्य तरीके से जिया है, जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण अपने आप में मूल्यवान और गहरी अर्थवत्ता लिये हुए है, जो साधनाओं के क्षेत्र में अजेय और अद्वितीय हैं, तो तन्त्र के क्षेत्र में भी सम्पूर्ण भारतवर्ष उनके सामने नतमस्तक है, ज्योतिष के क्षेत्र में उन्हें **"वराह मिहिर"** कहा जाता है, तो आयुर्वेद के क्षेत्र में उन्हें सम्पूर्ण रूप से **"धनवन्तरी"** की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

जिन लोगों ने भी इस व्यक्तित्व को निकटता से देखा है, उन्होंने यह अनुभव किया है, कि यह कोई सामान्य मानव नहीं, अपितु कोई **दिव्यात्मा या देवात्मा** मानव शरीर को धारण कर पृथ्वी पर उतर आई है, अन्यथा एक व्यक्ति में इतने अधिक गुणों, साधनाओं और सिद्धियों का समावेश सम्भव नहीं, उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में भारतवर्ष में पाये जाने वाले विविध पौधों और लुप्त दिव्यौषधियों को ढूंढ़ कर क्रांतिकारी काम किया है, तो **मंत्र शास्त्र** के क्षेत्र में सर्वथा नवीन मन्त्रों की रचना कर सही रूप में **"मंत्रसृष्टा"** के रूप में हिमालय में परिचित हुए हैं, जिन्होंने तन्त्र की गोपनीय और उन साधनाओं को साकार किया है, जो सर्वथा लोप हो गई थी, और भारतवर्ष यह मान चुका था, कि वैदिक काल और महाभारत काल के बारे में जो कुछ हम पढ़ते हैं, वह वर्तमान में सम्भव नहीं, परन्तु स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने उन विविध साधनाओं और दिव्यास्त्रों को लोगों के सामने प्रत्यक्ष कर यह स्पष्ट कर दिया, कि वास्तव में ही वर्तमान युग में उनकी समानता की ही नहीं जा सकती।

भगवत्पाद शंकराचार्य निश्चय ही विविध साधनाओं में अद्वितीय थे, परन्तु उनकी सीमा थी, इसके विपरीत स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने उन सीमाओं को लांघ कर उन आयामों को भी ढूंढा है, उन सिद्धियों को भी विश्व के सामने रखा है, जो अलौकिक है, अद्वितीय है।

पारद विज्ञान के क्षेत्र में आज भारत वर्ष में उनका स्थान सर्वोच्च एवं सर्वोपरि है, जिनकी समानता या उस स्तर तक पहुंचने में अन्य पारद विज्ञानियों को अथवा योगियों को अभी सौ साल लगेंगे, उन्होंने पारद विज्ञान के उन आयामों को भी ढूंढ निकाला है जो सर्वथा लुप्त हो गये थे, जिनके विवरण – वर्णन प्राचीन ग्रंथों में तो प्राप्त होते थे, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से उन्हें सम्पन्न करना सम्भव नहीं रहा था, पारद के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को अनुकूल बनाने की क्रिया और असंभव को संभव कर देने का साहस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी ने ही किया है।

वर्तमान में पारद विज्ञान को कठिन मानकर लोगों ने इसमें रुचि लेना ही बन्द कर दिया था, इसका कारण यह था कि पारद विज्ञान के क्षेत्र में जो शोध होनी चाहिए थी, वास्तविक रूप से जिस प्रकार से पारद विज्ञान को स्पष्ट करना चाहिए था वह सम्भव नहीं रहा, पारद विज्ञान के बारे में नागार्जुन आदि के ग्रन्थों में जो कुछ लिखा हुआ था, उसे कार्य रूप में परिणित करना असम्भव माना जाने लगा था।

इसका मूल कारण यह था कि यह अपने आप में जटिल और कठिन क्रिया है, इसे समझने के लिए अत्यन्त श्रम साहस और धैर्य की जरूरत है, इसके लिए जरूरत है पारद को भली प्रकार से समझने की, उसके अन्तर में प्रवेश करने की और प्राचीन काल में इस सम्बन्ध में जितने भी ग्रंथ लिखे गये हैं उनको भली प्रकार से आत्मसात करने की।

और फिर इन ग्रन्थों में भी इस विषय को अत्यन्त गूढ़ और दुरूह बना दिया है, ऋषियों ने इस सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखा है वह सूत्र रूप में स्पष्ट किया है जिनकी व्याख्या कोई उदात्त व्यक्तित्व ही कर सकता है, नागार्जुन आदि ग्रन्थों में इस विषय को गहराई के साथ स्पष्ट नहीं किया गया है, यह तभी सम्भव हो सकता था, जब कोई व्यक्तित्व सही अर्थों में ऋषि हो, जो उन सिद्धियों को प्राप्त कर चुका हो, जिसके माध्यम से सूक्ष्म प्राण तत्व प्राप्त कर प्रकृति से

इससे सम्बन्धित रहस्यों को स्पष्ट कर सके, उन ऋषियों के प्राणों से सम्बन्ध स्थापित कर सके और उनके सूत्रों की व्याख्या भली प्रकार से सम्पन्न कर सके, पर नागार्जुन के बाद ऐसा संभव नहीं रहा, और प्रभृति विद्वानों और योगियों ने यह मान लिया कि पारद विज्ञान का अधिकांश भाग और साहित्य लुप्त हो गया है, और इससे सम्बन्धित जो कुछ भी विवरण और तथ्य पढ़ने या सुनने को मिलते हैं, वे केवल पोथियों की शोभा ही हैं।

स्वामी निखिलेश्वरानंद जी ने इस कमी को अनुभव किया, इस चुनौती को गंभीरता से स्वीकार किया, और पारद विज्ञान से सम्बन्धित उन लुप्त क्रियाओं, तथ्यों और विवरणों को प्रामाणिक रूप से वर्तमान विश्व के सामने रखने का बीड़ा उठाया, यद्यपि यह कार्य अत्यन्त कष्ट साध्य था, यद्यपि इस कार्य में चुनौती और बाधाएं थीं, परन्तु जिस व्यक्तित्व ने हमेशा चुनौतियों को हंस कर के झेला है, जिनका अवतरण ही प्राचीन लुप्त विद्याओं को पुनर्स्थापित करना है, वे इन बाधाओं से विचलित नहीं होते, और उन्होंने पारद विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त किया वह अपने आप में अद्वितीय है, वस्तुतः अगले पांच हजार वर्षों तक इस क्षेत्र में उनकी कोई समानता नहीं कर सकेगा।

पारद के बारे में उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान है, पारद कार्य अपने आप में जटिल और पेचीदा है, पर उन्होंने इस जटिल विद्या को अत्यन्त सरल और सहज भाव से अपने शिष्यों के सामने रखा है, और अपने जीवन में इस प्रकार के सन्यासी शिष्य तैयार किये हैं, जो पारद के क्षेत्र में अपने आप में सम्पूर्ण और अद्वितीय हैं, उन्होंने पारद के प्रारम्भिक ज्ञान से लगाकर स्वर्ण बनाने तक की प्रक्रिया और उससे भी आगे बढ़ कर पारद विज्ञान के उन संस्कारों को भली प्रकार से स्पष्ट किया है, जो सर्वथा लुप्त थे।

पारद विज्ञान को समझने के लिए पारद संस्कार के साधन समझने आवश्यक है और ये साधन सैकड़ों ग्रन्थों में बिखरे हुए हैं, इनको संग्रहित करना और आधुनिक युग के लोगों को सरलतापूर्वक समझाना पेचीदा था, परन्तु उन्होंने पूर्णता के साथ इसे सम्पन्न किया।

स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी से चर्चा करने पर उन्होंने स्पष्ट किया कि पारा अपने आप में अत्यन्त विषैला पदार्थ है, जिसकी छोटी सी मात्रा भी यदि शरीर में चली जाती है तो वह सारे शरीर को फाड़ देती है और शरीर के सौ-सौ छिद्र

करके वह पारद शरीर के बाहर निकल जाता है, इस पारद में अनेक विजातिय पदार्थ और तत्व मिले होते हैं जिन्हें दूर करने पर ही शुद्ध पारद प्राप्त हो सकता है।

उन्होंने इसकी स्पष्ट व्याख्या करते हुए बताया कि रस शास्त्र में पारे के दस दोष गिनाये गये हैं।

"धरणी धर संहिता" में बताया है—

विषं वन्हिर्मलं चेति दयानैसर्गिका स्त्रयः
रसे मरण संतापमूर्च्छानांहेतवः क्रमात्
भूमिजा गिरिजावार्जह् वावै नाग वंगजे
कथितः कंचुकाः सप्तरस दोषादषास्मृताः।

अर्थात् **"विष"** **"वन्हि"** और **"मल"** ये तीन दोष तो पारे में स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं, पृथ्वी और पर्वत से दो दोष पारे में नैसर्गिक रूप से आ जाते हैं, शीशा और रांगे से पांच दोष प्राप्त होने से ये सात दोष पारे में होते ही हैं, जिनको **"कंचुकी"** कहा जाता है, ये सात कंचुकी और तीन मल इस प्रकार कुल दस दोष पारे में विद्यमान होते हैं, यदि इन दोषों को दूर नहीं किया जाय, और उस पारे का प्रयोग किया जाय तो उस पारद से स्वर्ण का निर्माण संभव नहीं, साथ ही साथ उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि ऐसे अशुद्ध पारद का सेवन किया जाय तो कोढ़, जलन, वीर्यनाश, मूर्छा, विस्फोट और मृत्यु सहज संभव है, इस प्रकार का पारद सेवन करने से शरीर में विविध प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं, इन दोषों से मुक्त शुद्ध पारद ही अमृत के समान लाभदायक और पूर्ण आयु प्रदान करने में समर्थ होता है।

पारे के विविध संस्कार सम्पन्न करने में "खरल" प्रधान वस्तु है जिसमें पारद को घोटा जाता है, इसे संस्कृत में "खल्व" कहते हैं, इसमें भी साधारण खल्व, सप्त खल्व, लोह खल्व, ताम्र खल्व आदि उपयोग में लाई जाती हैं, पारे के अलग अलग संस्कारों में **छेदन** के लिए **कन्दुक यंत्र** की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार **पातन** के लिए **विद्याधर यंत्र**, ऊर्ध्व पातन के लिए **कोष्ठी यंत्र** की जरूरत पड़ती है, इसके अलावा भी यदि पारद का और उसके संस्कारों का भली प्रकार से ज्ञान प्राप्त करना है, तो किसी योग्य पारद विज्ञानी या गुरु से अन्य यन्त्रों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जिनमें

डमरू यंत्र, हेम गर्भ यंत्र, मदन यंत्र, कनक सुन्दरी यंत्र, गज कूप यंत्र नाग यंत्र, चक्र यंत्र, वली यंत्र, कन्दुक यंत्र, बालुका यंत्र, जल यंत्र, नाभि यंत्र, ककूर यंत्र, भारण यंत्र, कवची यंत्र, किन्नर यंत्र, पातन यंत्र, दीपिका यंत्र, सिद्धसार यंत्र, गर्भसार यंत्र, पाताल यंत्र, आकाश यंत्र, रंजक यंत्र, कोठी यंत्र, वारुणी यंत्र, गर्भ यंत्र, कच्छप यंत्र आदि यंत्रों के बारे में जानकारी करनी चाहिए।

जब मैंने स्वामी जी से पूछा कि ये यंत्र कहां पर प्राप्त होते हैं, तो उन्होंने बताया कि इस प्रकार के यंत्र बाजार में उपलब्ध नहीं, इन यंत्रों का निर्माण पारद विज्ञानी स्वयं करता है, और उसका उपयोग करता है, मैंने इनमें से अधिकतर यंत्रों को स्वामी जी के पास देखा है, और वे इस तथ्य को समझा भी रहे थे, कि कौन सा यंत्र किस कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है।

मैंने पूछा कि इन यंत्रों के अलावा और किस बात का ज्ञान इस क्षेत्र में रुचि लेने वाले साधक को होनी चाहिए, तो उन्होंने बताया कि यंत्रों की जानकारी के बाद व्यक्ति को विविध **मूषा** का ज्ञान होना चाहिए, इन मूषाओं में पारद से संबन्धित रस निर्माण किया जाता है, इन मूषाओं में योग मूषा, गार मूषा, पर मूषा, वर्षा मूषा, भस्म मूषा, वज्र मूषा, मल मूषा, महा मूषा, गर्भ मूषा, सम्पुट मूषा, प्रकाश मूषा, अन्य मूषा आदि होती हैं, जो पारद के अठारह संस्कार के बाद उपयोग में लाई जाती हैं, इन मूषाओं के माध्यम से ही पारद को तेजस्वी और दिव्य बनाया जा सकता है।

पारद को पूर्णता देने के लिए उसमें विविध **पुट** देने पड़ते हैं जिनमें महा पुट, गज पुट, छगण पुट, माड पुट, कुक्कुट पुट, कपोत पुट, गोचर पुट आदि देने से पारद को पूर्णता प्राप्त होती है।

स्वामी जी ने चर्चा के दौरान पारद से संबंधित कई मुद्राएं भी स्पष्ट की, जिनमें हठ मुद्रा, मदन मुद्रा, वज्र मुद्रा, जल मुद्रा, भस्म मुद्रा आदि का उल्लेख उन्होंने किया था।

उदाहरण के लिए उन्होंने जल मुद्रा को स्पष्ट करते हुए बताया, कि सेमल की डोंडी और शुद्ध चूने को दूध से मर्दन कर उसमें पारद मिलाया जाय, तो इसे **"जल मुद्रा"** कहा जाता है।

इसी प्रकार **भस्म मुद्रा** के बारे में बताते हुए उन्होंने स्पष्ट किया था, कि लकड़ी की भस्म एक भाग, लवण एक भाग, इन दोनों को खरल में डाल कर निरन्तर जल में घोटता जाय, और जब वह मक्खन के समान मुलायम हो जाय, तब उसमें शुद्ध पारद मिलाया जाय, तो "**भस्म मुद्रा**" बनती है।

वज्र मुद्रा के बारे में उन्होंने स्पष्ट किया, कि तुष भस्म एक भाग, मिट्टी तीन भाग, और सुहागा चार भाग इनको कूट कर खरल में छः घण्टे तक घोटे और फिर पारद मिलाया जाय, तो इसे "**वज्र मुद्रा**" कहा जाता है।

बातचीत के प्रसंग में मैं यह अनुभव कर रहा था, कि उन्हें केवल नाम गणना ज्ञान ही नहीं है, अपितु प्रत्येक मुद्रा या पुट समझाते हुए वे विविध पारद ग्रन्थों के उद्धरण भी स्पष्ट कर रहे थे, ऐसा लग रहा था, कि जैसे इन सभी ग्रन्थों को उन्होंने आत्मसात कर लिया हो, उन्होंने बताया, कि पारद सिद्ध करने में कई वर्गों और जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है, जिनमें **रस स्वेदन वर्ग**, **रस मर्दन वर्ग**, **रस मारण वर्ग**, **मयूर पुच्छ** आदि वर्ग का प्रयोग करना चाहिए, इसके अलावा पारद प्रयोग में सर्प, बिच्छू, तेलिया, धतूरा आदि से सम्बन्धित विष का प्रयोग भी किया जाता है।

सोना, चांदी, तांबा, लोहा, वंग, नाग, पीतल और कांसी—ये आठ धातु है, जिनको रस सिद्धि में विविध कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

उन्होंने बातचीत के प्रसंग में **महारस और उपरस** को भी समझाया था, महारस में **अभ्रक, राजावर्त, शिलाजीत** आदि हैं, और उपरस में **हरताल, फिटकरी, मनशिल, गन्धक, नवसादर, हिंगुल, सिंदूर, समुद्र फेन** आदि का उपयोग किया जाता है।

कीमियागीरी में या पारद संस्कारों में **नवसादर का तेल, मुद्राशंख का तेल, शंखिये का तेल, गन्धक का तेल, फिटकरी का तेल,** आदि भी पारद में मिला कर उसके विविध प्रयोग सम्पन्न किये जाते हैं, इसके अलावा **पुखराज, माणिक्य, नीलम, हीरा, मोती, गोमेद, लहसुनिया, मूंगा, पन्ना** आदि रत्नों को भी पारद में मिला कर उसके माध्यम से कई प्रकार के प्रयोग सम्पन्न किये जाते है, इनके उपयोग से पारद पूर्ण रूप से बद्ध हो जाता है।

मैंने जब पारद के संस्कारों के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया, कि पारद से

सम्बन्धित ग्रन्थों में तो मात्र **अठारह संस्कार** ही स्पष्ट किये हुए हैं, इसका कारण यह है, कि इससे ज्यादा ज्ञान इन पुस्तकों में है ही नहीं।

रस पद्धति ग्रन्थ में बताया है, कि पारद भक्षण के लिए प्रथम आठ संस्कार ही उपयोगी है।

स्वेदनमर्दन मूर्च्छनोत्थाय न पालनरोधन
नियमन दयिनागनित्यष्टौ संस्कारा:
स्नूतस्यैतेनुसंस्कारा: कथिता देह कर्मणि
तथा च दश संस्कारादेह लोहकरास्मृता:।

परन्तु इसके अलावा अगले दस संस्कार स्वर्ण बनाने में या कीमियागीरी में उपयोग होते हैं, इस प्रकार कुल अठारह संस्कारों का वर्णन इन ग्रन्थों में है, इस प्रकार इन अठारह संस्कारों के नाम हैं— १-स्वेदन, २-मर्दन, ३-मूर्छन, ४-उत्थापन, ५-पातन, ६-निरोधन, ७-नियमन, ८-दीपन, ९-गगन-ग्रासन, १०-चारण, ११-गर्भद्रुति, १२-बाह्यद्रुति, १३-जारण, १४-रंजन, १५-सारण, १६-क्रामण, १७-वेध, १८-भक्षण।

उपरोक्त अठारह संस्कारों में से प्रथम संस्कार **स्वेदन** से पारे के भीतरी मल का नाश होता है और **मर्दन** से उसके बाहरी मल का नाश हो जाता है, **मूर्छन** से पारद का नागवंग दोष दूर हो जाता है और चौथे संस्कार **उत्थापन** से पारद की मूर्छावस्था समाप्त हो जाती है, **पातन और रोधन** से पारद सब प्रकार के दोषों से दूर हो जाता है और **नियमन** से पारद की चंचलता और चपलता नष्ट हो जाती है, इसके बाद जब **दीपन** क्रिया सम्पन्न की जाती है, तब पारद बुभुक्षित हो जाता है, इस अवस्था में पहुंचने पर पारद पूर्ण शुद्ध हो जाता है, और वह **ग्रास** लेने की स्थिति में आ जाता है, ऐसा संस्कार होने पर पारद **अग्नि स्थायी** माना जाता है, इसमें पारद का स्वरूप तो वैसा ही रहता है, परन्तु अग्नि पर रखने पर भी वह उड़ता नहीं या समाप्त नहीं होता।

जब उपरोक्त क्रियाओं के द्वारा पारद बुभुक्षित हो जाता है, तो उसे **अभ्रक का ग्रास** दिया जाता है, ऐसी क्रिया करने पर "**अभ्रक चारण पारद**" कहा जाता है, अभ्रक का ग्रास देने से पारद की बुभुक्षा बहुत अधिक बढ़ जाती है, इसके बाद यदि व्यक्ति चाहे तो उसे गन्धक, स्वर्ण, चांदी, हीरा आदि

धातुओं या रत्नों का ग्रास भी दे सकता है, इससे पारद अपने आपमें अद्वितीय बन जाता है।

इसके बाद थोड़ी कठिन क्रिया सम्पन्न की जाती है, जिसे **गर्भद्रुति** कहा जाता है, अर्थात् जिस प्रकार का ग्रास पारद को दिया गया है, वह पारद उस पदार्थ को भली प्रकार से अपने आप में पचा ले, और अपने ही समान उसे एक रूपता प्रदान कर दें, इस कार्य के लिए तीक्ष्ण द्रव अर्थात् तेजाब काम में लाया जाता है, अन्त में पारद को **स्वर्ण ग्रास** दिया जाता है ऐसा होने पर पारद अपने आपमें दिव्य और तेजस्वी बन जाता है।

गर्भद्रुति के बाद **बाह्य द्रुति** क्रिया सम्पन्न की जाती है, बाह्य द्रुति का तात्पर्य है, कि गर्भ द्रुति के माध्यम से जो ग्रास पारद को दिया गया है, वह पारद उस पदार्थ को अपने आपमें पचा ले, और फिर बाह्य द्रुति क्रिया सम्पन्न करने से, ऐसा पारद पूर्णरूप से बद्ध हो जाता है, ऐसा होने पर पारा पूर्णरूप से **अग्नि स्थायी** हो जाता है।

पारद क्रिया में **जारण** एक महत्वपूर्ण क्रिया मानी गई है, इससे पारद में रोगनाशक शक्ति हजार-हजार गुना बढ़ जाती है, इसमें गन्धक जारण क्रिया सम्पन्न होती है, और ऐसी क्रिया सम्पन्न होने के बाद जो पारद प्राप्त होता है वह असाध्य रोगों को नष्ट करने वाला, और सम्पूर्ण शरीर को कायाकल्प करने में पूर्ण समर्थ होता है, ऐसा पारद बुढ़ापे को यौवन में बदलने की सामर्थ्य रखता है, शास्त्रों में इसे **"मृत्यु दारिद्रय नाशनः"** पारद कहा है।

जारण क्रिया के बाद **ग्रास क्रिया** सम्पन्न होती है इसमें कठिन से कठिन पदार्थ को भी पारद ले लेता है, और उसे अपने में मिला कर अपने ही समान बना देता है, यदि इस प्रकार का पदार्थ बहुत ज्यादा दिया जाय, तो **बिड** प्रयोग से उसकी बुभुक्षा बहुत अधिक बढ़ा दी जाती है, और वह अपने से सौ गुना पदार्थ भी समाविष्ट कर लेता है।

पारद का चौदहवां संस्कार **रंजन** कहा जाता है, यह क्रिया अत्यन्त कठिन है और इसके माध्यम से व्यक्ति असंभव कार्य को भी संभव कर सकता है।

पारद का पन्द्रहवां संस्कार **सारण** क्रिया है, इसमें पारद का वेध किया

जाता है, फलस्वरूप पारद पूर्ण रूप से बद्ध होकर मनुष्य को आकाश में विचरण करने के योग्य बना देता है।

मैंने स्वामी जी से **बद्ध रस** के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि सत्ताईस तरह के पारद बद्ध रस होते हैं, जो कि अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, इनके नाम हैं—१-हठ बद्ध, २-आरोट बद्ध, ३-आभास बद्ध, ४-क्रियाहीन बद्ध, ५-पिष्टिका बद्ध, ६-क्षार बद्ध, ७-खोट बद्ध, ८-पोट बद्ध, ९-कल्क बद्ध, १०-कज्जलि बद्ध, ११-सजीव बद्ध, १२-निर्जीव बद्ध, १३-निर्बीज बद्ध, १४-पंजीव बद्ध, १५-शृंखला बद्ध, १६-द्रुति बद्ध, १७ कजक बद्ध, १८-कुमारक बद्ध, १९-तरुण बद्ध, २०-वृद्ध बद्ध, २१-मूर्ति बद्ध, २२-जल बद्ध, २३-अग्नि बद्ध, २४-सुसंस्कृत बद्ध, २५-महा बद्ध, २६-क्रिया बद्ध और २८-चैतन्य बद्ध।

ये सभी बद्ध पारद के माध्यम से सम्पन्न होते हैं, और इससे कई क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं जिनसे वृद्धता को यौवनावस्था में परिवर्तित कर देना, अदृश्य हो जाना, देह को सूक्ष्म बना कर आकाश में विचरण करना, आदि क्रियाएं शामिल हैं।

मैंने जब स्वामी जी से पूछा कि आपने पारद के अठारह संस्कारों के बारे में ही स्पष्ट किया है, और आपने बताया है, कि भारत के प्राचीन ग्रंथों ने पारद के अठारह संस्कार ही स्पष्ट किये हैं, तो क्या अठारह संस्कारों में पारद क्रिया समाप्त हो जाती है।

मेरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने रहस्य पूर्ण ढंग से बताया, कि वस्तुतः पारद के १०८ संस्कार होते हैं, परन्तु अभी तक विश्व में केवल अठारह संस्कारों के बारे में ही जानकारी है, और इनमें से भी केवल सात या आठ संस्कार ही लोगों को ज्ञात हैं, शायद ही कोई बिरला योगी या रसविज्ञानी होगा, जिसे क्रियात्मक रूप से अठारह संस्कारों का ज्ञान हो, नाम गणना तो इन अठारह संस्कारों की, की जा सकती है, परन्तु क्रियात्मक रूप से इनका ज्ञान पारद विशारदों को नहीं है।

मैंने जब आश्चर्य से पूछा, कि पारद के १०८ संस्कार हैं, तो वे स्पष्ट

क्यों नहीं है, इसके उत्तर में उन्होंने बताया, कि आगे के संस्कार कठिन तो अवश्य हैं, परन्तु असम्भव नहीं है, यदि कोई शिष्य या साधक पूर्ण क्षमता के साथ इस क्षेत्र में उतरे, तो वह इन सभी क्रियाओं और संस्कारों को भली प्रकार से जान सकता है, और इसमें पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

मेरे अनुरोध पर, उन्होंने पारद के १०८ संस्कारों को स्पष्ट किया, जो सम्भवतः विश्व में पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं।

१- स्वेदन, २- मर्दन, ३- मूर्छन, ४- उत्थापन, ५- पातन, ६- निरोधन, ७- नियमन, ८- दीपन, ९- गगन ग्रासन, १०- चारण, ११- नियमन, १२- बाह्यद्रुति, १३- जारण, १४- रंजन, १५- सारण, १६- क्रामण, १७- वेध, १८- भक्षण, १९- इन्द्रायन, २०- वीरन, २१- सोमन, २२- ज्वलन २३- ईश्वरन, २४- रुद्रन, २५- वारहन, २६- अशोकन, २७- नागन, २८- देवन, २९- चित्रन, ३०- वातहर्णी, ३१- सिंहिका, ३२- ज्योतिन, ३३- ब्रह्मदण्डी, ३४- पद्मन, ३५- अजयान, ३६- हेमलता, ३७- व्याघ्रपादन, ३८- कपोतिका, ३९- विष्णुकान्ता, ४०- ब्रह्मकान्ता, ४१- रुद्रकान्ता, ४२- चक्रमर्द, ४३- पद्मचारिणी, ४४-त्रिकण्ठा, ४५- कोकिलाक्ष, ४६-मूरवा, ४७-वच्चल ४८- यक्षन, ४९- पूर्णन, ५०- दिव्यन, ५१- लक्ष्मण, ५२- सूरदेवा, ५३- गोरीसर, ५४- सरहटी, ५५- सरपाक्षी, ५६- गगनचारी, ५७- ब्रह्मण्डचारी, ५८-नक्षत्रचारी, ५९-पातालवेधन, ६०- जलगमन, ६१- अरण्या, ६२- सूक्ष्मा, ६३- प्राणा, ६४- चैतन्या, ६५- अलक्ष्या, ६६- सिद्धिदा, ६७- तीव्रवेगा, ६८- स्वर्णाभा, ६९- हीरकखण्डा, ७०- रसदर्शना, ७१- भेदा, ७२- दीपा, ७३-परिवर्तना, ७४- शिवा, ७५- गुरुवा, ७६- नेत्रा, ७७- संपरी, ७८-कालपर्णी, ७९-त्रिडंडी, ८०- कल्पानागा, ८१- अर्यमाणा, ८२- बला, ८३- नागबला, ८४- महाबला, ८५- बद्धा, ८६- दिव्यौषधा, ८७-पूर्णा, ८८- योगा, ८९-रत्ना, ९०-सौन्दर्यवल्ला, ९१-रसराजन, ९२-किन्नरा, ९३-करीणया, ९४- सूर्या, ९५- उत्थापया, ९६- पुत्रदा ९७- सिन्धुवा, ९८- अदृश्य करणी, ९९- अग्नि शिखा, १००- वीर्या, १०१- आरनाला,

१०२- सुभा, १०३-नियमना, १०४- गुणा, १०५- अगुणा, १०६-स्वाधाना, १०७- शिवा, १०८- निक्ष्या।

वस्तुतः प्रथम अठारह संस्कारों के बाद में तो इन संस्कारों के नाम मैं पहली बार सुन रहा था, परन्तु उन्होंने ब्रह्मदण्डी ग्रन्थ के सूत्र स्पष्ट करते हुए इन सारे संस्कारों को प्रामाणिक रूप से स्पष्ट भी किये।

वस्तुतः स्वामी जी को पारद के क्षेत्र में अद्वितीय और अप्रतिम ज्ञान है, जिनकी तुलना की ही नहीं जा सकती, उन्हें प्रत्येक संस्कार के नाम का ही ज्ञान नहीं, अपितु उसकी पूरी क्रिया पद्धति, उसका विवेचन और उसका प्रयोग भी भली प्रकार से ज्ञात है, उन्होंने अपने जीवन में इन सभी संस्कारों को संपन्न किया है, इसका प्रयोग किया है, तथा अपने कई शिष्यों को सम्पन्न कराया है।

वास्तव में ही उन्हें पारद के सभी संस्कारों का प्रामाणिकता के साथ ज्ञान है, और कई-कई प्रकार से वे पारद के संस्कार सम्पन्न कर लेते हैं, जबकि अभी वर्तमान पारद विज्ञानियों को मात्र अठारह या बीस संस्कार ही ज्ञात है, तब स्वामी जी को पूरे १०८ संस्कारों का ज्ञान है, वे किसी भी संस्कार को कई तरीकों से सम्पन्न कर सकते हैं, और उसका उपयोग ले सकते हैं।

वास्तव में ही आज के युग को और पारद कार्य में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को चाहिए, कि वे इसकी महत्ता को समझें और समय रहते, ऐसे अनिर्वचनीय व्यक्तित्व के चरणों में बैठकर पारद का प्रामाणिकता के साथ ज्ञान प्राप्त कर लें, जिससे कि जो ज्ञान पुस्तकों या ग्रन्थों में नहीं है, जो ज्ञान योगियों और सन्यासियों के पास नहीं है, उस ज्ञान को आसानी से प्राप्त किया जा सके, और विश्व में विख्यात सम्माननीय और कीर्तियुक्त व्यक्तित्व का निर्माण कर सके। ●

पृथिव्यां दुर्लभं श्रेष्ठ रसः जानाति यो नरः।
सिद्धि लक्ष्मीं पदे नित्यं अमृत्यु वाजी वाग्भवेत्॥

संसार में ऐसा व्यक्ति दुर्लभ ही होता है, जो पारद संस्कार में सिद्धि प्राप्त करे, और गुरु चरणों में बैठ कर पूर्ण रस संस्कार ज्ञान प्राप्त करे, उसे कदम-कदम पर सिद्धियां प्राप्त होती हैं, लक्ष्मी वरमाला उसके गले में डालने के लिए उद्यत रहती है, वह चिरयौवन वान सुखी तथा अजर अमर हो जाता है।

पारद-संस्कार

कई पारद ग्रंथों में यह स्पष्ट किया है, कि पारद, संस्कार करने पर ही शुद्ध और प्रामाणिक बनता है, **रस दर्शन** ग्रन्थ में बताया गया है, कि साधक को चाहिए कि वह श्रद्धा और धैर्य पूर्वक गुरु के चरणों में बैठे, और पारद के संस्कार भली प्रकार से सीखे, जो मनुष्य आठ दोषों से युक्त पारद को भस्म करता है वह ब्रह्म हत्या जैसे दोष से भी मुक्त हो जाता है, इस विश्व में पूजनीय होता है, और मृत्यु के बाद उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया जा चुका है, कि पारद के प्रथम आठ संस्कार शरीर को स्वस्थ और निरोग बनाये रखने के लिए आवश्यक है, और शेष दस संस्कार रसायन विद्या अर्थात् स्वर्ण बनाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं।

रस सार ग्रन्थ में पारद के प्रथम आठ संस्कार इस प्रकार बताये है—

स्वेदनं मर्दनं चैव मूर्च्छनोत्थापनं तथा
पातनं रोधनं चैव नियामनमतः परम्
दीपनवेति संस्काराः सूतस्याष्टौ प्रकीर्तिताः।

अर्थात् १-स्वेदन, २-मर्दन, ३-मूर्च्छन, ४-उत्थापन, ५-पातन, ६-रोधन, ७-नियमन, और ८-दीपन—ये पारद के आठ संस्कार प्रामाणिक रूप से माने गये हैं।

स्वेदन आदि कर्मों से शुद्ध किया हुआ पारद सभी दोषों से मुक्त हो जाता है, जितना पारद लिया जाता है, जब उसको शुद्ध करने की क्रिया की जाती है, तो केवल आठवां हिस्सा ही शेष रह जाता है, और बाकी सब दोष संस्कार में समाप्त हो जाता है, उस आठवें हिस्से को ही शुद्ध पारद माना है, और ऐसा पारद ही शरीर की निरोगता और स्वस्थता के लिए श्रेष्ठ है।

अन्य ग्रन्थों में पारद के **अठारह संस्कारों** के नाम भी दिये हैं, **रस राज** ग्रन्थ में ये नाम इस प्रकार है—

स्यात्स्वेदनं तदनुमर्दनमूर्च्छनं च स्यादुत्थिति पतनरोधनियामनानि
संदीपनं गगनभक्षण मानमत्र संचारणं तदनुगर्भगतिद्रुतिश्च
बाह्यद्रुतिः सूतकजारणा स्याद्रागस्तथा सारणकर्म पश्चात्
सङ्क्रामणं वेधविधिः शरीरयोगस्तथाष्टादशधात्रकर्म ॥

अर्थात् १-स्वेदन, २-मर्दन, ३-मूर्छन, ४-उत्थिति या उत्थापन, ५-पातन, ६-रोध या रोधन, ७-नियामन, ८-दीपन या संदीपन, ९-गगनभक्षण, १०-चारण, ११-गर्भद्रुति, १२-बाह्यद्रुति, १३-पारद जारण, १४-राग, १५-सारण, १६-संक्रामण, १७-वेध, और १८-शरीर योग – ये अठारह पारद के संस्कार हैं।

कुछ ग्रन्थों में **नवें संस्कार** को **"गगन भक्षण"** **"ग्रास प्रमाण"** कहा है, इसी प्रकार **तेरहवें संस्कार** को **"जारण"** अथवा **"पारद जारण"**, **चौदहवें संस्कार** को **"राग"** अथवा **"रस राग"**, **सोलहवें संस्कार** को **"वेधन"** अथवा **"संक्रामण"** और **अठारहवें संस्कार** को **"शरीर योग"** अथवा **"भक्षण"** शब्द से संबोधित किया गया है।

रसराज समुच्चय ग्रन्थ में उन्नीस संस्कारों के नाम दिये हैं, उन्होंने उन्नीसवां संस्कार **देह सिद्धि** शब्द से संबोधित किया है, इसी प्रकार **बृहद योग** ग्रन्थ में पारद के बीस संस्कारों के नाम दिये हैं जिनमें उन्नीसवां संस्कार **जारण** और बीसवां संस्कार **सूत संस्कार** शब्द से संबोधित किया गया है।

यह तो स्पष्ट है, कि प्रथम आठ संस्कार शरीर के स्वास्थ्य, रोग निवृत्ति,

यौवन प्राप्ति और पूर्णता के लिये उपयोग मे लिये जाते हैं और शेष दस संस्कारों के माध्यम से कीमियागीरी या स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है।

पारद ग्रन्थों में बताया गया है, कि इस कार्य में उसी साधक को लगना चाहिए, जिसकी बुद्धि स्वस्थ हो, जो पारद कर्म के अलावा और कोई कार्य न करता हो, जो शिव का भक्त हो, और जिसकी गुरु में पूर्ण आस्था हो, वही पारद कर्म का प्रारम्भ करें।

शुद्ध पारद का लक्षण यह है, कि वह भीतर से उत्तम नीली रंगत लिए हुए होता है और बाहर से चमकदार और उज्ज्वल दिखाई देता है, ऐसे पारद को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

पारद शोधन

● घर का धुआं, ईंट का चूर्ण, हरिद्रा चूर्ण और बारीक कटी हुई ऊन के साथ पारद को मिलाकर उसका मर्दन कर कांजी से धो कर साफ कर देने से पारद का नाग दोष दूर होता है।

● इन्द्रायण, अंकोला, हल्दी का चूर्ण बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारे को मर्दन कर फिर उसे कांजी से धो कर साफ कर लिया जाय, तो पारद का वंग दोष नष्ट हो जाता है।

● चित्रक और मूल चूर्ण बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारद का मर्दन किया जाय तो उसका **अग्नि दोष** समाप्त हो जाता है।

● इसी प्रकार अमलतास की छाल के साथ पारद का मर्दन किया जाय तो उसका **मल दोष** दूर हो जाता है।

● काले धतूरे के साथ पारद को मर्दन करने से उसका **चपल दोष** पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है।

● इसी प्रकार त्रिफला चूर्ण के साथ यदि पारद का मर्दन किया जाता है, तो उसका **विष दोष** नष्ट हो जाता है।

● यदि पारद को सोंठ, मिर्च और पीपल के चूर्ण के साथ मर्दन किया जाय तो उसका **गिरि दोष** दूर हो जाता है।

● यदि उसे गोखरू चूर्ण के साथ मर्दन कर कांजी से धो दिया जाय तो उसका **अग्नि दोष** समाप्त हो जाता है।

● यदि पारद को ग्वारपाठे के रस में पूरे एक दिन मर्दन कर कांजी से धो कर साफ कर लिया जाय तो वह सभी प्रकार के दोषों से मुक्त हो जाता है।

● **रससमुच्चय** ग्रंथ में बताया गया है, कि यदि उपरोक्त प्रयोग अलग अलग रूप से नहीं करें, पर पारद के बराबर चूना ले कर तीन दिन तक उसमें मर्दन करें और फिर मलमल के वस्त्र मे छान लें, इस छने हुए पारद को खरल में डाल कर इसमें लहसुन और नमक बराबर मात्रा में डाल कर मर्दन किया जाय और फिर उसे अच्छी तरह से कांजी से धो लिया जाय तो ऐसा पारद सभी दोषों से मुक्त और पूर्ण शुद्ध हो जाता है।

● **रसतरंगिणी** ग्रंथ में बताया गया है कि ग्वारपाठे के रस, चित्रक, लाल सरसों और त्रिफला के साथ यदि पारद को तीन दिन तक मर्दन किया जाय और उसे धो कर साफ कर लिया जाय तो वह सभी प्रकार के दोषों से मुक्त हो जाता है।

● **रसोपनिषद** ग्रंथ में बताया है, कि यदि गुड़, त्रिफला, अजवाइन, पांचों प्रकार के नमक, चित्रक, जवाखार, सुहागा, और धतूरे के बीज, इन सबको बराबर मात्रा में ले कर पारद में बीसवां भाग डाल कर मर्दन किया जाय तो उसके सभी दोष समाप्त हो जाते हैं।

● यदि यह संभव न हो तो पान के रस, अदरक, जवाखार, सज्जीखार तथा सुहागे के साथ मिलाकर यदि पारद को तीन दिन तक मर्दन किया जाय और फिर कांजी से धो कर पारद को स्वच्छ कर दिया जाय तो पारद शुद्ध मोती के समान चमकीला और सभी दोषों से मुक्त हो जाता है।

● यदि दो तोला शुद्ध पारद और बारह तोला मोम का तेल ले कर खरल में तब तक मर्दन करें, जब तक कि पारा मोम के साथ पूर्ण रूप से मिल जाय, तो

यह पारा शुद्ध हो जाता है और उत्तम कोटि का मरहम बन जाता है, यह किसी भी प्रकार के भगंदर रोग को समाप्त करने में सहायक होता है।

● हिंगुल से पारद को पूर्ण रूप से शुद्ध किया जा सकता है, और यह प्रक्रिया गोपनीय रही है, पारद को हल्दी के चूर्ण, नमक और नींबू के रस में डाल कर आठ घण्टे उसे घोटे, और फिर उसे मलमल के वस्त्र में छान लें, इस पारद को हिंगुल में आठ घण्टे तक घोटे, तो पारा पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाता है।

● यदि पारद को मात्र नींबू के रस में घोट कर उसमें हिंगुल मिलाया जाय और फिर उसका मर्दन कर कांजी के रस में धो दिया जाय, तो पारद शुद्धता के साथ प्राप्त हो जाता है।

अब मैं पारद के प्रथम आठ संस्कारों को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट कर रहा हूं, साधक इस प्रकार से पारद के संस्कार सम्पन्न कर सकता है -

१- स्वेदन

यह पारद का प्रथम संस्कार है, इसमें पारद से सोलहवां भाग पीपली, मरीच, चित्रक, अदरक, सोंठ, सेन्धा नमक तथा त्रिफला ले कर कांजी में मिला कर इसका घोल बनावे, और मन्द-मन्द अग्नि में पकावे तो पारद का स्वेदन संस्कार सम्पन्न होता है।

● अन्य ग्रन्थ में बताया है, कि त्रिकूट, मूली, राई, लवण, अदरक तथा चित्रक- इन औषधियों के घोल में कांजी मिला कर यदि पारद को घोटा जाय, तो उसका स्वेदन संस्कार सम्पन्न होता है।

● एक ग्रंथ में बताया है, कि पीपल, मिर्च, सोंठ, लहसुन, चित्रक, नमक, नौसादर और राई — इन सब को बराबर मात्रा में ले कर कांजी में मिला कर गाढ़ा लेप बना दिया जाय, और उसमें पारे को मिला कर घोटा जाय तो स्वेदन संस्कार सम्पन्न होता है।

"वैद्यावर्श ग्रन्थ" में स्वेदन संस्कार इस प्रकार स्पष्ट किया है -

लहसन राई पीस कै, द्वै घरिया बनवाय।
पहिली घरिया के विषै, पारद देइ धराय॥

दूजो घरिया लेइ के, घरिया पै चुपकाय।
गोला सो करि च्यारि तह, कपरा, विषै बंधाय॥

हंडिया में कांजी भरे, गोता दे लटकाय।
दौल यंत्र की सी तरह, नीचे अग्नि जराय॥

मन्द मन्द स्वेदन करे, या विधि निस दिन तीन।
संस्कार स्वेदन यहै, वर्णन कियो प्रवीन॥

● "रसेन्द्र सार ग्रन्थ" में बताया है, कि यदि पीक्षार, त्रिकूट और त्रिफला को कांजी में भिगो कर यदि उसमें पारद मर्दन किया जाय, तो स्वेदन संस्कार पूर्ण रूप से सम्पन्न हो जाता है।

● मेरी राय में पारद का स्वेदन संस्कार आवश्यक है, परन्तु आधुनिक समय में उपरोक्त क्रियाएं थोड़ी कठिन हैं, परन्तु यदि सोंठ, मिर्च, पीपल, सेंधा नमक, राई, हल्दी और त्रिफला इन सब को बराबर मात्रा में ले कर इसमें चौगुनी कांजी मिलावे और फिर इस घोल को आठ घण्टे तक पड़ा रहने दें, फिर इसमें पारद को घोटे और लगभग छः घण्टे तक पारद का मर्दन किया जाय तो पारद का स्वेदन संस्कार पूर्ण रूप से सम्पन्न होता है।

● मेरा अनुभव यह भी है, कि पहले पारद को तीन घण्टे तक नींबू के रस में घोटे, उसके बाद उसी पारद को अदरक के रस में घोटे और फिर तीन घण्टे तक मूली के रस में घोट कर अन्त में उसे तीन घण्टे तक घी ग्वार या ग्वारपाठे के रस में घोटा जाय, तो निश्चय ही उसका स्वेदन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● सोंठ, मिर्च (काली मिर्च) को बराबर मात्रा में ले कर पीस कर उस पाउडर में कांजी मिला दी जाय, और फिर इस घोल को मन्द

आंच से लगभग आठ घण्टे तक पकाया जाय तो **स्वेदन संस्कार** भली प्रकार से सम्पन्न हो जाता है।

● यदि अदरक का रस, पान का रस, और नवसार को बराबर मात्रा में ले कर उसमें चार घंटे तक पारद को घोटा जाय, तो इससे पारद का स्वेदन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● केवल मात्र मूली के रस में घोट कर पारद को एक घंटे तक थोड़ा-थोड़ा डालते हुए पकावें और फिर नींबू के रस में घोट कर कांजी से धो ले तो भी रस स्वेदन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

उपयोग

★ पारद के स्वेदन संस्कार से पारा शुद्ध हो जाता है, और वह दिव्य औषधि बन जाता है, ऐसा पारद तीव्र और चमकीला बन जाता है, शरीर पर चाहे कैसा ही घाव हो, और यदि वह घाव नहीं भरता हो तो उसमें स्वेदन संस्कार युक्त पारद का लेप किया जाय तो वह घाव तुरन्त भर जाता है।

★ यदि डाइबीटिज या मधुमेह बीमारी की वजह से शरीर का कोई घाव पूरी तरह से नहीं भर रहा हो, तो उसमें पारद अत्यन्त उपयोगी होता है।

★ यदि इस प्रकार के पारद को एक बाल्टी पानी में दस मिनट रख कर उस पारद को हटा लें, और उस पानी से स्नान किया जाय, तो काया चमकीली और प्रभाव युक्त बन जाती है।

★ यदि स्वेदन संस्कार किये हुए पारद का हलका सा लेप चेहरे की फुंसियों, मस्सा, व्रण आदि पर किया जाय, और कुछ दिनों तक इसका उपयोग किया जाय, तो शरीर के ये व्रण और मस्से समाप्त हो जाते हैं।

★ यदि स्वेदन संस्कार युक्त पारद को तीन घंटे तक पानी की बाल्टी में रखे, और फिर पारा बाहर निकाल ले और उस जल से कुछ दिनों तक सिर के बाल धोये, तो बालों का झड़ना बन्द हो जाता है, और यदि गंज या टाट निकल आई हो, तो वहां पर नये बाल निकलने लग जाते हैं, ऐसी क्रिया से बाल

मुलायम, काले और चमकीले हो जाते हैं।

★ यदि स्वेदन संस्कार युक्त पारद को एक मलमल की पोटली में बांध कर शरीर के अंगो पर कुछ समय फेरा जाय, तो जहां जहां पर भी अवांछित बाल होते हैं, वे बाल समाप्त हो जाते हैं, और वहां की त्वचा सुन्दर और चमकीली हो जाती है।

★ स्वेदन संस्कार युक्त पारद का प्रयोग कई प्रकार की बीमारियों को समाप्त करने में भी किया जाता है, और इससे शरीर स्वस्थ तथा चैतन्य हो जाता है।

२- मर्दन

✔ पारद से संबंधित ग्रन्थों में बताया गया है, कि स्वेदन संस्कार करने के बाद उसी पारद से मर्दन संस्कार सम्पन्न करना चाहिए, इससे पारद का बाह्य मल नष्ट हो जाता है, और वह पारद चमकीला और उपयोगी बन जाता है।

● सेंधा नमक, राई, हल्दी, लहसुन, अदरक, तथा त्रिफला को बराबर मात्रा में ले कर उसका पाउडर बना कर थोड़ी-थोड़ी कांजी मिलाते हुए यदि उसमें पारद को घोटा जाय, तो ऐसा करने पर पारद का **मर्दन संस्कार** सम्पन्न हो जाता है।

● एक अन्य ग्रंथ में बताया है, कि यदि जंभीरी के रस में पारद को घोटा जाय, तो पारद का **मर्दन संस्कार** हो जाता है।

वैद्यादर्श ग्रन्थ में पारद का मर्दन संस्कार इस प्रकार बताया है —

लीजै चूना की कली, बहुरि ईंट का चूर्ण।
दधि गुड़ सेंधे लवण जुत, रस घोटे भरिपूर॥

तीन दिवस पर्यन्त लौं, फिर कांजी ते धोय।
इस पारद को शुद्ध करि, सकल दोष दे खोय॥

● कुछ ग्रंथों में पारद के मर्दन संस्कार के बारे में स्पष्ट करते हुए बताया है, कि सेंधा नमक, हल्दी, गुड़, राई तथा सोंठ को बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारद का मर्दन आठ घण्टे तक किया जाय, तो पारद का यह दूसरा संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● बृहत् संहिता में बताया है, कि दही, गुड़, राई और सेंधा नमक बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारद मिला कर तीन दिन तक घोटा जाय, तो पारद का मर्दन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● कुछ विद्वानों ने गुड़ और सेंधा नमक बराबर मात्रा में ले कर उसमें कांजी और पारद को मिला कर घोटने पर भी उसका मर्दन संस्कार माना है।

● रसोपनिषद में बताया है, कि नमक, चूना, जवाखार, सुहागा और सज्जीखार बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारद को घोटा जाय, तो उसका मर्दन संस्कार भली प्रकार से सम्पन्न हो जाता है।

● मेरे अनुभव के अनुसार यदि पांचों प्रकार के नमक, सुहागा और जवाखार बराबर मात्रा में ले कर उसमें नींबू का रस मिला कर पारे को घोटा जाय, तो पूर्ण रूप से मर्दन संस्कार हो जाता है।

● यदि ग्वारपाठे का रस, चित्रक, लाल सरसों, और त्रिफला को कांजी में भिगो कर उसमें पारे को घोटा जाय, तो मर्दन संस्कार भली प्रकार से सम्पन्न हो जाता है।

● यदि कुछ नहीं हो तो आक के दूध और थूहर के दूध में त्रिफला और नमक मिला कर उस घोल में पारद का मर्दन किया जाय, तो निश्चय ही पारद का मर्दन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● यदि पारद को ग्वारपाठे के रस में घोटा जाय, और फिर नींबू के रस में उसको घोट कर उसको स्वच्छ बना दिया जाय, तो पारद का मर्दन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

उपयोग

* पारद का मर्दन संस्कार आवश्यक है, क्योंकि इससे प्रत्यक्ष श्रेष्ठ पारद बन जाता है और उसका बाह्य दोष समाप्त हो जाता है।

* यदि एक गिलास पानी में ऐसा संस्कारित पारद दो तीन मिनट रहे, और फिर उस पारे को बाहर निकाल दें, और उस जल का सेवन करें, तो शरीर के रोग समाप्त हो जाते हैं।

* यदि ऐसे पारद की पोटली बना कर रात को पेट पर बांध दें, तो पुरानी कब्ज दूर हो जाती है, और पेट स्वच्छ रहता है।

* ऐसे पारद को यदि गर्म पानी में कुछ समय रख कर, फिर पारद को बाहर निकाल दें, और कुछ दिनों तक उस जल से स्नान करे, तो शरीर का सांवलापन समाप्त हो जाता है, और गोरा रंग निकल आता है।

* यदि इस पारद को कटेरी के रस में मिला कर थोड़ा-थोड़ा सेवन किया जाय, तो मधुमेह की बीमारी समाप्त हो जाती है।

* यदि इस पारद को अंकोल के चूर्ण के साथ घोट कर उसका थोड़ा-थोड़ा सेवन किया जाय, तो शरीर की जलन, अन्तर्दाह दूर हो जाती है, पर उपरोक्त प्रकार से औषधि का सेवन कुशल वैद्य की राय से ही करना चाहिए।

* यदि मर्दन किये हुए पारद को नाभि के नीचे पोटली बना कर बांधा जाय तो नपुंसकता दूर हो जाती है, और वह पूर्ण रूप से मर्द बनने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

* यदि इस प्रकार के पारद को अमलतास के गूदे में मिला कर सेवन किया जाय, तो श्वेत कुष्ठ समाप्त हो जाता है।

* कुछ ग्रंथों में यह भी बताया गया है, कि ऐसे पारद को यदि अमलतास की जड़ में घोट कर उसका सेवन किया जाय, तो शरीर की वृद्धावस्था समाप्त होने लगती है।

वस्तुतः इस प्रकार का पारद शरीर के लिये अत्यन्त उपयोगी बताया गया है, और कई असाध्य बीमारियों को दूर करने में यह पारद सहायक होता है।

(३) मूर्च्छन

जब व्यक्ति पारद के प्रथम दो संस्कार सम्पन्न कर ले, तब मर्दन किये हुए पारद से ही मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न करें।

इससे पारद का मल उसकी अग्नि तथा उसका विष दूर हो जाता है, और ऐसा पारद हजारों हजारों बीमारियों को दूर करने में सहायक माना जाता है।

● यदि घी ग्वार अथवा ग्वारपाठे के रस, त्रिफला और चित्रक के साथ पारद का मर्दन किया जाय, तो उसका मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न होता है, तब इस प्रकार के पारद को कांजी से धो कर स्वच्छ कर लेना चाहिए।

● खरल में पारा डालकर उसमें जवाखार, सज्जीखार, पांचों प्रकार के नमक और नीबू का रस डालकर पारे को घोटा जाय, तो पारद का मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न होता है, और ऐसा पारद कई प्रकार से उपयोगी होता है।

● योग रत्नाकर ग्रंथ में बताया है, कि हल्दी, त्रिकूट, और घी ग्वार के रस में पारे को घोटा जाय, तो उसका मूर्च्छन संस्कार प्रामाणिकता के साथ हो जाता है।

● मेरी राय में यदि ग्वारपाठे के रस और त्रिफला में पारद को घोटा जाय तो उसका भली प्रकार से मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● यदि चित्रक, और ग्वारपाठे के रस को मिला कर उसमें पारद घोटा जाय, तब भी उसका मूर्च्छन संस्कार भली प्रकार से हो जाता है।

● अमलतास की जड़ के साथ पारद का मर्दन किया जाय, तो निश्चय ही पारद का मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न होता है।

● मेरे अनुभव में यह भी आया है, कि ग्वारपाठे का रस और त्रिकूट बराबर मिला कर उसमें चित्रकमूल और पारद मिला कर घोटा जाय, तो मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न पारद प्राप्त होता है।

● यह निश्चय है, कि यदि कुमारी या ग्वारपाठे का रस त्रिफला और चित्रकमूल के साथ पारद को घोटा जाय, तो निश्चय ही पारद का मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न होता है।

● सोंठ, काली मिर्च, पीपल, ग्वारपाठे का रस और आक का दूध बराबर मात्रा में मिला कर, उसमें पारद को घोटा जाय, तो पारद का मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

वैद्यादर्श में बताया है –

फेर धतूरा रसविष, तीन दिवस परियंत।
घीकुमार रस घोटि पुनि, तीन दिनन परियंत॥

या विधि मर्दन कर्म ते, होय मूर्च्छित सूत।
सप्त कंचुकी हू तजे, लिखी सु करि अनुभूत॥

मूर्च्छित संस्कार सम्पन्न पारद पूर्ण शुद्ध हो जाता है, वह तरल नहीं रहता, और उसमें किसी प्रकार की गांठ भी नहीं रहती, ऐसे पारद से पारद गुटिका या गोली तैयार की जा सकती है।

उपयोग

★ मूर्च्छित पारद पर जल डाल कर उस जल से यदि आंखों को धोया जाय, तो आंखों की अंधता और आंखों से सम्बंधित रोग समाप्त हो जाते हैं।

★ यदि तांबे के पात्र में मूर्च्छित पारद को रख दिया जाय और उस पात्र में पानी भरा जाय, तथा तीन घण्टे बाद उस पानी से स्नान किया जाय तो निश्चय ही सफेद कोढ़ या शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग समाप्त हो जाते हैं।

★ यदि मूच्छित पारद से युक्त पानी का प्रयोग सिर धोने में किया जाता है, तो सफेद बाल पुनः काले होने लगते हैं, और सिर के जिस भाग में टाट या गंज निकल आई हो, वहां पर नये बाल उगने लगते हैं।

★ यदि ज्यादा चलने से या किसी कारण से पैरों की नाड़ियां निकली हुई दिखाई दें, तो पानी में कुछ समय तक मूच्छित पारा रख कर केवल मात्र पानी का प्रयोग पांव धोने में किया जाय, तो जो नाड़ियां बाहर निकली हुई दिखाई देती हैं, वे लुप्त हो जाती हैं और पांव सुन्दर और सुडौल बन जाते हैं।

★ यदि इस पारद से युक्त जल से कुछ दिनों तक स्नान किया जाय, तो सारा शरीर गोरा, आकर्षक और चमकीला बन जाता है।

★ यदि मूच्छित किये हुए पारद से युक्तजल को चेहरा धोने में उपयोग लिया जाता है या ऐसे पानी से चेहरा धोया जाता है, तो वह चेहरा सुन्दर, आकर्षक और दिव्य बन जाता है।

★ यदि अपने वैद्य की सलाह ले कर ऐसे पारद का अत्यन्त क्षीण मात्रा में सेवन किया जाय, तो शरीर के अन्दर के रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं।

★ यदि मूच्छित पारद को चांदी के पात्र में रख कर उस पर पानी डाला जाय और इस प्रकार बार बार उस पानी को मूच्छित पारद पर डाला जाय और फिर उस पानी का प्रयोग गुप्तेन्द्रिय पर करें, तो उसकी नामर्दगी दूर हो जाती है, और वह पूर्ण यौवन सम्पन्न पुरुष बन जाता है।

वस्तुतः मूच्छित पारद अपने आप में अत्यन्त दिव्य और श्रेष्ठ फलदायक माना गया है, इसके माध्यम से दुष्कर और कठिन रोगों को भी समाप्त किया जा सकता है।

४– उत्थापन

● मूर्च्छन संस्कार सम्पन्न करने पर पारद में एक प्रकार की मूर्च्छना या असमर्थता आ जाती है, उसको दूर कर पुनः उसे वास्तविक स्वरूप में सम्पन्न करने की क्रिया को **उत्थापन संस्कार** कहा जाता है।

● यदि मूच्छित संस्कार सम्पन्न पारद को नींबू के रस में मर्दन करे, तो पारद का उत्थापन संस्कार सम्पन्न होता है और वह पुनर्जीवित होने लगता है।

● मूर्च्छन संस्कार के बाद पारे को नींबू के रस में तीन दिन तक पड़ा रहने दें, फिर तप्त खल्व में घोटे, तो उसका **उत्थापन संस्कार** सम्पन्न होता है।

● पारद से चौथा भाग हल्दी का चूर्ण तथा ग्वारपाठा मिला कर उसमें इस प्रकार के पारद का मर्दन करे, तो निश्चित रूप से उत्थापन क्रिया सम्पन्न होती है।

● सुहागा, नमक और शहद के साथ पारद को अच्छी तरह से घोट कर एक गोला बना लें, और फिर उसे पानी में डाल कर धीमी धीमी आंच से पकावे, तो उसका **उत्थापन संस्कार** सम्पन्न होता है।

● यदि दोला यन्त्र में नींबू का रस डाल कर पारद को रख कर पकावे, तो उत्थापन संस्कार भली प्रकार से सम्पन्न हो जाता है।

● यदि पारद को नींबू, बीजोरा और अम्ल के साथ तीन प्रहर तक मर्दन करे, और कपड़े से छान लें, तो निश्चय ही **उत्थापन संस्कार** सम्पन्न हो जाता है।

उपयोग

उत्थापित किया हुआ पारा अत्यन्त ही उपयोगी होता है, और रस शास्त्र के आचार्यों ने इसका अधिक महत्व बताया है।

★ उत्थापन सम्पन्न पारद को यदि तांबे के गिलास में दो घण्टे रख कर फिर वह पारा बाहर निकाल दें और उस पानी को पी लिया जाय, और ऐसा दिन में दो तीन बार करें, तो कुछ ही दिनों में व्यक्ति की हकलाहट समाप्त हो जाती है।

★ कई ग्रन्थों में बताया है, कि सर्प विष को समाप्त करने में ऐसा पारा

अत्यन्त उपयोगी है, जहां पर सांप ने काटा है, उस स्थान पर यदि उत्थापित किया हुआ पारद लगा लें, तो यह पारा कुछ ही क्षणों में सर्प विष खींच लेता है, और व्यक्ति विष के प्रभाव से बच जाता है ।

* यह पारद अतिसार में अत्यधिक उपयोगी है, जिसको अतिसार हो, या इससे संबन्धित पित्त की तकलीफ हो, तो इस पारे को गिलास में रख कर उस पानी का सेवन कुछ दिनों तक किया जाय, तो निश्चय ही अतिसार समाप्त हो जाती है ।

* यदि शरीर में अन्तर्दाह हो और पेट में जलन या एसिड बनता हो, और निरन्तर छाती में जलन या दाह अनुभव होती हो, तो इस पारे के प्रयोग से यह अन्तर्दाह समाप्त हो जाती है, पर यह ध्यान रखना चाहिए कि इस पुस्तक में जहां पर भी पारद के सेवन के बारे में लिखा है, वहां अपने वैद्य या डाक्टर से सलाह ले कर के ही उपयोग करना चाहिए ।

★ यदि सही तरीके से प्रसव नहीं हो रहा हो, तो उत्थापित किये हुए पारे की गोली सफेद मलमल में बांध कर कमर के नीचे बांध दें, तो तुरन्त प्रसव हो जाता है ।

५– पातन

यह पारे का पांचवा संस्कार है, इसे पातन, अधः पातन, ऊर्ध्व पातन या तिर्यक् पातन भी कहते हैं ।

पारद में स्वभावतः शीशा या रांगा मिला होता है, तब पातन संस्कार से उसका यह दोष दूर हो जाता है, और वह अपने स्वाभाविक स्वरूप में आ जाता है ।

● सज्जी खार, जवा खार, हींग, पांचों प्रकार के नमक तथा नींबू का रस ले कर उसमें पारद का मर्दन करें, तो उसकी पातन क्रिया सम्पन्न होती है ।

● तूतिये के साथ साथ पारद को मर्दन कर जल से धो कर साफ कर लें, तो पातन क्रिया सम्पन्न होती है ।

● पारद के बराबर गन्धक ले कर खरल में डाल कर उसको नींबू के रस में मर्दन करे तो उसका पातन संस्कार भली प्रकार से सम्पन्न होता है ।

● पातन संस्कार के लिए गन्धक, चित्रक, सेंधा नमक, तथा नींबू का रस मिला कर उसे घोटे, तो पातन संस्कार पूर्णता के साथ सम्पन्न होता है ।

● एक हस्त लिखित ग्रन्थ में बताया गया है, कि हल्दी, अंकोल, अमलतास, ग्वारपाठा, त्रिफला और नींबू का रस मिला कर यदि उसे इस प्रकार के पारद का मर्दन किया जाय, तो निश्चय ही पातन क्रिया सम्पन्न होती है ।

● यदि तूतिया, सोना माखी और घी ग्वार मिला कर पारद को उसमें घोटे, और जब ये तीनों मिल जाय, तो पारद का पातन संस्कार पूर्ण रूप से सम्पन्न हो जाता है ।

● **मेरा अनुभव यह हुआ है, कि यदि नींबू के रस में बराबर पारे को घोटते रहें, और फिर उसे धीमी-धीमी आंच में पका कर पानी उड़ा दें, तो पारद का पातन संस्कार पूर्णता के साथ सम्पन्न हो जाता है !**

उपयोग

यह अत्यधिक महत्वपूर्ण पारद कहा गया है, और सम्पूर्ण जीवन को अनुकूल बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है ।

* यदि किसी को गर्भ धारण नहीं हो रहा हो, या गर्भाशय में किसी प्रकार का दोष हो अथवा गर्भाशय में सूजन हो, तो इस पारद को गर्भाशय पर कुछ दिनों तक बांधने से गर्भाशय से संबंधित रोग समाप्त हो जाते हैं ।

* यदि गर्भाशय का मुंह टेढ़ा हो, और संतान नहीं हो पा रही हो, तब भी इस प्रकार के पारद का उपयोग किया जाता है ।

★ जिस पुरुष के वीर्य कणों में दुर्बलता हो, या वे मृत हों, या किसी प्रकार की कमजोरी हो, तो इस प्रकार के पारद को मलमल में रख कर

इन्द्रिय पर कुछ दिनों तक बांधने से वीर्य कण सजीव हो जाते हैं, उनकी निर्बलता दूर हो जाती है, और वह संतान पैदा करने में सक्षम हो जाता है।

* यदि स्त्री को मासिक धर्म नियमित नहीं आ रहा हो, या उसमें रुकावट हो, तो इस प्रकार के पारद को मासिक धर्म के कुछ दिनों पहले गुप्तेन्द्रिय पर बांधने से मासिक धर्म से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं।

* यदि किसी को कफ की तकलीफ हो, या छाती में कफ जम गया हो, तो इसकी हल्की सी मात्रा लेने से कफ दोष समाप्त हो जाता है।

* यदि कान का पर्दा कमजोर हो गया हो, या कम सुनाई दे रहा हो, तो पानी में इस प्रकार का पारद मिला कर उसकी एक दो बूंद नित्य कान में डाले, तो कान से संबंधित रोग समाप्त हो जाते हैं।

* यह क्षय रोग में बहुत अधिक सहायक है, और इस प्रकार के पारद को जल में मिला कर स्नान किया जाय, तो कुछ दिनों में क्षय रोग समाप्त हो जाता है।

६– रोधन

उपरोक्त प्रकार से जब पारद को मर्दन, मूर्च्छन और पातन संस्कारों से सम्पन्न करते हैं, तो उसमें नपुंसकता आ जाती है, इस नपुंसकता को दूर करने के लिए ही रोधन संस्कार की आवश्यकता होती है।

मर्दन, मूर्च्छन और पातन से पारद मृत्यु के निकट पहुंच जाता है, इसलिए पारद की शक्ति बढ़ाने के लिए उसका **रोधन संस्कार** सम्पन्न किया जाता है।

● इस प्रकार से संस्कारित पारे को कपड़े की पोटली में बांध कर पानी और सेंधा नमक मिला कर उसमें उस पारद को पकावे, तो पारद की नपुंसकता दूर होती है, और वह शुद्ध हो जाता है।

● पारद को सेंधा नमक के साथ मिला कर उसमें जल भर कर किसी

पात्र में रख कर जमीन में गाड़ दे, तो तीन दिन के बाद उसका रोधन संस्कार सम्पन्न हो जाता है।

● यदि पारद को सेंधा नमक तथा नींबू के रस के साथ मिला कर खरल में घोटे, तो ऐसा करने से उसका **रोधन संस्कार** सम्पन्न होता है।

● यदि गोमूत्र के साथ पारद को घोटा जाय, तो निश्चय ही उसका **रोधन संस्कार** सम्पन्न हो जाता है, और **पारद का मुंह खुल जाता है।**

● एक कांच की शीशी में पारद और गोमूत्र मिला कर एक हाथ गहरे गड्ढे में रख कर गड्ढा बन्द कर दे, तो तीन दिन के बाद पारद का रोधन संस्कार पूर्णता के साथ सम्पन्न हो जाता है।

उपयोग

* **रोधन युक्त पारद दिव्य और तेजस्वी पारद** कहा जाता है, और यह **कई प्रकार के रोगों में उपयोगी है।**

* यदि किसी को चक्कर आते हों, या रतौंधी का रोग हो, तो सिर पर मलमल के कपड़े में इसको रख कर बांधे, तो कुछ ही दिनों में रतौंधी का रोग समाप्त हो जाता है।

* यदि कमर का दर्द हो, या रीढ़ की हड्डी का कोई गुटका खिसक गया हो, तो उस स्थान पर इस प्रकार की पारद की गोली बांधे, तो निश्चय ही रीढ़ की हड्डी का रोग समाप्त हो जाता है, और कमर का दर्द मिट जाता है।

* यदि किसी को अस्थमा हो, या श्वास की बीमारी हो, तो यह अद्भुत रूप से सहायक है, पानी में इस प्रकार के पारद को कुछ घण्टे रख कर उस पानी का सेवन किया जाय, तो निश्चय ही समस्त प्रकार के श्वास रोग समाप्त हो जाते हैं।

* यदि दांत में कीड़ा हो, या पायरिया हो, तो पानी में इस प्रकार के

पारद को रख कर उस पानी से कुल्ले किये जांय, तो कुछ ही दिनों में पायरिया रोग समाप्त हो जाता है ।

★ यदि धातु संबंधी रोग हो, कमजोरी हो, नामर्दगी हो, तो यह पारद अपने आप में अत्यधिक तेजस्वी है, इसे नाभि के नीचे कपड़े में रख कर बांधे, तो वृद्ध व्यक्ति भी कामोत्तेजना से युक्त हो जाता है ।

★ यदि किसी के शरीर में पथरी हो, तो इस प्रकार का पारद अत्यन्त उपयोगी है, पथरी के स्थान पर इस प्रकार के पारद को बांधने से पथरी अन्दर ही अन्दर पिस कर समाप्त हो जाती है, और पेशाब के रास्ते से बाहर आ जाती है ।

★ यदि पेशाब से संबंधित रोग हो, रुक-रुक कर पेशाब आ रहा हो, तो पानी में कुछ समय इस प्रकार का पारद रख कर उस पानी को पी लिया जाय, तो पेशाब के रोग समाप्त हो जाते हैं ।

७— नियमन

रोचन संस्कार से **पारद चंचल हो जाता है, और उसका मुंह खुल जाता है,** तब उसकी चपलता और **चंचलता को दूर करने के लिए नियमन स्वरूप से** संस्कार किया जाता है ।

● इमली, भृंगराज, ककोड़ा, नागरमोथा तथा धतूरे के रस में इस प्रकार के पारद को घोटा जाय, तो उसका **नियमन संस्कार** पूर्णता के साथ सम्पन्न होता है ।

● भांगरा, नागरमोथा, इमली तथा नौसादर के साथ यदि पारद को घोटे, तो उसका नियमन **संस्कार** सम्पन्न होता है ।

● पारद को लहसुन, भांगरा और इमली के रस के साथ घोटने से उसका नियमन संस्कार होता है, **वह पारद वीर्यवान हो जाता है, और उसकी** चपलता दूर हो जाती है ।

● यदि असगन्ध, चित्रक, नमक और भांगरे के साथ-साथ नींबू मिला कर उसमें पारद को घोटे, तो उसका **नियमन संस्कार** पूर्ण हो जाता है ।

● यदि इमली, भांगरा, नागरमोथा, धतूरा, नमक और कांजी के रस के साथ पारद को घोटे, तो उसका प्रामाणिकता के साथ **नियमन संस्कार होता है ।**

वस्तुतः नियमन संस्कार से ही पारा पूर्ण रूप से शुद्ध स्वच्छ और आगे के कार्यों के लिए तैयार होता है, क्योंकि इससे उसकी चपलता, चंचलता व नपुंसकता पूर्ण रूप से दूर हो जाती है, और वह वीर्यवान हो कर स्वर्णग्रास लेने में समर्थ हो पाता है ।

उपयोग

यह अपने आप में अत्यन्त तेजस्वी पारद है, और वाजीकरण, वायु रोग आदि में अत्यन्त उपयोगी है ।

★ यदि पानी में इस पारद को रख कर वह पानी उपयोग में लिया जाय, तो व्यक्ति वीर्य स्तम्भन में सक्षम हो पाता है ।

★ यदि किसी को डायबिटीज या शर्करा की बीमारी हो, और यदि वह इस पारद से मिले हुए जल का सेवन करे, तो निश्चय ही शक्कर की बीमारी पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है ।

★ इसके माध्यम से सन्निपात, दुर्बलता, लड़खड़ाहट आदि रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं, हृदय रोगों में तो यह अत्यधिक उपयोगी है ।

★ यदि इसकी गोली बना कर बालक के गले में बांध दी जाय, तो बालक को किसी प्रकार का रोग नहीं होता, और वह पूर्णतः स्वस्थ रहता है ।

★ यदि बालक मन्द बुद्धि हो और शिक्षा में प्रगति नहीं कर रहा हो, तो इस पारद की गोली को गले में बांधे, तो स्मरण शक्ति बढ़ती है, और शिक्षा के क्षेत्र में वह पूर्ण उन्नति करता है ।

★ पीलिया रोग में यह पारद अत्यधिक उपयोगी है, इस पारद से संबंधित जल दो तीन दिन पीने से ही पीलिया रोग समाप्त हो जाता है।

८– दीपन

दीपन संस्कार से ही पारद में अन्य धातुओं को ग्रास करने की क्षमता आ पाती है, दीपन संस्कार के बाद ही पारद सर्व भक्षी होता है, और वह प्रत्येक धातु को अपने में पचा लेने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

● काली मिर्च, फिटकिरी, कांजी, सुहागा, पांचों प्रकार के नमक, राई और चित्रकमूल के साथ यदि इस प्रकार के पारद को घोट कर उसे मंद-मंद आंच में पानी के साथ पकावे, तो वह पारद अत्यन्त शक्तिशाली और **सभी प्रकार की धातुओं का ग्रास प्राप्त करने में समर्थ हो पाता है।**

● सुहागा, पांचों प्रकार के नमक, काली मिर्च, राई, जवाखार, चित्रक और फिटकिरी को बराबर मात्रा में ले कर उसमें पारद को घोटें, और फिर उसे पानी के साथ मिला कर हल्की आंच में पकावे, तो पारद का **दीपनसंस्कार संपन्न होता है, और धातुओं को ग्रास करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।**

● यदि फिटकिरी, सुहागा, नमक, राई, और कांजी के साथ पारद को घोटा जाय, तो वह पूर्ण रूप से बुभुक्षित हो जाता है, और वह **प्रत्येक प्रकार की धातु को अपने में पचा लेने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।**

● **जब पारद का दीपन संस्कार होता है, तब वह तीव्र वेगवान, निर्मल और बुभुक्षित हो जाता है, उसमें सब कुछ पचा लेने की क्षमता आ जाती है।**

● नमक, राई, मिर्च, फिटकिरी और सुहागे को कांजी में घोल कर उसमें इस प्रकार के पारद को रख कर यदि हल्की आंच से पकाया जाय, तो उसका **पारदसंस्कार** सम्पन्न होता है।

● यदि पारद को नींबू के रस में पकावे, तो उसका वीर्य और तेज बढ़ जाता है, **वह पूर्ण रूप से बुभुक्षित हो जाता है,** और उसका भली प्रकार से **दीपन संस्कार** हो जाता है।

● यदि सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, पांचों प्रकार के नमक और फिटकिरी में पारे को मिला कर उसे पकावे, तो निश्चय ही उसका **दीपनसंस्कार** सम्पन्न होता है।

● मेरे अनुभव में यह आया है, कि यदि नमक और नींबू का रस मिला कर उसमें पारद को घोटा जाय, तो **पारद पूर्ण रूप से उज्ज्वल,** वीर्यवान और **बुभुक्षित हो जाता है।**

● यदि पारद को नींबू के रस में घोट कर उसे नींबू के रस में ही धीरे-धीरे पकावे, तो पारद अत्यन्त वेगवान और बुभुक्षित हो जाता है, और वह सभी प्रकार की धातुओं को खा कर अपने आप में पचा लेता है।

बुभुक्षित पारद की यह विशेषता होती है, कि भले ही ऐसा पारद पांच तोला ही हो, पर वह लगभग एक किलो स्वर्ण खा कर अपने आप में पचा लेता है, फिर भी उस पारद का वजन नहीं बढ़ता, और वह वजन में मात्र पांच तोला ही रहता है।

उपरोक्त आठों संस्कार सम्पन्न करने पर ही पारद अत्यन्त शुद्ध, वीर्यवान, ताकतवान और बुभुक्षित होता है, उसके समस्त दोष समाप्त हो जाते हैं, और ऐसा ही पारद स्वर्ण बनाने के लिए काम में लिया जाता है।

ऊपर मैंने पारद के आठ संस्कार बताये हैं, इस विषय में जिज्ञासु व्यक्तियों को चाहिए कि वे अपने हाथ से इन आठों संस्कारों को सम्पन्न करे, अथवा इस प्रकार आठों संस्कारों से सम्पन्न पारद अपने गुरू से प्राप्त कर स्वर्ण बनाने के लिए उसका प्रयोग करे।

यदि ऐसा पारद प्राप्त हो जाता है, तो निश्चय ही वह आगे बढ़ कर स्वर्ण **सिद्धि प्राप्त कर लेता है, और अपने लक्ष्य में पूर्ण सफलता** प्राप्त कर लेता है।

उपयोग

★ यह सौभाग्यदायक पारद कहा गया है, यदि इस पारद में मिले हुए

जल से स्त्री स्नान करे, तो उसके शरीर की झुर्रियां पूर्ण रूप से मिट जाती है, और शरीर की त्वचा ताजी तथा चमकदार बन जाती है।

★ यदि इस प्रकार के पारद की गोली अपने कमर में बांधे, तो स्त्री पूर्ण कामोत्तेजक रहती है, और वह पुरुष को अत्यधिक सुख प्रदान करने में समर्थ होती है।

★ यदि इस प्रकार के पारद की गोली कुछ समय तक गले में धारण किये रहे, तो स्त्री का गया हुआ यौवन लौट आता है, और वह अत्यधिक सुन्दर और आकर्षक बन जाती है।

★ यदि इस प्रकार के पारद को तेल में मिला कर उसका लेप वक्षस्थल पर करे, तो उनकी कमजोरी, वक्ष-संकुचन समाप्त हो जाता है और उरोज पुष्ट तथा सुन्दर बन जाते हैं।

★ यदि इस पारद की गोली को जल में डाल कर उस पानी से सिर के बाल धोये, तो स्त्री के बाल लम्बे, घने, काले और चमकदार हो जाते हैं।

★ इस पारद की गोली को नित्य शरीर पर रगड़े, तो शरीर पर पाये जाने वाले सफेद दाग, चकत्ते निशान, व्रण, मस्से आदि समाप्त हो जाते हैं, और निश्चय ही सारा शरीर आकर्षक और सुन्दर बन जाता है।

★ यह वशीकरण गुटिया कही जाती है, जो भी इस गुटिका को धारण किये रहता है, वह किसी को भी सम्मोहित करने में सक्षम होता है।

★ यदि इस गुटिका को कमर में बांध कर स्त्री गर्भ धारण करे, तो गर्भ-च्युत नहीं होता।

★ इस गुटिका को गले में बांधा जाय, तो उस पर कोई तांत्रिक प्रभाव व्याप्त नहीं होता।

★ इस प्रकार की पारद गुटिका नित्य शरीर पर एक बार घुमावे, तो उस स्त्री का सौन्दर्य एवं यौवन खिल उठता है।

★ यह "काया कल्प गुटिका" कही जाती है, इसे धारण करने से पुरुष या स्त्री का गया हुआ यौवन लौट आता है।

पारदेश्वर

ऊपर मैंने पारद के आठों संस्कार स्पष्ट किये हैं, और यदि व्यक्ति चाहे तो इन तरीकों को अपना कर पूर्णता के साथ पारद संस्कार सम्पन्न कर सकता है, यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, कि बाजार में जो पारद मिलता है, वह अशुद्ध असंस्कारित एवं मल युक्त होता है, उसमें कई प्रकार के दोष होते हैं, अतः ऐसे पारद से स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो सकती।

साधक को चाहिये, कि वह कहीं से भी पूर्ण आठों संस्कार सम्पन्न पारद को ही प्रयोग में लावे, पारद को संस्कारित करने के लिए यह जरूरी है, कि पहले उसका पहला संस्कार सम्पन्न करे, पहला संस्कार सम्पन्न करने के बाद जो पारद प्राप्त होता है, उसी से उसका दूसरा संस्कार सम्पन्न करे, और इसी प्रकार क्रमशः संस्कारित पारद को उपयोग में लेते हुए ही, उसके आठवें संस्कार को सम्पन्न करे।

जब आठों संस्कारों से सम्पन्न पारद प्राप्त हो जाता है, तब वह पारद पूर्ण रूप से शुद्ध, चैतन्य और बुभुक्षित होता है, ऐसे पारद में चपलता और चंचलता नहीं रहती, और यदि ऐसे पारद का शिवलिंग बनाया जाय, तो अपने आप में अद्भुत, तेजस्वी तथा वरदायक शिवलिंग बनता है, सही अर्थों में ऐसे शिवलिंग को ही "पारदेश्वर शिवलिंग" कहा गया है।

जिसके घर में ऐसा शिवलिंग होता है, उस व्यक्ति की कोई तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि उसके घर में केवल पारदेश्वर शिवलिंग ही स्थापित नहीं होते, अपितु भगवती लक्ष्मी, अन्नपूर्णा और कुबेर भी साथ ही साथ घर में स्थायी रूप से स्थापित हो जाते हैं, और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

ऐसा पारदेश्वर शिवलिंग एक तोले का, पांच तोले का, ग्यारह तोले का, इक्कीस या इक्यावन तोले का अथवा एक सौ आठ तोले का सम्पन्न किया जाता है, जिसके नीचे पूर्ण आधार और योनि हो, तथा उस पर शिवलिंग पूर्णता के साथ स्थापित हो, ऐसे शिवलिंग को जो साधक अपने जीवन में अपने गुरु से प्राप्त करता है, वह सही अर्थों में सौभाग्यशाली व्यक्तित्व होता है।

परन्तु आज कल बाजार में नकली तरीके से भी पारद का मुर्च्छन संस्कार सम्पन्न कर उससे शिवलिंग का निर्माण कर लिया जाता है, क्योंकि बाजार में जो पारा मिलता है, वह दोष युक्त होता है, फिर उसमें नीला थोथा या नमक मिलाने से वह विशेष दोष युक्त बन जाता है, परन्तु ऐसा पारद मूर्च्छित भी हो जाता है, और उससे शिवलिंग का निर्माण हो सकता है।

परन्तु ऐसे शिवलिंग को सही अर्थों में पारदेश्वर नहीं कहा जा सकता, ऐसा शिवलिंग प्रामाणिक, शुद्ध और चैतन्य भी नहीं होता, ऐसे पारदेश्वर शिवलिंग वरदायक भी नहीं होते, इसलिए जो सौभाग्यशाली व्यक्ति होता है, जो अपने घर में इस प्रकार के पारदेश्वर को स्थापित करना चाहता है, उसे चाहिए कि या तो वह स्वयं इन आठों संस्कारों को सम्पन्न कर पारदेश्वर का निर्माण करे, या फिर गुरु की सेवा कर उनके द्वारा २१ तोले का प्रामाणिक शिवलिंग निर्माण करावे, और उसे अपने घर में स्थापित करे, साथ ही ऐसे पारद से ही भगवती लक्ष्मी का निर्माण भी करे, और उसे अपने घर के पूजा स्थान में अग्नि कोण में स्थापित करे।

वस्तुतः ऐसे सौभाग्यशाली व्यक्ति की तुलना हो ही नहीं सकती, देवता लोग भी ऐसे व्यक्ति के भाग्य से ईर्ष्या करते हैं, जिसके घर में ऐसा पारदेश्वर स्थापित हो, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, और लक्ष्मी स्वयं उसके घर में हाथ बांधे हुए खड़ी रहती है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे विजय प्राप्त होती रहती है और वह मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर पूर्ण ऐश्वर्यवान बन जाता है।

ऐसे घर में लक्ष्मी पूर्ण रूप से चैतन्य हो कर स्थापित हो जाती है, और धन, धान्य, धरा, भवन, कीर्ति, आयु, यश, दीर्घायु, पुत्र, पौत्र, वाहन और सम्पूर्ण

सिद्धियों के साथ लक्ष्मी का निवास उसके घर में होता है।

स्वयं भगवान शिव ने कहा है—

पारदेश्वर स्थापित्यं लक्ष्मीं सिद्धि तद् गृहे ।
धनं धान्यं धरा पौत्रं पूर्ण सौभाग्य वै नरः ॥

जिसके घर में मैं आठों संस्कार युक्त पारद से निर्मित पारदेश्वर बन कर स्थापित होता हूं, उसके घर में मेरे साथ-साथ कुबेर, लक्ष्मी और सौभाग्य निश्चय ही स्थापित होते हैं, उसके जीवन में धन की कमी नहीं रहती।

विश्वामित्र ने एक स्थान पर इस प्रकार के पारदेश्वर की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है, कि आठों संस्कार सम्पन्न पारदेश्वर को प्राप्त करना ही जीवन का सौभाग्य है, जिसके घर में ऐसा पारदेश्वर स्थापित है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव हो ही कैसे सकता है ?

यः नरः प्राप्यते सिद्धि पारदेश्वर संस्करः ।
अभावः दुःख दारिद्रय किं प्राप्यते त्वं च द ॥

वशिष्ठ ने अपने ग्रंथ में कहा है कि—

पारदेश्वरं स्थापित्यं सर्व पाप विमुच्यते ।
सौभाग्यं सिद्धि प्राप्यन्ते पूर्ण लक्ष्मी लभेत् नरः ॥

चाहे व्यक्ति ने जितने ही पाप किये हों, चाहे उसके जीवन में पूर्व जीवन कृत दोष हों, चाहे विधाता ने उसके जीवन में सौभाग्य लिखा ही नहीं हो, फिर भी यदि वह अपने घर में पारदेश्वर को स्थापित करता है, या उसका दर्शन करता है, तो उसके समस्त दोष मिट जाते हैं और वह पूर्ण सौभाग्य शाली बन जाता है।

पारदेश्वर का दर्शन ही जीवन का सौभाग्य है, इसके दर्शन से जीवन के पाप दोष और दुर्भाग्य समाप्त होते हैं, और वह जीवन में जो भी कामना करता है, उसकी प्राप्ति सहज संभव है।

पारदेश्वर पुण्यं वै सर्व पाप विमुच्यते ।
दुर्भाग्यं दोष नश्यन्ते इच्छा पूर्ति प्रलभ्यते ॥

एक अन्य स्थान पर भगवान पारदेश्वर के बारे में महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है —

किं दारिद्रयं दुखं पापं किं दोषं रोग शोक च ।
पारदेश्वर यदं साक्षात् पूर्णं सौभाग्य प्राप्यते ॥

मुझे समझ में नहीं आता, कि मनुष्य के जीवन में दरिद्रता क्यों है, वह दुखी संतप्त और पीड़ित क्यों है, उसके जीवन में अभाव और बाधाएं क्यों हैं, जब कि उसके पास आठों संस्कार युक्त पारद से निर्मित भगवान पारदेश्वर की प्राप्ति सहज संभव है।

महर्षि कणाद ने पारदेश्वर का वर्णन कई स्थानों पर किया है—

पारदेश्वर देवं वै पूर्ण सिद्धि लभेत् सदः ।
ज्ञान विज्ञान सौभाग्यं प्राप्यते भव दर्शनात् ॥

मैंने जीवन में जो भी सिद्धियां प्राप्त की, अणु के क्षेत्र में जो भी विज्ञान हस्तगत किया, मैं जो भी हूं, और जो कुछ पूर्णता प्राप्त की है, उसका एक मात्र श्रेय पारदेश्वर का स्थापन और उसका नित्य पूजन है।

लक्ष्मी उपनिषद में स्वयं लक्ष्मी ने कहा है —

यत्र पारदेश्वरं देवं तत्रऽहं वर सिद्धि युत् ।
तत्र नारायणो साक्षात् तत्र त्रैलोक्य सम्पदाः ॥

जहां पर भगवान पारदेश्वर स्थापित हैं, वहां मैं अपने समस्त वरदायक तत्वों के साथ स्थापित होने के लिए बाध्य हूं, जहां पर भगवान पारदेश्वर हैं, वहां साक्षात् नारायण उपस्थित हैं और जहां नारायण हैं, वहां मेरी उपस्थिति अनिवार्य है।

एक अन्य स्थान पर लक्ष्मी ने कहा है —

पारदेश्वर सिद्धि वै साफल्यं लक्ष्मी च श्रियं ।
कनक वर्षा, धनं पुत्रं पौत्र सौभाग्य वै नरः ॥

कलियुग में जीवन की पूर्णता, सम्पन्नता, श्रेष्ठता और सफलता का एक मात्र उपाय भगवान पारदेश्वर के दर्शन हैं, अतुलनीय धन और सौभाग्य प्राप्त करने का एक मात्र साधन भगवान पारदेश्वर का पूजन है, और घर में धन, धान्य, सुख, सौभाग्य, पुत्र, पौत्र और कनक वर्षा के लिए एक मात्र उपाय इस प्रकार के पारदेश्वर को प्राप्त करना है, और घर में स्थापित करना है।

भगवत्पाद शंकराचार्य ने अत्यन्त भाव विभोर शब्दों में कहा है,—

या: गृहे पारदेश्यं स्यात् सहस्रं सिद्धि तद् गृहे ।
किं जपः मंत्र सिद्धि किं यत्र देवं प्रतिष्ठये ॥

जिसके घर में आठों संस्कारों से युक्त निर्मित पारदेश्वर स्थापित हैं, उसे हजारों हजारों सिद्धियां तो स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, उसे मंत्र जप या साधना करने की क्या आवश्यकता है, सफलता के लिए उसे अन्य उपाय करने की जरूरत ही क्या है?

एक अन्य स्थान पर भगवत्पाद ने कहा है—

स्वर्णवर्षा च सौभाग्यं ऐश्वर्यं अभिवृद्धये ।
लक्ष्मी सहस्र रूपेण यद् गृहे पारदेश्वरः ॥

यदि घर में स्वर्ण की वर्षा निरन्तर देखना चाहें, यदि घर में अखण्ड

सौभाग्य और ऐश्वर्य देखना चाहें, यदि सम्पन्नता और पूर्णता देखना चाहें, तो जीवन में मात्र एक उपाय भगवान पारदेश्वर को घर में स्थापित करना और उनका पूजन करना है।

योगीराज गोरखनाथ ने पारदेश्वर को स्थापित करने के बाद उसके अनुभवों को और सफलता को अनुभव कर कहा है—

पारदेश्वर पूर्णं वै साक्षात् तंत्राधिऽस्थितः।
प्राप्यते सर्व सिद्धि वै न न्यूनं तद् गृहे क्वचित्॥

तंत्र में सिद्धि, पारदेश्वर के माध्यम से ही सम्भव है, प्रकृति को नियंत्रण में लेने की क्रिया पारदेश्वर प्रयोग ही है, जीवन में जो कुछ चाहे, जिस प्रकार चाहे और वह प्राप्त हो, इसका एक मात्र आधार पारदेश्वर का पूजन, प्रयोग और चिन्तन है।

रावण ने पारदेश्वर का निर्माण कर उसकी साधना से अपनी नगरी को स्वर्णमयी बना कर यह सिद्ध कर दिया, कि पारदेश्वर की साधना से सब कुछ संभव है।

पारदेश्वर महादेव स्वर्ण वर्षा करोति य।
सिद्धिदं ज्ञानदं मोक्षं पूर्ण लक्ष्मी कुबेरयः॥

रावण ने एक अन्य स्थान पर कहा है,— मैंने यह अनुभव किया है, कि पारदेश्वर के स्थापन, पूजन और साधना के आगे अन्य सभी साधनाएं, प्रयोग और उपाय तुच्छ हैं, केवल पारदेश्वर के स्थापन से ही स्वर्ण वर्षा, स्वर्ण निर्माण और स्वर्ण नगरी प्रक्रिया सम्भव है।

कुबेर ने यक्ष को एक स्थान पर कहा है—

यत्र पारदेश्वरं देवं तद् गृहे लक्ष्मी च स्वयं।
सुखः सौभाग्य ऐश्वर्यं सिद्धि प्राभुत्य पूर्णतः॥

जहां पर भगवान पारदेश्वर स्थापित हैं, वहां मैं समस्त आयुधों के साथ स्थापित हूं, जहां भगवान पारदेश्वर हैं, वहां समस्त रूपों में लक्ष्मी स्थापित हैं, जहां भगवान पारदेश्वर हैं, वहां सौभाग्य, धन, ऐश्वर्य, प्रभुता और पूर्णता है।

एक स्थान पर स्वयं इन्द्र ने कहा है—

दर्शनं इन्द्र पद प्राप्तं स्थापनंऽनंग यौवनं
सौन्दर्य, यौवनं लक्ष्यं वश्यं विश्वं सदा नरः॥

पारदेश्वर के दर्शन से ही इन्द्र पद प्राप्ति संभव है, पारदेश्वर स्थापन से व्यक्ति कामदेव के समान सुन्दर और स्त्री रति के समान सौन्दर्यवती बन जाती है, जहां पर भगवान पारदेश्वर हैं, और जो व्यक्ति इसके दर्शन करता है, वह नपुंसक रह ही नहीं सकता, उसके शरीर में जोश, प्रवाह, यौवन, तेजस्विता, और प्रभाव स्वतः रहता है।

यद् गृहे पारदं लक्ष्मी पारदेश्वरमेव च।
अटूट धन सम्पत्ति भोगं मोक्षं तदावसेत्॥

जिस घर में पारद से निर्मित लक्ष्मी की मूर्ति हो, और अष्ट संस्कार युक्त पारदेश्वर स्थापित हो, वहां कई-कई पीढ़ियों तक अटूट धन सम्पत्ति बनी रहती है, ऐसा व्यक्ति जीवन में भोग और मोक्ष दोनों पुरुषार्थ एक साथ प्राप्त करने में सफल होता है।

वस्तुतः पारदेश्वर के बारे में पारद ग्रन्थों में इतना अधिक लिखा हुआ है, कि उन सब को इन पत्रों में समेटना कठिन है, परन्तु मेरा अनुभव यह रहा है, कि वस्तुतः आठों संस्कार सम्पन्न पारद से पारदेश्वर का निर्माण या उसकी प्राप्ति और उनका घर में स्थापन जीवन का सौभाग्य है, लक्ष्मी की पूर्णता है, ऐश्वर्य और आनन्द का पूर्ण रूप से साम्राज्य है।



स्वर्ण निर्माण

पीछे के अध्याय में मैंने पारद और उसके संस्कार स्पष्ट किये हैं, स्वर्ण निर्माण की प्रक्रिया यह है, कि एक धातु का दूसरी धातु में बदल जाने का रहस्य है, विज्ञान का सर्व सामान्य तथ्य यह है, कि किसी परमाणु के भीतर किसी विशेष शक्ति के द्वारा हलचल मचाई जा सके, और उस परमाणु के भीतर स्थित प्रोटान और इलेक्ट्रान की संख्या को कम या ज्यादा किया जा सके, तो हीन तत्व उच्चस्तरीय धातु में परिणित हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए पारे के अणु में २०० प्रोटान हैं, और स्वर्ण अणु में प्रोटान की संख्या १९७ है, इसका मतलब यह हुआ, कि किसी युक्ति से पारे के अणु में से मात्र तीन प्रोटान निकाल दिये जांय, तो वह निश्चय ही स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगा।

इसी तरह शीशे के परमाणु में प्रोटान की संख्या २०७ है, और स्वर्ण में प्रोटान १९७ है, यदि किसी तरीके से शीशे में से मात्र १० प्रोटान कम कर दिये जांय, तो वह आसानी से स्वर्ण बन सकता है।

ध्यान देने वाली बात यह है, कि पारे में मात्र २०० प्रोटान है, और वह सोने के अत्यन्त निकट है, क्योंकि सोने में मात्र १९७ ही प्रोटान होते हैं, इसी प्रकार शीशे में प्रोटान की संख्या २०७ है, इस वजह से इन दो धातुओं के माध्यम से आसानी से स्वर्ण बनाया जा सकता है।

परमाणुओं को अलग करने या उनमें हलचल मचाने के लिए एक यंत्र है, जिसका नाम "साइक्लोट्रोन" है, यदि इसको गति दी जाती है, तो परमाणु में बहुत तेजी से वेग पैदा हो जाता है।

उदाहरण के लिये पदार्थ विज्ञान के अनुसार तांबा और जस्ता मिल कर पीतल बनता है, और देखा जाय तो पीतल से सोने में बहुत अधिक समानता है, पर तीन कारण ऐसे हैं, जिससे स्वर्ण मूल्यवान पदार्थ है, और पीतल सामान्य, एक तो पीतल हल्का है, और सोना वजनदार है, दूसरा पीतल सख्त होता है, और सोना नर्म धातु है, और तीसरा पीतल को रगड़ने से कालिख निकलती है, जब कि सोने में नहीं निकलती है।

इसका कारण यह है, कि पीतल में ये तीन दोष हैं, और यदि इन तीनों दोषों को निकाल दिया जाय, तो ताम्र पूर्ण रूप से शुद्ध बन सकता है, और यदि शुद्ध पारे में शुद्ध ताम्र को मिला दिया जाय, तो जो धातु बनेगी वह निश्चय ही स्वर्ण होगी।

जैसे कि मैंने बताया कि ताम्र को शुद्ध करने की जरूरत है, इसे पूर्ण रूप से शुद्ध करने और इसमें से तीनों दोष निकालने के कई उपाय और प्रयोग रस शास्त्र ग्रन्थों में दिये हुए हैं, रससार पद्धति में बताया गया है, "यावन्निर्मलता येति तावत्ताम्र विशोधयेत्" अर्थात् ताम्र को निर्मल बनाने के लिए कई पद्धतियां हैं, जिसके माध्यम से ताम्र को पूर्ण शुद्ध बना कर उसे स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

रस रत्नाकर के ऋद्धिखण्ड में स्वर्ण बनाने के कई नुस्खे दिये हैं, जिसमें बताया गया है।

१- भागत्रयं शुद्ध सूतं भागेकं शुद्ध हाटकम् ।

२- अम्लेन मर्दमेत्यामं ख्यातेयं स्वर्ण पिष्टिका ।

३- गन्ध पिष्टि हेमपित्वा समयावेष्टयेद्बहिः ।

४- शुल्वं नागं बंगघोषं यथेष्टेकं विचूर्णयेत् ।
तत्समं तीक्ष्ण चूर्णं च त्ववेध मूषागतं धमेत्
एतत् खोटं विचूर्णाय सिद्ध चूर्णेन संयुताम्
पूर्ववत् क्रम योगेन तारमायाति कांचन ॥

इसी प्रकार इस ग्रन्थ में शुद्ध शीशे के माध्यम से भी स्वर्ण बनाने के प्रयोग दिये हैं, एक उदाहरण पर्याप्त होगा –

५– अथान्यस्य च ताम्रस्य नाग शुद्धस्य कारयेत् ।
निगुण्डिका रसेनैव पंचाशद्वार क्षालनम्
कूष्माण्डस्य रसेनैव सप्तवारं तु क्षालनम्
निशायुक्तेन तक्रेण सप्तवारं तु क्षालनम्
द्रावंतामद्रुतं क्षाल्यं कालिका रसहृत् भवेत्
एतत्ताम्रं त्रिभागंस्याद्भागा पंचैव हाटकम् ।
रौप्य भागद्वयं शुद्ध सर्वं मावर्तयेत्ततः
जायते कनकं दिव्यं पुरा नागार्जुनोहितम् ।।

अभी तो मैं केवल अलग अलग ग्रन्थों में स्वर्ण बनाने के बारे में जो क्रियाएं दी हुई हैं, उनका उल्लेख कर रहा हूं, जिससे यह स्पष्ट हो सके, कि स्वर्ण बनाने की प्रक्रिया नई नहीं है, अपितु प्राचीन ग्रन्थों में इसके प्रामाणिक विवरण हैं, और इन विवरणों को पढ़ कर या समझ कर स्वर्ण का निर्माण भली प्रकार से सम्पन्न किया जा सकता है ।

इसके बाद मैं इस संबंध में मेरे जो अनुभव हैं, उनको मैं सरल भाषा में स्पष्ट करूंगा, जिससे पारद या शीशे से स्वर्ण का निर्माण संभव है ।

रसोपनिषत् ग्रन्थ में एक क्रिया बताई है, जिसका नाम ग्रन्थकार ने "लक्ष्मीपति क्रिया" स्पष्ट की है, और इसके माध्यम से स्पष्ट किया है, कि यह प्रयोग पूर्ण रूप से स्वर्ण बनाने में सहयोगी है, और जीवन भर की दरिद्रता इसके माध्यम से समाप्त की जा सकती है ।

तेनैव विधयेतारं भवेद्धे मं न संशयः
वर्णप्रसादनार्थं तु क्षिपेद्धे माष्टकं पुनः
एष लक्ष्मीपतिर्नाम क्रिया दारिद्र्यनाशिनी ।

अर्थात् ताम्र को पूर्ण रूप से शुद्ध करके उसे पारद के साथ मिला कर जब चूर्ण बन जाय, तो बिजौरे के रस में सात दिन तक घोटे, और फिर उसको पानी में उबाल कर स्वच्छ करें, तत्पश्चात् इस पदार्थ को नींबू में घोटा जाय, तो वह निश्चय ही स्वर्ण बन जावेगा, इस क्रिया को "लक्ष्मीपति क्रिया" कहते हैं, और इससे पूरे जीवन की दरिद्रता समाप्त हो जाती है ।

नागार्जुन अपने आप में प्रसिद्ध रस विज्ञानी हो चुका है, और उसने विविध पदार्थों से स्वर्ण निर्माण सम्पन्न करके यह बता दिया, कि यह विज्ञान अपने आप में प्रामाणिक और पूर्ण है, उसने "नागार्जुन संहिता" में स्पष्ट किया है,–

सूतकाभ्रकयोर्द्वे द्वे तालकापलपञ्चकम्
तारवंगद्रुते सूते तालकप्रतिवापिते ।
पले पक्वरसैर्युक्तं वंगतारपलं पलम्
यवक्षाराक्षकासीसं स्वर्जि(च) कांचनसैन्धवम् ।

अर्थात् यवक्षार, नीला थोथा, कसीस, सज्जीखार और सेंधा नमक–ये बराबर मात्रा में ले कर नींबू के रस में घोटे, और फिर इसे पारद में मिला दें, दोनों मिल जाय, तब हरताल का पानी थोड़ा-थोड़ा डाल कर पकावे, चार घण्टे के बाद पकने पर वह पारद पूर्ण रूप से स्वर्ण बन जाता है ।

गोविन्दाचार्य ने स्वर्ण निर्माण के बारे में एक विशेष प्रयोग अपने ग्रन्थ "स्वर्ण-योग" में दिया है —

तस्य शुल्वस्य चैकेन रंजितं द्विगुणं भवेत्
कांचनस्य तु भागेन श्रोयित्वा द्रवीकृतम् ।
निषेकं मधुमिश्रं च क्षीरसर्पिर्गुलान्वितम्
तद्भवेत्कांचनं श्रेष्ठं जाम्बूनदसमप्रभम् ।।

अर्थात् ताम्र को शुद्ध कर उसका चूर्ण करें, और फिर इसमें तुलसी का रस मिला कर तीन दिन तक घोटे, तत्पश्चात् इसके बराबर भाग में मुमुक्षित पारद

मिला दें, और आग पर चढ़ा कर धीरे-धीरे सुहागे का पानी डालते रहें, इस प्रकार मात्र चार घण्टे पकाने पर वह पारद पूर्ण रूप से स्वर्ण बन जाता है।

हीयकाचार्य का नाम स्वर्ण विज्ञान में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और उन्होंने अपने ग्रंथों में स्वर्ण बनाने की कई विधियां दी हैं, उन्हें प्रयोग में लाने पर सारी विधियां प्रामाणिक अनुभव हुई हैं, उन्होंने स्वर्ण बनाने की क्रिया इस प्रकार से प्रस्तुत की है—

रजतारिष्टमावत्य तनुपात्राणि कारयेत्
तत्पत्रलेपनं कृत्वा गोमयाग्नौ पुटे पचेत् ।
एकविंशति काराणि यावत्तारावशेषितम्
तदावर्त्य निषेकं स्याद् गव्यं मधुगुणान्वितम् ॥
भवेत् कनकं श्रेष्ठं जाम्बूनदसमप्रभम् ॥

अर्थात् दस भाग पीपली का चूर्ण ले, फिर उसमें समुद्री नमक बराबर मात्रा में मिला कर उससे आधा नाग भस्म मिला दें, फिर इन सबको मिला कर पानी में पकावे, और पकने के बाद उसे बाहर निकाल कर नीबू के रस में लगभग छः घण्टे घोटे, तो यह श्रेष्ठ स्वर्ण बन जाता है

रसतरंगिणी ग्रंथ अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है उसमें स्वर्ण बनाने की कई विधियां दी है,—

दीपशिखा तु विबचेत् क्षारमूत्रे तथैव च
भावयित्वा तु बहुशो निवर्तेस्थाप्य बुद्धिमान्
तच्चूर्णं वा शतांशेन तारं कुर्वन्ति कांचनम् ।

अर्थात् दस भाग गन्धक, इसकी बराबर मात्रा में सेंधा नमक, मनसिल और पारद को बराबर मात्रा में ले कर नीले थोथे में घोटे, और जब भली प्रकार से घुट जाय, तो बिजौरे के रस में इसे भावना दें, भावना देते ही, पूर्ण रूप से वेध क्रिया हो जाती है, और वह पारद स्वर्ण बन जाता है।

पिछले पृष्ठों में मैंने महेश्वर परशुराम संवाद युक्त ग्रन्थ का उल्लेख किया है, जो कि इस समय उपलब्ध है, इसमें स्वर्ण बनाने की कई विधियां दी हैं, उसमें से एक प्रयोग दे रहा हूं—

पारदं पलमेकं च पलैकं तालकं तथा
तत्समं गंधकं क्षिप्त्वा रविदुग्धेन मर्दयेत्
तत्सर्वं गोलकं कृत्वा स्थलिकायां विनिक्षिपेत्
तन्मुखे मुद्रिकां दत्वा दीपाग्निं च प्रदापयेत्
कांचनं जायते दिव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥

अर्थात् एक भाग पारद, एक भाग हरताल, एक भाग गन्धक इन तीनों को मिला कर आक के दूध में अच्छी तरह से खरल करें, जब ये तीनों पदार्थ परस्पर मिल जाय, तब एक कड़ाही में दस किलो पानी रख कर उसके बीच में उपरोक्त पदार्थ का गोला बना कर रख दें, और उस पर उलटा कटोरा रख दें, और फिर दस घण्टे तक धीमी आंच से उस पानी में इसे पकावे, तो निश्चय ही वह पारद स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।

गोविन्दपादाचार्य ने "रसहृदयतंत्र" में स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया का उल्लेख इस प्रकार से किया है -

स्नुहीक्षीरेण संपिष्ट्वा मुद्रेयंमदनाभिधा
पारदं गंधकं चोभौ नारीक्षीरेण मर्दयेत् ।
तद् गोलं छायया शुष्कं थाली यंत्रे विनिक्षिपेत्
दीपाग्नि च प्रकुर्वीत कांचनं जायते ध्रुवम् ॥

अर्थात् पारद व गन्धक को बराबर मात्रा में ले कर मधु में उसे खरल करें, और फिर थाली में यंत्र रख कर "मर्दन मुद्रा" से संधिबद्ध कर पानी में रख कर दीपाग्नि पर तपावे, तो उसमें रखा हुआ पारद पूर्ण रूप से स्वर्ण बन जाता है।

इसके अलावा भी वर्तमान में ऐसे ग्रंथ है, जो प्रकाशित हैं, और उनमें स्वर्ण

बनाने की विधियां प्रामाणिकता के साथ दी हैं, जो पाठक इस क्षेत्र में रुचि रखता है, और जो पाठक गहराई के साथ आगे बढ़ कर इसका अध्ययन करना चाहता है, उसे चाहिए कि वह इन सैकड़ों प्रामाणिक ग्रन्थों में से निम्न ग्रंथों का अवश्य ही अध्ययन करें, क्योंकि इन ग्रन्थों में स्वर्ण बनाने से संबंधित जो कुछ क्रियाएं दी हुई हैं वे प्रामाणिक हैं और उसके माध्यम से क्रिया सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होती है।

वे ग्रंथ इस प्रकार है—

१- रसार्णव
२- रसेन्द्रचिन्तामणि
३- रसरत्नाकर
४- रसहृदय
५- रसकामधेनु
६- रससारोद्धारपद्धति
७- रसराजलक्ष्मी
८- रसपारिजात
९- रसेन्द्रकल्पद्रुम
१०- निघंटुकार
११- रसराजपद्धति
१२- रसकल्पतरु
१३- काकचण्डीश्वरातन्त्र
१४- रसराजशंकर
१५- रसपद्धति
१६- योगसार
१७- धरणीधरसंहिता
१८- रसप्रदीप
१९- टोडरानन्द
२०- रससार
२१- रसरत्नसमुच्चय
२२- रससंकेत कलिका
२३- रसकामधेनु
२४- रसपारिजात

स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया जब साधक या व्यक्ति सीख लेता है, तो आगे चल वह इसी के माध्यम से **पारसमणि निर्माण** करने की प्रक्रिया समझ लेता है, क्योंकि इसके आगे का स्तर ही पारसमणि निर्माण है, पारसमणि के बारे में जन-साधारण में यह तथ्य प्रचलित है, कि इसको यदि किसी लोहे से स्पर्श करा दिया जाय, तो वह लोहा तुरन्त सोने में बदल जाता है।

इससे संबंधित एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ **"वच्योवन"** अभी-अभी प्राप्त हुआ है, जिसमें पारद से ही पारसमणि बनाने की क्रिया प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट की है, वास्तव में ही यह ग्रन्थ मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है, और जब इसका प्रयोग किया गया, और इसमें बताये हुए प्रयोगों को स्पष्ट किया गया, तो अद्भुत और प्रामाणिक चमत्कार प्राप्त हुए और निश्चय ही इसके माध्यम से पारसमणि का निर्माण संभव हुआ।

अतिस्थूलस्य मेकस्य मुखं सूत्रेण वेष्टयेत्
निखनेद्धस्त मात्रायां भूमौ या सात्समुद्धरेत्
मण्डूक संपुटे दत्वा सम्यग्गज पुटे पचेत्
तज्जं पूर्वगोलस्यं पारस सिद्धि वाग्भटेश

यह एक प्रकार से गुप्त सूत्र है, परन्तु अपने आपमें प्रामाणिक है, और इस सूत्र में बताई हुई विधि से जब पारद के संस्कार सम्पन्न किये गये, और उसे स्वर्ण ग्रास तथा अत्यन्त सूक्ष्म हीरक ग्रास दिया गया तो वह तुरन्त पारस मणि में परिवर्तित हो गया, और उस पारसमणि को लोहे का स्पर्श कराते ही वह लोहा शुद्ध स्वर्ण में परिवर्तित हो गया।

इस ग्रन्थ में पारसमणि बनाने की लगभग ६० विधियां स्पष्ट की हुई हैं, अभी तो उनमें से २३ विधियों को ही परखा गया है, और यह आश्चर्य और प्रसन्नता की बात है, कि उनमें से प्रत्येक विधि से पारसमणि का निर्माण संभव हो सका।

वास्तव में ही यह ग्रन्थ अपने आप में अद्वितीय है, और सिद्धाश्रम के योगियों द्वारा ब्रह्माण्ड रहस्यों से प्राप्त यह ग्रन्थ वर्तमान युग और आने वाली मनुष्य जाति के लिये दरिद्रता नाशक और सौभाग्य दायक है।

इसी ग्रन्थ में **सिद्धरस, सिद्धसूत** आदि का वर्णन विवरण भी दिया है, उसमें बताया गया है, कि सिद्धरस का भक्षण करने से शरीर अजर अमर हो जाता है, और शरीर के समस्त रोग पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं, इसी ग्रन्थ के पूरे एक अध्याय में वृद्धावस्था को समाप्त करने और पूर्ण यौवन प्राप्त करने के बारे में कई प्रयोग दिये हैं, जिसके माध्यम से शरीर स्थित समस्त बीमारियां समाप्त हो जाती हैं, और व्यक्ति यौवन सम्पन्न वेगवान, तेजस्वी और देवतुल्य बन जाता है, च्यवन ऋषि को अश्विनी कुमारों ने इसी सिद्धरस का प्रयोग दे कर उन्हें पुनः चिर युवा बना दिया था, जिन्होंने आगे चल कर सैकड़ो वर्षों की आयु प्राप्त की।

मार्कण्डेय ऋषि जब वृद्ध और अशक्त हो गये, जब उनकी इन्द्रियों ने जवाब दे दिया, जब उनके सिर के बाल सफेद हो गये और सारा शरीर झुर्रियों से भर गया, तो स्वयं शिवजी ने मार्कण्डेय को सिद्धरस बनाने की क्रिया समझाई थी, जिसका प्रयोग कर मार्कण्डेय पुनः यौवनवान, स्वस्थ व सुन्दर बन सके।

शुक्राचार्य ने स्वयं एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ "संजीवनी विद्या" लिखा है, जिसमें उन्होंने सिद्ध रस का वर्णन किया है, और इसके माध्यम से

शुक्राचार्य ने बृहस्पति के पुत्र कच को पूर्ण यौवनवान बना दिया था।

इतिहास इस बात का साक्षी है, कि राजा ययाति और शान्तनु जब वृद्ध हो गये, और उन्होंने वृद्धावस्था में भी कुमारी कन्याओं से विवाह किया, तो उनके गुरु ने सिद्ध रस बना कर उन्हें दिया, और वे पुनः युवावस्था प्राप्त कर उन बालाओं के साथ कई वर्षों तक भोग सम्पन्न किया।

वास्तव में ही सिद्ध रस अपने आप में अद्वितीय है और जब इसका निर्माण किया गया, जब इसका प्रयोग किया गया, तो यह देख कर आश्चर्य हुआ कि मात्र एक सप्ताह के भीतर-भीतर वह वृद्ध व्यक्ति पूर्ण यौवन सम्पन्न बन गया, उसके शरीर के ऊपर की त्वचा सांप के केंचुल की तरह उतर गई, और उसकी जगह ताजी और चमकदार त्वचा आ गई, सिर के बाल काले और घने हो गये तथा इन्द्रियों में ताकत वेग और जोश आ गया।

वास्तव में ही सिद्ध रस के चमत्कार देख कर ऐसा अनुभव होने लगा है, कि यदि कोई साधक इस क्षेत्र में उतरता है तो वह पूरे विश्व से वृद्धावस्था को समाप्त कर सकता है।

उपरोक्त ग्रंथ **"कच्छोदन"** में पूरा एक खण्ड स्त्रियों के सौन्दर्य और उसके यौवन पर लिखा हुआ है, इस खण्ड में १०८ प्रयोग हैं, और ये सभी प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इन प्रयोगों में बताया गया है, कि **प्राण रस** के निर्माण से पूरे विश्व में क्रांति लाई जा सकती है, प्राण रस का प्रयोग स्त्रियों पर किया जा जाता है, और प्राण रस के निर्माण की लगभग ४० विधियां इस ग्रन्थ में दी गई हैं।

प्राण रस के प्रयोग से प्रौढ़ या वृद्ध स्त्री में आश्चर्यजनक परिवर्तन आने लगते हैं, और उसके शरीर के सारे दोष, शरीर की सारी कमियां वृद्धता क्षीणता और कमजोरी समाप्त हो जाती है, उनकी आंखों के नीचे बने हुए काले धब्बे, शरीर पर होने वाली सलवटें, झुरियां एक सप्ताह में ही समाप्त हो जाती हैं, और इससे भी बड़ी बात यह है कि इसके माध्यम से पूरे शरीर में रसायन

परिवर्तन होने लगता है, शरीर की त्वचा सुन्दर चमकीली और कसावट युक्त बन जाती है, फूला हुआ पेट सही स्थिति में आ जाता है, और केवल एक सप्ताह में ही शरीर का मोटापन और भारीपन समाप्त हो जाता है, आंखों की ज्योति बढ़ जाती है और चश्मा उतर जाता है, इसके अलावा सिर के बाल लम्बे, घने, काले और आकर्षक बन जाते हैं, तथा सारा शरीर ऐसे सांचे में ढल जाता है, जो अपने आप में अद्वितीय कहा जा सकता है।

हमने जब इस **प्राण रस** का निर्माण किया और विविध स्त्रियों पर उसके परीक्षण किये तो एक सप्ताह के भीतर-भीतर आश्चर्यजनक परिवर्तन और प्रभाव देखने को मिले, सबसे बड़ी बात यह है, कि इसके प्रयोग से सांवलापन समाप्त हो कर पूरा शरीर गौर वर्ण में परिवर्तित हो गया तथा चेहरे पर एक ऐसा आकर्षण भोलापन व्याप्त हो गया कि जिसकी तुलना नहीं की जा सकती।

इसी पुस्तक में **सिद्धसूत** के बारे में भी विस्तार से वर्णन है, और जैसा कि मैं इसी ग्रन्थ में पीछे के पृष्ठों पर एक सन्यासी का उदाहरण दे चुका हूं, कि उसने मात्र चुटकी भर सिद्धसूत को बनारस के विश्व प्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर के लौह दरवाजों पर डाला, तो वह दरवाजे तुरन्त सोने में परिवर्तित हो गये।

और इस ग्रन्थ में सिद्धसूत बनाने की २३ विधियां प्रामाणिकता के साथ दी हुई हैं, जिनके माध्यम से प्रामाणिकता के साथ सिद्धसूत का निर्माण किया जा सकता है।

उपरोक्त पत्रों में मैंने **सिद्धसूत, सिद्धरस, प्राणरस, पारसमणि** आदि का जो विवरण वर्णन दिया है, मैं इन सब के बारे में विस्तार से प्रामाणिकता के साथ अगली पुस्तक **"स्वर्ण रहस्यम्"** में दे रहा हूं, जिससे कि वर्तमान पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियां लाभ उठा सकें।

परन्तु यह बात निश्चित है, कि स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया मजाक या कौतूहल का विषय नहीं है, यह एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में रूपान्तरित करने की क्रिया है, यह सम्पूर्ण विश्व से दरिद्रता को समाप्त करने की प्रक्रिया है, यह एक ऐसी क्रिया है, जिसके माध्यम से जन्म-जन्म की दरिद्रता समाप्त हो सकती है, जिसके माध्यम से जीवन को सम्पन्न, ऐश्वर्यवान और अद्वितीय बनाया जा सकता है।

इसके लिए आवश्यक है, पूर्ण रूप से समर्पित साधकों और शिष्यों की, ऐसे शिष्यों की, जो स्वार्थ से परे हों, ऐसे शिष्यों की, जो गुरु के प्रति पूर्ण आस्था रखते हों, और जरूरत है ऐसे शिष्यों की, जो पूर्ण रूप से समर्पित हों ।

और यह बात भी सत्य है, कि इस प्रकार की क्रिया या ज्ञान मात्र एक दो दिन में नहीं दिया जा सकता, ऐसा संभव नहीं है, कि वह पांच सात दिन का अवकाश ले कर आवें और स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया सीख कर चले जांय, क्योंकि इसके लिए मूलभूत आधार स्वाध्याय और प्रयोग की है, अपने हाथों से पदार्थों को घोटने, परस्पर मिलाने और क्रिया करने की है, प्रत्येक पदार्थ की शुद्धता-अशुद्धता के ज्ञान की है, और फिर जरूरत है, पूरी तरह से गुरु के चरणों में बैठ कर श्रद्धायुक्त इस विषय को सीखने की ।

उदाहरण के लिए मैं स्वर्ण निर्माण से संबंधित सैकड़ों अनुभवों और प्रयोगों में से एक प्रयोग आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं —

यह प्रयोग किसी पुस्तक में प्राप्त नहीं होगा, और न इसका विवरण वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में है, यह तो अनुभव की प्रामाणिकता है, जब मैं हिमालय में विचरण कर रहा था, तब मेरी ऐसे कई सन्यासियों से भेंट हुई थी, जो इस क्षेत्र में अपने आप में अद्वितीय थे, उन्होंने एक तरीके से नहीं, अपितु कई तरीकों से स्वर्ण निर्माण करके दिखा दिया था ।

उनके कार्यों, अनुभवों और तथ्यों से ऐसा लगने लगा था, कि स्वर्ण विज्ञान सबसे सरल और सुविधाजनक प्रयोग है, परन्तु जब मैं रसायन के क्षेत्र में उतरा, जब मैंने अपने जीवन में निश्चय किया कि इस क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करनी है, भारत के रसविज्ञान और पारद विज्ञान से संबंधित जितने भी हस्त लिखित और प्रकाशित ग्रंथ हैं उनका अध्ययन, आकलन करना है, तो मैंने जीवन का प्रत्येक क्षण इस कार्य में लगा दिया ।

हो सकता है, कि मेरी बात अहम्मन्यता पूर्ण लगे, परन्तु मेरी एक प्रवृत्ति यह रही है कि जब मैं किसी क्षेत्र में उतरता हूं, तो पूरी तरह से उसमें जुट जाता हूं, और तब तक विश्राम नहीं लेता, जब तक उसमें पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त न कर लूं ।

ऐसी स्थिति में मेरे ऊपर एक जनून सा सवार हो जाता है, न घर की चिन्ता रहती है न परिवार की, न सुख-दुःख का आभास होता है, और न शारीरिक कष्टों का, बस एक धुन एक लगन और एक लक्ष्य होता है कि हर हालत में इस क्षेत्र में पूर्णता और सिद्धता प्राप्त करनी है, फिर भले ही वह तंत्र का क्षेत्र हो, अघोड़ साधना हो, पाशुपत सम्प्रदाय साधना हो, कर्मकाण्ड हो, आयुर्वेद हो या पारद विज्ञान हो ।

उन्हीं दिनों मैं कई सन्यासियों के सम्पर्क में आया, और उनसे इस क्षेत्र में जो कुछ प्राप्त हुआ, उसे मैंने हृदय के कागज पर पूर्ण रूप से अंकित कर दिया, न तो मुझे किसी कागज पत्र की जरूरत होती थी, न डायरी या लेखनी की, स्मरण शक्ति मेरी अत्यन्त तीव्र रही है, और जो बात, वाक्य, श्लोक या विवरण एक बार सुनने को मिल जाता है, वह मुझे जीवन भर याद रहता है, और समय पड़ने पर मैं उसे ज्यों का त्यों वापिस सुना देता हूं, या उसे प्रयोग में ले लेता हूं ।

उन सन्यासियों ने शीशे से, तांबे से, चांदी से पारद का संयोग कर के स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया सम्पन्न करके दिखाई थी, पर इसके साथ ही साथ उन्होंने वायु-मण्डल से भी पदार्थ रचना प्रक्रिया सम्पन्न कर स्वर्ण निर्माण सम्पन्न करके दिखा दिया ।

यही नहीं, अपितु सूर्य सिद्धान्त प्रक्रिया के जानने वाले बहुत ही कम योगी इस पृथ्वी तल पर हैं, पर मुझे ऐसे ही एक परमहंस योगी मिले जिन्हें सूर्य सिद्धांत का प्रामाणिक ज्ञान था, और उन्होंने सूर्य किरणों को संयुक्त कर उनके माध्यम से पदार्थ रचना प्रक्रिया सम्पन्न करके दिखा दी, और यह बता दिया कि सूर्य की किरणों के माध्यम से किसी भी पदार्थ की रचना संभव है, स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया तो एक अत्यन्त आसान और सरल क्रिया है ।

इसलिए मैं कह रहा हूं, कि पुस्तकों का अध्ययन तो आवश्यक है, पर इनके साथ ही साथ 'पोथिन देखी' की अपेक्षा यदि साधक 'आंखन देखी' पर गौर दे, तो वे सत्यता के ज्यादा निकट पहुंचेंगे, यदि वे स्वयं अपने हाथों से स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया को समझें, इसकी छोटी से छोटी क्रिया और प्रक्रिया को अनुभव करें, तो वे ज्यादा सफल हो सकेंगे ।

मुझे दुःख इस बात का है, कि अब ऐसे समर्थ शिष्य या साधक नहीं रहे,

जो अपने जीवन को चैलेन्ज के रूप में देख सकते हों, अब ऐसे शिष्य दिखाई नहीं देते, जो इन प्राचीन विद्याओं को समझने और सीखने के लिए अपने जीवन को ऊंचाई पर उठा लें, और पूर्ण रूप से समर्पित हो कर यह बता दें, कि वे इन विद्याओं को सीखने के लिए कटिबद्ध है, और हर हालत में, प्रत्येक स्थिति में इन विद्याओं को सीखने के लिए प्रयत्नशील हैं।

वे तो आरामतलबी हो गये हैं, वे चाहते हैं, कि बिना परिश्रम किये ही कोई गुरु या सन्यासी स्वर्ण बना कर हमें दे दें, जिससे कि वे जीवन में मौज मस्ती कर सकें, वे चाहते हैं, कि उन्हें कुछ भी परिश्रम न करना पड़े और कोई व्यक्ति उन्हें स्वर्ण सिद्धि प्रदान कर दे।

पर ऐसा संभव नहीं हो सकता, इतनी आसानी से कोई विद्या प्राप्त नहीं हो सकती, मैंने तो अनुभव यह किया है, कि ऐसे चापलूस और स्वार्थी शिष्य आते हैं, उनके मन में तो यह कुटिलता होती है, कि वे गुरु को लालच दे कर, चापलूसी करके, प्रलोभन दे कर उनसे यह विद्या प्राप्त कर लें, वे सौ-पांच सौ रुपये चरणों में भेंट कर देते हैं, और मुंह से एक ही वाक्य उच्चरित करते हैं, कि मैं तो आपका एकलव्य की तरह शिष्य हूं, और आपके बिना मेरे जीवन में और कोई अस्तित्व ही नहीं है।

पर ये शब्द उनके हृदय से निकले हुए नहीं होते, अपितु होठों से निकले हुए प्रतीत होते हैं, गुरु तो स्वयं अनुभवी होता है, उसने जीवन में बहुत ठोकरें खाई हैं, जीवन में बहुत उतार चढ़ाव देखा है, जीवन को फना कर के इन विद्याओं को सीखा है, और इस अवधि में उसकी भेंट चापलूसों, स्वार्थी व्यक्तियों और धोखेबाजों से भी हुई है, इसलिए वह एक ही नजर में इन स्वार्थी शिष्यों या व्यक्तियों को पहिचान लेता है, और समझ जाता है कि ये मौसमी फूल है, दो चार दिन में ही कुम्हला कर के बिखर जायेंगे।

परन्तु आवश्यकता है समर्पित शिष्य की, फिर भले ही उसकी कोई भी उम्र हो, फिर भले ही उस पर कितना ही गृहस्थ का बोझ हो, जो अपने गुरु के चरणों में अपनी गृहस्थी को रख देता है, अपने व्यक्तित्व को भुला कर गुरु चरणों में भेंट कर देता है, और एक ही निश्चय रखता है, कि "त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पयेत" की भावना और चिन्तन मन में रख कर चलता है, कि यह परिवार और यह जीवन आगे की पूरी अवधि के लिये आपके चरणों में समर्पित है, अब चाहें, आप इसका किसी भी प्रकार से उपयोग करें।

और फिर इस स्थिति में शिष्य अपने पास से खोता ही क्या है, उसके पास खोने के लिये है ही क्या, वह तो स्वयं रिक्त है, परन्तु यदि वह दृढ़ता के साथ खड़ा होता है, यदि वह पूर्ण समर्पण के साथ गुरु के सामने उपस्थित होता है, तो वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, और यदि उसे पारद विज्ञान या स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया का भली भांति ज्ञान हो जाता है, तो उसका पूरा जीवन संवर जाता है, वह आगे बीस वर्षों में व्यापार से या नौकरी से जितना या जो कुछ कमायेगी उतनी आमदनी या धन तो मात्र एक बार स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया से ही प्राप्त हो जायेगा, दूसरे शब्दों में कहूं, तो उसके बीस वर्षों का परिश्रम केवल एक घंटे में ही प्राप्त हो जायेगा।

पर इसके लिए उसे शिष्य तो होना चाहिए, पर इसके लिए उसमें समर्पण तो होना चाहिए, पर इसके लिए उसे गुरु के हृदय में उतरने की क्रिया का ज्ञान तो होना चाहिए, और इसके लिए अपने परिवार को, उनके चरणों में समर्पित करते हुए स्वयं को भेंट करने की विधि ज्ञात होनी चाहिए, पूर्ण निश्छल भाव से, पूर्ण त्यागमय भावना से, पूर्ण समर्पित चिन्तन से।

मन में स्वार्थ या कपट रख कर कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता, और फिर गुरु तुम्हें इतना दुर्लभ ज्ञान क्यों दे, क्या जरूरत है, तुम्हें इन सब क्रियाओं को समझाने की, इस प्रकार का ज्ञान कोई गली मोहल्ले या हाट बाजार में तो बिकता नहीं, इस प्रकार का ज्ञान कोई मथुरा या हरिद्वार के भगवे कपड़े पहनने वाले सन्यासियों के पास तो है नहीं, इस प्रकार का ज्ञान स्कूल या पाठशालाओं में तो मिलता नहीं, न आप चिलम फूंकने वाले, अलख लगाने वाले बाबाओं के पास इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, यह तो अत्यन्त गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ क्रिया है, जिसे एक-एक खून का कतरा जला कर प्राप्त किया जा सकता है, इसके लिए सही गुरु को प्राप्त करना जरूरी है, और इस विज्ञान को जानने वाला गुरु यदि जीवन में मिल जाय, तो एक क्षण भी हिचकिचाने की जरूरत नहीं है, एक क्षण भी रुक कर सोचने की आवश्यकता नहीं है, उस समय तो दौड़ कर उनके पांव कस कर पकड़ लेने की जरूरत है, निश्छल भाव से, अपने आपको समर्पित करने की आवश्यकता है, और उनके चरणों में बैठ कर इस प्रकार की दुर्लभ और महत्वपूर्ण विद्या को पूर्ण रूप से आत्मसात करने की जरूरत है।

सौभाग्य से, इस पीढ़ी का यह सौभाग्य है, कि इस समय कुछ व्यक्तित्व ऐसे

है, जिन्हें पारद विज्ञान, पारद क्रिया, पारद संस्कार और स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया
का पूरा पूरा ज्ञान है, यह तो इस पीढ़ी का सौभाग्य है, कि उन्हें ऐसे व्यक्तित्व
आसानी से मिल सकते हैं, जिन्हें इन क्रियाओं का ज्ञान है, आवश्यकता उनके पास
बैठने की है, उन पर विश्वास प्राप्त करने की है, और इस विद्या को आत्मसात
करने की है।

यह विद्या कहने या पढ़ने से सीखी नहीं जा सकती, क्योंकि यह सब क्रियात्मक
पक्ष है, क्योंकि यह सब प्रेक्टिकल ज्ञान है, और प्रेक्टिकल ज्ञान के लिए तो पारा
और खरल ले कर बैठना पड़ता है, एक-एक क्रिया अपने हाथों से करनी पड़ती है,
और जितने समय तक पारद को घोटना पड़ता है, जितने समय तक उसकी क्रिया
करनी पड़ती है, वह सब अपने हाथों से सम्पन्न करनी होती है, और ऐसा होने
पर ही वह साधक उस विज्ञान को भली प्रकार से समझ सकेगा, तब वह व्यक्ति
उस विज्ञान के एक-एक कण को, उसके रेंसे-रेंसे को, उसमें होने वाले दोषों को
उसकी न्यूनताओं को, विसंगतियों को, कमियों और न्यूनताओं को समझ सकेगा,
जिससे कि वह भविष्य में गलती न कर सके, जिससे कि वह भविष्य में प्रामा-
णिकता के साथ स्वर्ण निर्माण क्रिया सम्पन्न कर सके, जिससे कि वह इस विज्ञान
को सीखने के बाद गुरु बन सके, तब वह अपने अधकचरे शिष्यों को प्रेक्टिकल
ज्ञान देने में समर्थ हो सकेगा, अस्तु।

पारद विज्ञान या पदार्थ विज्ञान विशाल विषय है, उसे एक छोटी सी
पुस्तक में समेटना अत्यन्त कठिन है, परन्तु मैं अपने सैकड़ों हजारों स्वर्ण निर्माण
प्रक्रिया से संबंधित अनुभवों में से दो तीन प्रयोग आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं।

प्रयोग–१

जो साधक या व्यक्ति स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया में रुचि रखते हों,
उन्हें चाहिए कि बराबर मात्रा में शुद्ध लोहा, शुद्ध पीतल और शुद्ध
कांसी एक-एक किलो ले कर उसको अलग-अलग तरल अवस्था में बना
कर पिघला कर उसको मिलावे और एक कटोरा बना दें, जो लोहे का
काम या बर्तन बनाने का काम करने वाले हों, उनसे कहने पर ऐसा
कटोरा या कड़ाही बनाई जा सकती है, इसे सन्यासियों में "स्वर्ण पात्र"
कहा जाता है, इस बात का ज्ञान रहे, कि इसमें तीनों धातु बराबर मात्रा

में हो, और पिघला कर जब एक कटोरा बनाया जाता है, तो उसमें
किसी प्रकार का छिद्र न रहे।

फिर उसे एक तरफ रख दें और दो सौ ग्राम शुद्ध पारा ला कर
रख दें, इसके बाद चार सौ ग्राम गन्धक, चार सौ ग्राम तोला थोथा,
चार सौ ग्राम नमक और दो सौ ग्राम कुंकुम को कूट पीस कर परस्पर
मिला दें, और दो किलो पानी में घोल दें, और इस घोल को उस स्वर्ण
पात्र में डाल कर आंच पर रख दें, इस बात का ध्यान रहे कि इसे
अत्यन्त धीमी आंच से पकावे।

जब पानी उबलने लगे, तब पास में रखे हुए पारद को दो सौ ग्राम
रस सिन्दूर में घोट कर उसकी गोली बना लें, और उस गोली पर शुद्ध
शहद चुपड़ दें, और उसे खौलते हुए पानी के बीच रख दें, इसके बाद पुनः
धीमी आंच से पकावे।

जब पानी आधा किलो रह जाय, तब उसमें नींबू का रस थोड़ा-
थोड़ा डालते हुए उस गोली को पकावे, लगभग एक-एक बूंद करते हुए
सौ ग्राम नींबू का रस डाल दें, जब वह नींबू का रस उसमें पूरी
तरह से मिल जाय, तब कड़ाही को नीचे उतार दें और वह गोली बाहर
निकाल दें, उसे सौ बार शुद्ध पानी से धो लें, और फिर उसे कांजी के
रस में डुबो कर एक घण्टे तक रखें, तो वह गोली शुद्ध स्वर्ण बन जाती है।

अब पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं, कि इन सारे पदार्थों और पारद का बाजार मूल्य ५००) रु० से ज्यादा नहीं हो सकता, पर जब यह स्वर्ण बन जाता है तो उस दो सौ ग्राम स्वर्ण का मूल्य लगभग एक लाख से ज्यादा हो जाता है. पाठक स्वयं कल्पना कर सकते हैं, कि यह विज्ञान कितना अधिक मूल्यवान, महत्वपूर्ण और जीवन को संवारने सजाने लायक है, यह प्रयोग मुझे एक उच्च-कोटि के सन्यासी से सुनने को मिला था, जिसे मैंने ज्यों का त्यों पाठकों के सामने रख दिया है।

प्रयोग–२

एक फकीर ने भी प्रामाणिक प्रयोग मुझे बताया था, यह अपने आप में

पूर्ण प्रामाणिक और सही है ।

अरक अत्यन्द नूल में कुटकी पीपल, मिर्च शाह, और मिर्च खुरासानी, करन फल, मेढ़सिंगी, बराबर ले कर पारा मुश्मिद कायम करें और उसे शीरा एक सरम मिलावे मजकूर डाल कर आग पर पकावे, जब पानी पाव भर रह जावे, तब उतार लिया जावे, फिर इसमें नाली, पीतपापड़ा, जल नींबू, हुलहुल, सफेद नीम, मिसीघास, जलकमनी, गवी तुलस, बकाइन, कन्दश, रोगन, चाकुस, रोगनपलास मिला कर गोला बनावे, और इस गोले को उस पानी में रख कर आग पर पकावे, और फिर इसमें हौले-हौले नकछिकनी के निकदे में दे कर गिले हिकमत करके पाचक दस्ती में पकावे, तो तीन कलाक में यह गुटिका खालिस सोना बन जाता है ।

जो उर्दू या फारसी जानते हैं, वे इसको समझ सकते हैं, अन्यथा मैंने "स्वर्ण रहस्य" ग्रन्थ में इसको पूर्ण प्रामाणिक रूप में समझाया है, जो कि शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है ।

प्रयोग ३—

लेहु मंगाय सरी चौराई । घूरे ऊपर होत बुवाई ॥
सौ रंधिसकै हांडी मांय । ऐसे चरवा देई चढ़ाय ॥
काटि चौराई नीर पखारि । दै घनाव ऊपर पल चारि ॥
पारो मुंह दे लेहु पचाय । चारि पहर ज्यों आगि बराय ॥
जो शुभ करम होय कवि कहै । दुरति निकसि कै हांडी रहै ॥
इह विधि काज करीहै तेही । कंचन होत खरो कवि केहि ॥

यह उद्धरण अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ **रस सागर** में से दिया है, जो कि स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया से संबंधित अत्यन्त प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है ।

प्रयोग—४

ताकत ताली मूलक अर्की
बिच्छू-बिछवी ढीकण कर्की ।
नाग-नागनी मुंह सुत खाय
गोरख कहे स्वर्ण होइ जाय ॥

ये पंक्तियां मुझे उस औघड़ ने सुनाई थी, जो हिमालय में स्वर्ण विज्ञान का श्रेष्ठतम सिद्ध माना जाता है, पर इस प्रक्रिया को, या इसके गूढ़ संकेतों को समझने की जरूरत है, क्योंकि यह जो कुछ बताया गया है, यह संकेत भाषा में या गूढ़ भाषा में है, पर इस विधि से प्रक्रिया करने पर पूर्ण और प्रामाणिक स्वर्ण निर्माण हो जाता है ।

ऊपर मैंने चार उदाहरण अलग-अलग तरीकों से दिये हैं, और ये सभी उदाहरण पूर्ण प्रामाणिक और खरे हैं, यदि बताये हुए तरीके से प्रक्रिया की जाय, तो निश्चय ही स्वर्ण निर्माण होता ही है ।

वास्तव में ही स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया अपने आप में आनन्ददायक ज्ञान है, भारतीय विद्याओं का सिरमौर है, और यदि कोई साधक इस विद्या को प्रामाणिकता के साथ सीख लेता है, तो वह जन्म-जन्म की दरिद्रता मिटा सकता है, और जीवन में अतुलनीय धन प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रहती ही नहीं ।

जैसा कि मैंने ऊपर संकेत दिया है, कि स्वर्ण निर्माण से सम्बन्धित ज्ञान को इस पुस्तक में देना सम्भव नहीं है, इस लिए शीघ्र ही **"स्वर्ण रहस्य"** पुस्तक का प्रकाशन किया है, जो इस ज्ञान को जानने वालों के लिए गीता की तरह महत्वपूर्ण है, जिसमें स्वर्ण विज्ञान से संबंधित अद्वितीय ज्ञान, जानकारी और विवरण दिया है, एक प्रकार से देखा जाय, तो यह **"स्वर्ण रहस्य"** ग्रन्थ इस **"स्वर्ण तंत्रम्"** पुस्तक का अगला भाग है ।

मैं **"स्वर्ण रहस्य"** पुस्तक में दिये गये विषयों में से कुछ शीर्षक स्पष्ट कर रहा हूं ।

"स्वर्ण रहस्यम्"

उपरोक्त पुस्तक में दिये गये ये कुछ शीर्षक हैं, परन्तु जो सही अर्थों में पाठक हैं, जो सही अर्थों में पारद विज्ञान को सीखने की इच्छा रखते हैं, जिनका सही अर्थों में इस विषय में रुझान है, वे समझ सकते हैं, कि यह विषय और ये शीर्षक कितने गूढ़, गोपनीय और दुर्लभ हैं ।

अच्छे से अच्छा योगी और पारद विज्ञानी भारत वर्ष के प्रकाशित पारद विज्ञान से संबंधित ग्रन्थों को खंगाल लें, पर उनमें ये शीर्षक और इनसे संबंधित जानकारी प्राप्त नहीं हो सकेगी, क्योंकि यह सब जानकारी पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त की हुई नहीं है, अपितु अनुभव की आंखों से परखी हुई हैं, परिश्रम की पगडंडी पर चल कर समझी हुई हैं, और जवानी के कीमती वर्ष घोल कर अनुभव की हुई हैं ।

इसीलिए तो इस पुस्तक का अभी से इन्तजार होने लगा है, जिन लोगों ने भी इन शीर्षकों को समझा है, वे इस बात का अनुभव करने लगे हैं, कि वास्तव ही स्वर्ण विज्ञान से संबंधित साहित्य और जानकारी अत्यन्त विस्तृत है, इस पुस्तक के पन्नों की संख्या सीमित है, फिर भी मेरा प्रयास यह रहा है कि मैं इस ज्ञान को एक, दो या तीन पुस्तकों में प्रामाणिकता के साथ दे दूं, जिससे कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह दस्तावेज सुरक्षित रह सके, यह ज्ञान प्रामाणिकता के के साथ उनके पास बना रह सके ।

मैंने अभी तक विश्वास खोया नहीं है, मुझे विश्वास है, कि जरूर कुछ ऐसे शिष्य या साधक निकल कर सामने आयेंगे, जिनमें लगन होगी, भावना होगी, क्षमता होगी, और इस विषय को प्रामाणिकता के साथ सीखने की इच्छा होगी, जो समर्पण भाव से अपने जीवन को दाव पर लगाते हुए इस स्वर्ण विज्ञान से संबंधित मानसरोवर की झील में गहरी डुबकी लगाने के लिए उद्यत होंगे ।

मेरा द्वार तो इस प्रकार के सभी साधकों और शिष्यों के लिए खुला हुआ है, मेरा तो जन्म ही गूढ़ और दुरूह ज्ञान को देने के लिए ही हुआ है, वे आगे बढ़ें, निश्छल भाव से, निःस्वार्थ भाव से, समर्पित भाव से, शिष्य की तरह सामने आवें और पूर्णता के साथ सीख कर इस विश्व की दरिद्रता को मिटाने में सहयोग दें ।

पर उनका ज्ञान इस पुस्तक के पन्ने-पन्ने से बोल रहा है, जब भी वे "मूड" में होते, तब इस विज्ञान से संबंधित तथ्य स्पष्ट करते, पारद संस्कार की विधियां बताते, और स्वर्ण निर्माण प्रक्रिया या धातु परिवर्तन प्रक्रिया की सांगोपांग जानकारी देते, और मैंने उनके साथ रह कर उनके विचारों को प्रामाणिकता के साथ संकलन किया है, जो कि पुस्तक रूप में आपके सामने प्रस्तुत है ।

यह कचोट उनके मन में अवश्य है, कि अब श्रेष्ठ और पूर्ण समर्पण भाव से इस विद्या को सीखने वाले शिष्य बहुत कम हैं, इस विद्या को सीखने के लिए तो गुरू के हृदय में उतरना होता है, अपने आप को गुरू सेवा में एकाकार कर देना पड़ता है, और अपना सब कुछ दाव पर लगा कर इस दुर्लभ और बहुमूल्य विद्या को प्राप्त करना पड़ता है, परन्तु शिष्य में या सीखने वालों में जो समर्पण, जो लगन, जो त्याग और जो अपनत्व होना चाहिए, उसका अभाव दिखाई देने लगा है ।

और एक दिन अपने विचारों के प्रवाह में, व्यथित हृदय से मुझे कहा था — "यदि वास्तव में ही मुझे पारद विज्ञान के क्षेत्र में पूर्ण समर्पित चार-छः शिष्य मिल जांय, तो मैं पूरी पृथ्वी की दरिद्रता समाप्त करने में पूर्ण सहयोगी हो सकता हूं, सीखने वाले की तो जन्म-जन्म की दरिद्रता दूर हो सकती है, और ऐश्वर्य की उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर वह गर्व से यह बता सकता है, कि आज भी पारद विज्ञान अपने आप में सप्राण और चैतन्य है ।

वास्तव में ही यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है, कि हमारे बीच पारद विज्ञान को जानने वाला इतना उच्च कोटि का व्यक्तित्व उपस्थित है, पर फिर भी हम उसे पहिचान नहीं पा रहे हैं, या उसके हृदय में नहीं उतर पा रहे हैं, या उनसे लाभ नहीं प्राप्त कर सके हैं, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य हमारा और हो भी क्या सकता है ?

मैं इन पंक्तियों के साथ उस अद्वितीय पारद विज्ञानी योगी और अत्यन्त सरल विनम्र व्यक्तित्व के सामने प्रणम्य हूं, जिनके अगाध ज्ञान में से मैं कुछ बूंदें पाठकों और रस विज्ञानियों को प्रदान कर सका, और ये कुछ बूंदें ही पाठकों के पूरे भविष्य को, और भाग्य को संवारने सजाने और जगमगाहट देने में पर्याप्त हैं ।

— योगेन्द्र निर्मोही